हमारे त्योहार

(पता है क्या कैसे करनी चाहिए)

रचयिता : त्रिमत के एकैक गुरू

आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (89) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता

इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आदिकर्ता

श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर

www.thraithashakam.org
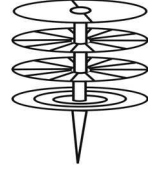
हमारे त्योहार

(पता है क्या कैसे करनी चाहिए)

रचयिता : **त्रिमत के एकैक गुरू**

आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (89) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता

इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आादिकर्ता

श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर
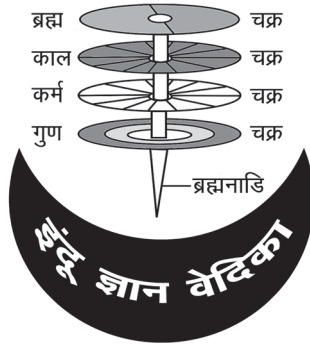
Published by

इंदू ज्ञानवेदिका

(Estd. in 1978 - Regd.No.: 168 / 2004)

त्रैत शक : 39 **प्रथम मुद्र :** May - 2017

प्रतियाँ : 1000 **खीमत :** 90/-

इंदूज्ञानवेदिका के प्रचुरण

33) गुत्ता
34) सुबोधा
35) प्रबोधा
36) समाधि
37) कसौटी
38) फैसला
39) कर्मपत्र
40) आदित्य
41) धर्मचक्र
42) माँ - बाप
43) मत - पथ
44) भाव - भाषा
45) धर्म - अधर्म
46) प्रबोधा तरंग
47) त्रैत सिद्धान्त
48) प्रसिद्ध बोधा
49) सुप्रसिद्ध बोधा
50) वार्तक - वर्तक
51) तत्वों में ज्ञान
52) मरण रहस्य
53) गीता परिचय
54) त्रैतशक पंचांग
55) ईश्वर का चिह्न
56) ईश्वर की मुहर
57) तुझे मेरी लेखा
58) योहान सुवार्ता
59) कथाओं में ज्ञान
60) कथाओं में ज्ञान
61) त्रैताकार रहस्य
62) गुरुप्रर्थना मंजरि
63) देवालय के रहस्य
64) हेतुवाद - प्रतिवाद
65) पुनर्जन्म का रहस्य
66) त्रैताराधना
67) इंदू सांप्रदाय
68) आत्मलिंगार्थ
69) द्राविड ब्राह्मण
70) विश्व विद्यालय
71) प्रवक्तायें कौन?
72) पहेलियों में ज्ञान
73) एक ही दोनों हैं
74) एक बात तीन ग्रंथ
75) सामेताओं में ज्ञान
76) नास्तिक - आस्तिक
77) प्रबोदानंद नाटिकायें
78) क्या सुलेब ईश्वर है?
79) यज्ञ (सच या झूट?)
80) क्या इंदू ईसायि है?
81) निगूढ तत्वार्थ बोधिनि
82) रूप बदला हुआ गीता

83) सत्यान्वेशि की कथा

84) राजकीय - राजकीय

85) योहान कही हुयी ज्ञान

86) प्रथम दैवग्रंथ भगवद्गीता

87) मतातीत ईश्वर का मार्ग

88) मत बदलना दैवद्रोह है

89) आज्ञान में उग्रवाद बीज

90) एक व्यक्ति में दो कोण

91) मरण के बाद की जीवित

92) हिंदूमत में ही कुलविवक्षा

93) उग्रवाद स्वर्गकेलिये ही है

94) प्रतिमा विग्रह - दैव दैय्यमु

95) कौनसे मत में कितना मतद्वेष?

96) मध्यम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य

97) अंतिम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य

98) अंतिम दैंवग्रंथ में वज्रवाक्य

भाषा में पांडित्य को छोडकर, भाव में पांडित्य को देखनेवाला ही असली ज्ञानी है

01) माता
02) माता -पिता
03) मत - पथ
04) युग - योग
05) पैत्य - सैत्य
06) प्रभू - प्रजा
07) इंदू - हिंदू
08) बात - दवा
09) भक्ति - भय
10) भाव - भाषा
11) धर्म - अधर्म
12) नैज़ - सहज
13) प्रभू - प्रभुत्व
14) सुख - आनंद
15) दश - दिशायें
16) स्त्री - पुं/लिंग
17) पुस्तक - ग्रंथ
18) द्राविड - आर्य
19) भूत - महाभूत
20) ज्ञान - विज्ञान
21) प्रकृति - विकृति
22) मरण - शरीर
23) मुर्गा - पादरस
24) पैदाहोना - मरना
25) सृष्टि - सृष्टिकर्ता
26) द्वितीय - अद्वितीय
27) मायक - अमायक
28) सेकूवलि - कूलिसेवा
29) देश दोखा - देह मह
30) माँ बाप - गुरू दैव
31) गोरू - गुरू (नाखुन)
32) दिव्य खुरान - हदीस
33) दादा
34) आत्मा
35) समाधि
36) टकलू
37) यादव
38) भगवान
39) सांप्रदाय
40) कलियुग
41) वेलुगुबंट
42) ज्ञानशक्ती
43) ६-३=६
44) गुरुपौर्णमी
45) संचित कर्मा
46) इंदू महासमुद्र
47) त्रैत सिद्धान्त
48) कर्म का मर्म
49) श्रीकृष्णाष्टमी
50) सात आकाशें
51) तीन ग्रंथ
52) चमत्कार आत्मा
53) चंद्राकार (गंजा)
54) गुरू कोन है?
55) श्रीकृष्ण कौन है?
56) १ २ ३ गुरूपौर्णमी
57) एकता - एकाग्रता
58) श्रीकृष्ण जन्म मधुरा
59) आत्मा का काम
60) मतों में पवित्रयुद्ध
61) पुनर्जन्म का रहस्य
62) खिलानेवाली आत्मा
63) तेलुगु में तीन - छ - नौ
64) नाटक करनेवाली आत्मा

65) शैव - वैष्णव
66) जीर्ण+आशय
67) निदर्शा - निरूप
68) सेवा की फीसद
69) कौनसा धर्म है?
70) अधर्म आराधनायें
71) कौनसा शास्त्र है?
72) क्या ईश्वर का कोइ
73) काय - फल - काया
74) दैवज्ञान - माया महत्य
75) तीन पैदायिश - दो जगह
76) क्षमा न कियेजानेवाला पाप
77) ज्ञान के पास जत्तन रहना!!
78) बाल आत्मा की निशान है
79) एक निरंजन - अलकनिरंजन
80) हरिपैर - हरहाथ (हथेलि - तलवा)
81) बिना गुरू की विद्या अंधी विद्या ह
82) तीन निर्माण - एक परिशुभ्रता
83) सहज मरण - तात्कालिक मरण
84) मेघ एक भूत - रोग एक भूत है
85) प्रपंच की श्रद्धा - परमात्मा की श्रद्धा
86) कर्मवाला कृष्ण -बिना कर्मवाला कृष्ण
87) गुरू वह है जो पहचाना नहीं जाता
88) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
89) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
90) योगीश्वर जी का जन्मदिन का संदेश
91) बाहर का समाज - अंदर का समाज
92) सीने पर मोहर - माँ बाप की निशानी
93) स्वार्थ राजकीय (स्व + अर्थ राजकीय)
94) पैदायिश का दिन किसी को नहीं आता
95) आटा - दोबूचलाटा (खेल - छुपाछुपी का खेल)
96) टक्कु टमार, इंद्रजाल महेंद्रजाल, गजकर्ण गोकर्ण

97) भय
98) गुरुचिह्न
99) मतद्वेश
100) धर्म चक्र
101) पुरुषोत्तम
102) हान्कनेवाला
103) अर्थ - अपार्थ
104) ग्रंथ - बोधा
105) प्रज - मानव
106) दंत - अंत
107) शव - शिव
108) अदुरू - बेदुरू
109) भक्ति - श्रद्धायें
110) आस्ती - दोस्ती
111) दैवग्रंथ
112) ग्राहिता शक्ति
113) त्रैतशक संतक
114) कालज्ञान के वाक्य
115) ईश्वर की आज्ञा - मौत
116) मत सामरस्य
117) तेरे पीछेवाला
118) माया मर्म - आत्म धर्म
119) कालज्ञान के वाक्य
120) ज्ञान कब्जा हुआ है
121) क्या ईश्वर एक है! या दो!!
122) आध्यात्मिक प्रश्न - जवाबात
123) अंतिम दैवग्रंथ में प्रथम वाक्य
124) मोक्षमु - मोसमु (मुक्ति - धोका)
125) श्रीकृष्णमरगया? या मारेगया?
126) अक्षर ज्ञान

इंदू ज्ञानवेदिका के आध्यात्मिक प्रचुरण मिलने के पतें

प्रबोधाश्रम (श्रीकृष्ण मंदिर)

चिन्न पोडमल (ग्राम), ताडिपत्रि (मं), अनंतपुर (जिला) A.P
Cell : 98665 12667, 99516 75081, 94903 63038

इंदूज्ञान वेदिका शाखा
अनंतपुर टौन, A. P
Cell : 97059 59390, 99855 80099

के. लक्ष्मीनारायणा चारि (प्रसिडेन्ट)
मार्केट स्ट्रीट, धर्मवरम, अनंतपुर (जि)
Cell : 94405 56968,
92900 12413, 94406 01136

आदिशेषय्या (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
गुत्ति, अनंतपुर (जि)
Cell : 9491362448, 7382986963

पि.आदिनारायण
मुद्दिरेड्डि पल्ली (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440745800, 7259851861

ए.नागेंद्र (प्रसिडेन्ट)
क्रोत्त चेरुवु (ग्रां, मंडल) अनंतपुर (जि)
Cell : 9493622669, 9959316410,
9949995090

टि.वि.रमणा (प्रसिडेन्ट)
मुदिगुब्बा (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440980036, 07406039453

पि.नागय्या (प्रथम मेंबर)
वीकर सेक्षन कालनी, कर्नूल टौन
Cell : 9440244598, 9849303902

एन.वि.रामकृष्ण (प्रथम मेंबर)
बोह्राम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका (Head office)
चैतन्यपुरि, दिलसुख नगर, हैदराबाद, तेलंगाना रार्ष्ट. Cell : 9491040963, 9032963963, 9848590172

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
अशोक नगर, विजयनगर (जिल्ला)
Cell : 9703534224, 9491785963

तुलसी राव
टि.टि.डि कल्याण मंडप, विजयनगर
Cell : 9441878096, 9030089206

यस अनिल कुमार
काकिनाडा टौन, तूर्पु गोदावरि जिल्ला
Cell : 9866195252, 9640526520,
73960 38888

बंडारु सत्यनारायण
मामिडि कुदुरु (मं), तू, गोदावरी जिल्ला
Cell : 95535 07141, 84669
20419, 94902 95577

यन.वि.रामकृष्णा (प्र.सभ्य)
बोह्राम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम (जिल्ला)
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
मल्लिगां (ग्रामं), कोत्तपेट (पो), रायगड (जि), ओडिसा (राष्ठ). Cell : 09437527499, 09437527470, 09437975781

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
विशाख पट्टणम, आर्न्धप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763,
89777 13666, 92478 26253

एन.बि.नायक (प्रथम मेंबर)
पेदमडका, अगनंपूडी, विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 73964 92239, 92483 15309, 73862 12589

वि.सि.वर्मा आनंदाश्रम
मज्ञिवलस(ग्रां, पोस्ट), भीमिलि (मं), विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 94415 67394, 95021 72711

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रेसिडेन्ट)
अशोक नगर, विजयनगर (जि)
Cell : 9703534224,9491785963

तुलसी राव
तळळ दत ग.ग.ऽ.कल्याण मंडप, विजयनगर (जि)
Cell : 9441878096,9030089206

डा बि धर्मलिंगाचारी (प्रथम मेंबर)
श्री कनकमहा लक्ष्मी क्लिनिक, (कोट), विजयनगर (जि).
Cell:08966-275208, 9704911737

टि.उदयकुमार (प्रेसिडेन्ट)
भीमवरम १ टौन, पशिचम गोदावरी जिल्ला
Cell : 9948275984,7386433834

यम मुरलि
जड्चर्ला, महबूब नगर जिल्ला
Cell : 97057 16469

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
विशाख पट्टणम, आर्न्धप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763,
89777 13666, 92478 26253

यम अल्लिपीर
मडकशिरा, अनंतपुर (जिल्ला), आं. प्र.
Cell : 89780 58081

शेक षफी
चेन्नै, तमिलनाडु रार्ष्ट
Cell : 09445554354

शेक इब्राहीम
कर्नूल टौन, आंध्रप्रदेश
Cell : 70950 08369

शेक अमीर अली
नल्गोंडा जिल्ला, तेलंगाण रार्ष्ट
Cell : 9505 989898, 9505768181

श्री प्रबोध क्लिनिक यु.जनार्दन
आटोनगर, बस्टान्ड रोड, कोयिल कुंट्ला (मं), कर्नूल (जिल्ला). Cell : 9491851911

अनमल महेश्वर (प्रेसिडेन्ट)
चवटपाल्यम (ग्रां), गूडूरु, नेल्लुरु जिल्ला
Cell : 9494631664, 9490809181, 8106065300

रौतु श्रीनिवास राव (प्रेसिडेन्ट)
एटुकूरु रोड, दर्गा मान्यम, गुंटूर जिल्ला
Cell : 9948014366, 9052870853

नर्रा श्रीनिवास रेड्डि
कंभं (मं), प्रकाश्म जिल्ला
Cell : 9849883261, 8142853311, 8187084516

डा.यम.वेंकटेश्वर राव (प्रेसिडेन्ट) M.D(Acu)
शान्ति नगर, नेल्लूरु जिल्ला
Cell : 9440615064, 9246770277

यन.बी नायक (प्र.सभ्य)
पेदमडक, अगनंपूडी, विशाक पट्नम (जिल्ला)
Cell : 92483 15309,
73862 12589, 73964 92239

नायुडु
ख.क.ऊ कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9440490963

तलारि गंगाधर
गुडिपाटि गड्डा, नंद्याल टौन.
Cell : 9491846282, 7671963963

वै.रविशेखर रेड्डि
पेद्द कोट्याल (ग्रमं), नंद्याला (मं)
कर्नूल जिल्ला. Cell : 9440420240,
9885385215

टि.उदय कुमार (प्रसिडेन्ट)
भीमवरम वनटौन, पश्चिम गोदावरी जिल्ला.
Cell : 99482 75984, 73864 33834

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
विशाक पट्नम, आंध्रप्रदेश राष्टं.
Cell : 76749 79663, 94400 42763,
89777 13666, 92478 26253

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
कोत्तकोट, महबूब नगर (जिल्ला)
Cell : 87905 58815,
9440655409, 9701261165

पि रामकृष्णारेड्डि
कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9666202963

घडियं.पेद्दिरेड्डि (प्र.सभ्य)
नरसरावपेट, गुंटूरु जिल्ला
Cell : 9989204097, 9849555738

यम जैराम नायक
पद्मावती कालनी, महबूब नगर टौन.
Cell : 70321 74830, 90009 16419

सायि शंकर श्रेष्टी (टीचर)
अच्चं पेट, महबूब नगर जिल्ला.
Cell : 9948947630, 9640717574

पोटु वेंकटेश्वर्लु (प्रेसिडेन्ट)
हुजुर नगर, नलगोंडा जिल्ला.
Cell : 9848574803, 9866423853

बि.देवेंदर
भुवनगिरि टौन, नल्गोंडा जिल्ला.
Cell : 76800 65963,
9704885964, 9848741703

इ.श्री नाथ श्रेष्टि
गणेश स्र्टीट, जनगां, वरंगल जिल्लाह.
Cell : 9573552963, 8096958359

ए.राघवेंद्र श्रेष्टि
श्री कृष्ण मेडिकल्स जनरल्स, पटेल नगर, ३ क्रास होस्पेट, बल्लारि जिल्ला, कर्णाटका राष्टं.
Cell : 097318 16452, 096111 33635

A.V LAKSHMI NARAYANA
San Antonio, TEXAS,U.S.A
+1(210)714 9696, +1(210)527 3436

K. SIVA KRISHNA
Atlanta, GEORGIA, U.S.A
+1 (404) 551 3297, +1 (470) 658 7635

www.thraithashakam.org

युगादि, संक्रांति, दशरा, शिवरात्रि, श्रीरामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, विनायक चतुर्थि, दीवाली इत्यादि त्योहारों को तो हम हर साल खुशी से मनाते ही रहते हैं। लेकिन उन शब्दों का असली आध्यात्मिक मतलब क्या है और हमारे पूर्वज बडे ज्ञानीलोगों ने इन शब्दों को ऐसे ही क्यों जमाकर रखे थे और इन त्योहारों का आचरण करने से मनुष्य को क्या हासिल हो रहा है इसका ज्ञान तो आज किसी के पास नहीं है। चाहे कोई कुछ भी समझलें ये सारे त्योहार और उनके आचरण मनुष्य के आध्यात्मिक जिंदगी से बहुत ही खरीब रिश्ता रखते हैं लेकिन आज मनुष्य इन त्योहारों की असली मक़सद को भूलकर सिर्फ खाने पीने खुशी मनाने केलिये ही त्योहार मना रहा है। जो लोग अपनी असलियत को मालूम करके परमात्मा तक पहुँचना चाहते हैं उनको इस ग्रंथ में इन सारे त्योहारों का अध्यात्मिक रहस्य मालूम होजायेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सबको इस ग्रंथ की ज्ञान को सही तरीके से समझमें आये जैसा करें.......

पानी को अंग्रेज़ी (इंग्लिष) ज़बान में वाटर कहते हैं और तेलुगु ज़बान में नीरु कहते हैं उसीतरह तमिल ज़बान में तन्नी कहते हैं चाहे कितने भी ज़बानों में कहलो पानी का धर्म या गुण तो नहीं बदलते ना! मतलब वह पानी को इसाई एक हिंदू से लेकर पिये या एक हिंदू मुसलमान से लेकर पिये या एक मुसलमान ईसाई से लेकर पिये पानी यक्सा होता है मगर एकके लिये मीठा दूसरे केलिये कडुवा में नहीं बदलता और हम यह भी नहीं कहसकते कि ईसाई पानी को वाटर कहकर पुकार रहा है इसलिये मैं उससे पानी नहीं लूँगा ऐसा करेंगे तो हमारा ही नुकसान होगा ना! और इनसान को वह काम नहीं करना चाहिये जिससे उसे नुकसान पहुचता हो। इस ग्रंथ में तेलुगु भाषा के शब्दों से इसलिये समझाया जा रहा है क्योंकि वह भाषा कृतायुग की है और हमारे आचरणों में छुपे हुये आध्यत्मिक रहस्य समझमें आने केलिये तेलुगु भाषा के शब्द बहुत ही खरीब हैं। इसलिये भाषा को देखे बगैर भाव को समझना ज़रुरी हैं क्युँकि आखिर भाषा सिर्फ एक माध्यम (Tool) है जिसे हम हमारे भाव को ज़ाहिर करने केलिये इस्तेमाल करते हैं।

तेलुगु शब्द		हिंदी मतलब
पंडु	-	पका हुआ फल
काया	-	कच्चा फल
पंडुगा	-	त्योहार
काया या कायमु	-	शरीर
दिया	-	दीप

विषय सूचि

क्रम संख्या - विषय - पेज नं

हमारे त्योहार

त्योहार को तेलुगु ज़बान में **पंडुगा** कहते हैं। कुछ लोग इसतरह कहते हुये हमलोगों ने सुना ही है कि अनंत विश्व में शतकोटि प्राणियाँ (जीवरासियाँ) हैं। शायद वह पुराने युग में की बात होसकती है। आज एक भारतदेश में ही मनुष्य ही 100 करोड हैं। कई जातियों के प्राणियों को मिलाकर सौ करोड कहा हैं मतलब होसकता है कि वह संख्या कृतायुग में का ही हो। कृतायुग में ही यानि वह ज़माना जिसमें थोडी संख्या में ही मनुष्य रहा करते थे, मनुष्यों में ज्ञान कम होकर अज्ञान बढ़गया था। मानव अंतर्मुख का खयाल छोडकर, बाहर की खयाल में गिरपडा। वह कहते हैं ना कि करोड विद्यायें भी पेट भरने केलिये ही है ऐसा ही सब काम इनसान बाहर की आहार को कमाने के लिये ही करना शुरु किया था। ऐसी सूरत में उसने अपने आँखों के सामने दिखनेवालि फलित पर ही ध्यान को बढालिया हैं। उस पाप पुण्य पर ज़रा भी खयाल नहीं करपाया जो आँखों को नज़र नहीं आती हैं। ऐसे समय में मनुष्यों में आध्यात्मिक दृष्टि को बढ़ाने के लिये और पाप के ओर डर को बढ़ाने के लिये उस ज़माने के ज्ञानि लोग कई तरीकों से मनुष्यों में ज्ञान चैतन्य को पैदा करने केलिये ठानलिया। इसी मक़सद से उन्होंने ऐसा किया कि हर इनसान अपने जीवन में पीछे मुडकर देखलें, और इस बात का हिसाब किताब डाल लें कि मैं ने अपने गुज़रे हुए ज़िदगी में क्या क्या किया था, क्या प्राप्त किया था। बडे ज्ञानी लोग यह बात जानते थे कि अगर कोई भी विषय हो इनसान को अच्छे तरीखे से समझ में आना चाहिये तो उसे किसी और चीज़ के साथ कम्पार करके समझाना चाहिये यानि उदाहरण देकर समझायें तो ठीक से समझपायेगा, इसीलिये उन्होने पेड को आनेवाला **फलित या फल या पंडु** को उदाहरण के तौर पर दिखाते हुए एक प्रक्रिया को इनसानों के बीच में रखे थे।

(फल को तेलुगु ज़बान में **पंडु** कहते हैं इसलिये आगे से **पंडु** का शब्द आने पर उसे **फल** समझें इस ग्रंथ में तेलुगु भाषा के शब्दों से इसलिये समझाया जा रहा है क्योंकि वह भाषा कृतायुग की है और हमारे आचरणों में छुपे हुये आध्यत्मिक रहस्य समझमें आने केलिये तेलुगु भाषा के शब्द बहुत ही खरीब हैं। इसलिये भाषा को देखे बगैर भाव को समझना ज़रुरी हैं क्युँकि आखिर भाषा सिर्फ एक माध्यम (टूल) है जिसे हम हमारे भाव को ज़ाहिर करने केलिये इस्तेमाल करते हैं)। यह बात तो सब जानते ही हैं कि एक साल में पेड को **कच्चे** फल होना, फिर वे **पक्के** फल में बदलजाना (तेलुगु ज़बान में **कच्चे फल** को **काया** कहते हैं और **शरीर** को भी **काया** कहते हैं। इसलिये आगे से इस ग्रंथ में संदर्भ के अनुसार **काया** शब्द आनेपर उसे कच्चा फल या शरीर समझें)। आम तौर पर जिस विषय के बारे में सब जानते हैं उसीके बराबर कम्पार करके दिखाने से सब को अच्छी तरह समझमें आजायेगा इसी उद्देश से बडोंने ऐसा किया कि उस प्रक्रिया को **पंडुगा** नाम से ही आचरण करें। एक वक्त था जब पूरी मानवजाति एक ही इंदू मत की तरह रहा करती थी लेकिन आज अनेक मतों (मज़हबों) में बटजाने पर भी पूर्व में कृतायुग में बडोंने रखी हुई आचरण या अमल आज भी बिना बदले वैसे के वैसे ही हैं। आज भी इनसानों के बीच वे आचरण रहने पर भी उनका मुख्य अर्थ नहीं रहा। बिना अर्थ के या बेमतलब के आचरणों से किसी भी तरह का प्रयोजन नहीं है। आज मनुष्यों के बीच व्यर्थ से बचेहुये उस ज़माने के बडों के प्रक्रिया को समझमें आये जैसा तफसील (विस्तार) से बयान करलेते हैं।

काल (वक्त) पवित्र हैं और दैवस्वरुप हैं। ईश्वर ने भी गीता में एक ही बात में कहा कि काल ही मैं हूँ। काल कितनी भी महत्वपूर्ण

होने पर भी वह हमें सहज की तरह ही दिख रही हैं। उसकी अहमियत ज़रा भी नज़र नहीं आरही हैं। कोई भी काल के बारे में नहीं सोच रहे हैं। कुछ बडे लोगों ने काल बडी खीमती है समझकर टैम ईज़ मनी (वक्त पैसे के बराबर है) कहा हैं। लेकिन हम तो कहते हैं कि काल उससे भी बडी खीमती हैं। क्युोंकि खोया हुआ पैसा वापिस कमाले सकते हैं मगर खोया हुआ वक्त (काल) को वापिस कमा नहीं सकते।

हर जीवरासि (प्राणि) वक्त को अनुभव कर रही हैं। हर प्राणि शरीर से कई अच्छे, बुरे कामों में वक्त को इस्तेमाल कर रही हैं। जो वक्त गुज़र रहा हैं उसमें या तो वह अच्छा काम हो या बुरा काम हो करनेवाले प्राणि को ही उसका फलित और अनुभव मिलता है। लेकिन वक्त को अच्छे, बुरे से कुछ लेना देना नहीं यानि कुछ संबंध नहीं हैं। इसीलिए यह कहने में कोई संदेह नहीं हैं कि काल दैवस्वरुप हैं। काल एक इनसान के लिये, एक जाति के लिये, एक देश केलिये ही लिमिटेड नहीं हैं बल्कि पूरे जगत केलिये विनियोग किये जा रही हैं। उदाहरण के तौर पर इंडिया में रहनेवाले व्यक्ति केलिये, अमेरिका में रहनेवाले व्यक्ति केलिये काल एक ही तरह हैं। काल जो सबकेलिये समान है उसमें उनके अपने अपने काम, अपने अपने अनुभव अलग अलग रहसकते हैं अर्थात सबकेलिये काल एक ही हैं। इसीलिये काल को दैवस्वरुप कहसकते हैं।

जन्म से शुरु हुआ काल मरण से खत्म हो रहा हैं। जन्म और मरण के बीच के काल को **जीवित** या **जीवन काल** कह रहें हैं। **जीवित काल** में कुछ लोग अच्छे से, कुछ लोग बुरे से जीवित को गुज़ार रहे हैं। वह काल जो अनंत हैं उसमें चाहे कौन कितने भी तरीकों से ज़िंदगी गुज़ारलें कालगर्भ में मिलजाने वाले ही हैं।

अपनी जीवन काल में प्रत्येकता (खासियत) रखनेवालों को चिरंजीवियाँ कहते हैं। उनका जीवन काल भी कम ही हैं फिर भी उनका जीवन का ध्येय बहुत ही बडा होता हैं। वे आम् लोगों की तरह न रहते हुए अपनी जीवन में कुछ प्रत्येक प्राप्त किये हुये होते हैं। ऐसे लोगों को कारण जन्म या चिरंजीवियाँ कहते हैं।

आज ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो इस बात की योचना नहीं करते कि असल यह काल (वक्त) क्या चीज़ है? काल के बारे में योचना न करते हुये वक्त को गुज़ार कर **(बडे लोग कहते हैं ना कि) चींटी की घर में क्या दीमक** (Termite) **पैदा होकर नहीं मर रहा है** उसी तरह कुछ भी काम न आनेवाली जिंदगी गुज़ार रहे हैं। क्षण क्षण हमारे शरीर में बदलाव हो रहा हैं। क्षण क्षण के बदलावों से ही बाल्य से बुढापे तक शरीर पहुंच रही हैं। जैसे जैसे हरदिन वक्त गुज़रते जा रहा है मृत्यु पास आरही हैं। गुज़रता हुआ काल में किसी न किसी दिन मृत्यु को पहुंचना ही होगा। फिर भी गुज़रता हुआ वक्त को खयाल रख के कोई भी कम से कम यह बात नहीं सोच रहा हैं कि मरण या मौत खरीब हो रही है ना। हम सोचे या न सोचे न काल रुकनेवाला हैं न मौत।

हम यह कह रहे हैं कि **पंडुगा** (त्योहार) वह प्रक्रिया है जिसे बडों ने मनुष्यों से अमल करवाया ताकि उस काल (वक्त) की अहमियत मानव जानलें जिसे वह खीमती नहीं समझ रहा हैं, उसे यह बात समझमें आजाये कि गुज़रा हुआ काल वापिस पाया नहीं जाता, तेरा जीवन का काल बहुत ही कम हैं और यह खयाल करें कि वह थोडा काल भी खर्च हो जारहा हैं, इसलिये इसबात पर फिकर या योचना करें कि तेरे जीवन काल में तू ने क्या हासिल किया? और असल में काल क्या है इसके बारे में मानव के आँख खुलवाने (केलिये

रखी गई प्रक्रिया ही पंडुगा है)। काया (यहाँ पर **काया** को **कच्चा फल** समझना चाहिये) थोडे वक्त के बाद पंडु (यहाँ पर **पंडु** को **पक्के फल** की तरह समझना चाहिये) में बदल जा रहा हैं। यह बात तो हम पूरी तरह से जानते हैं कि **काया** कहलानेवाली **पंडु** जैसा परिवर्तन हो रही हैं। बदलाव आया हुआ पंडु से पैदाहुयी शब्द ही **पंडुगा** हैं।

साधारण से, प्रकृति सिद्ध से, हर पेड को संवत्सर (साल) में एकबार फूल होते हैं फिर उसके बाद काया (कच्चे फल) होते हैं यह तो पेड का सहज तत्व है। पेड से कच्चे फल निकलकर पंडु (पक्के फल) में बदलने केलिये एक संवत्सर का समय हो रहा हैं ना! इसलिये पेड को उदाहरण के तौर पर लेते हैं। पेड के पूरे जीवन में एकबार कच्चे फल (काया) होकर पक्के फल (पंडु) में बदलने केलिये एक संवत्सर काल गुज़र जारहा हैं। ऐसा ही मानव के जीवन में एक संवत्सर काल में जो गुज़र गया उसे पंडुगा कहते हैं। पंडुगा नाम इसलिये रखे थे क्योंकि यह वह वक्त हैं जिसमें कच्चा फल, पक्के फल में बदलजाता हैं। यह वह समय है जिसमें पेड का काया (कच्चा फल) पक्व को आता है उसी को मानव के जीवन में **पक्वदिन** कहा करते थे। आज **पक्वदिन** को **पर्वदिन** कह रहे हैं। यह बात को विस्तार से जानलिये तो इसतरह उसका अर्थ हैं।

पेड का सार पंडु (फल) है, पेड संवत्सर काल को अपना **सार** यानि **फल** को दूसरों को देकर इस्तेमाल हुई हैं। बडे लोगों ने एक दिन को पंडुगा के नाम से इसलिये रखा ताकि मनुष्य को यह बात याद आजाये कि पेड की तरह तुम भी दूसरों को किसतरह इस्तेमाल हुये, फिर इस बात का खयाल करें कि संवत्सर काल में उसने क्या फलित हासिल किया। नित्य जीवन में डूबा हुआ मनुष्य काल को भूलगया है। इसलिये इस बात की पहचान केलिये भी पंडुगा

नाम रखना हुआ कि तेरे जीवन में थोडा काल गुज़र गया हैं। उदाहरण केलिये युगादि पंडुगा को लेते हैं। गया हुआ संवत्सर में युगादि पंडुगा किये थे, यह संवत्सर भी कर रहे हैं। इसीको नया संवत्सर भी कह रहे हैं। कहा जाता है कि पूर्व में बडेलोग इसतरह पीछे मुडकर देखलिया करते थे कि उनके अपने जीवन में एक संवत्सर गुज़र गया है, और एक नया संवत्सर होनेवाला हैं, गुज़रे हुये संवत्सर में मैं ने क्या **ज्ञान** को हासिल किया था। इसलिये उस युगादि के दिन नित्य जीवन कार्यों में लग्न न होते हए सब छोडकर विर्शांति लेकर, पिछले के काल के बारे में योचना करके हिसाब करलेते थे कि यह साल भर मैं ने क्या क्या किया था, दैवमार्ग में क्या हासिल किया था, इस काल में क्या मैं ने अच्छे से बरताव किया था या बुरे से। उस दिन पूरा अपने आध्यात्मिक जीवन के बारे में ही योचना करते गुज़ारते थे। जैसे बाक़ी दिनों में आहार (खाने) केलिये योचना करते थे। उसीतरह उसदिन ज़रा भी खाद्दी (आहार) कपडे का खयाल न आये जैसा, बाहर की जीवन की सोच बिलकुल भी न आये जैसा पहले से ही सारे आहार पदार्थों को सब दिनों से बहतर रहे जैसा इंतेज़ाम करलिया करते थे। उनदिनों में उनका कर्तव्य सिर्फ यह रहता था कि आहार की, कपडों की फिकर किये बगैर इंतेज़ाम करले कर, दुनिया के काम सब छोडकर, गुज़रे हुये वक्त के बारे में योचना करना (ही कर्तव्य की तरह रहा करता था)। क्यों कि उसदिन अपने जीवन के काल के बारे में योचना कर रहे हैं इसलिये उसे ज्ञान संबंध के दिन की तरह समझते थे। और इसतरह माँगते हुए प्रर्थनामंदिरों में हो या घर में हो ईश्वर के आराधनाएँ किया करते थे कि मेरी जिंदगी इतनी वक्त इसतरह गुज़र गई थी लेकिन अब से होनेवाली पंडुगा के वक्त तक मुझे सारांशवाली दैवसंबंध ज्ञान की जिंदगी को ही गुज़ारना चाहिये।

इस पहचान केलिये बडे लोगों ने उसदिन पंडुगा को रखा था ताकि मनुष्य इस बात की योचना करें कि तेरा जीवन थोडा काया से पंडु (फल) में बदलगया। सिर्फ यह बतानेकेलिये ही बडोंने पंडुगा (त्योहारों) को रखा था ताकि नित्य जीवन में लग्नहुआ मानव को इस बात की याद आजाये कि तेरा आयुष इतना खत्म होगया था, गुज़रे हुये वक्त में पैदा होकर आखिर तुमने क्या हासिल किया। यह बात गौर करनेवाली बात है कि ये पंडुगाएँ एक मत में ही नहीं सब मतों में हैं। एक एक मत केलिये एक एक पंडुगा निर्णय किया गया हुआ हैं। यह नहीं बता सकते कि पूर्व में बडेलोगों ने एक ही भाव से पंडुगाएँ रखे थे या नहीं। वैसे भी पंडुगा उसे कहते हैं कि जो यह बताती है कि कच्चे फल जैसी तेरी जिंदगी कम से कम थोडे हद तक तो परिपक्वता पाकर पंडु (फल) हुआ हैं।

यह बात तो सब जानते ही है कि काया (कच्चे फल) का मतलब जो फल पक्व को नहीं आया, अभी तक पके बगैर कच्चा हैं। अगर काया (कच्चा फल) है मतलब उसे पंडु (पक्के फल) की तरह बदलना ही पडेगा। वह चाहे कोई भी फल क्यों न हो जब वह पकने के लिये आता है तो उसे पंडु कह रहे हैं। काया पंडुगा में बदलना सिर्फ एक पेड को ही नहीं बल्कि मनुष्य को भी हैं। जीवन कहलानेवाली काया से मोक्ष कहलानेवाली पंडु (फल) जैसा मनुष्य को बदलना हैं। जीवन में जीव निवास करनेवाले शरीर को बडों ने **काया** इसलिये कहा हैं कि जब तक एक जीव मोक्ष कहलानेवाली फल (पंडु) में नहीं बदलता तब तक जीवन कहलानेवाली काया की तरह उसे रहना ही होगा। तेलुगु भाषा में शब्द को खूबसूरत करने केलिये अनेक शब्दों के आखिर में "**मु**" शब्द को जोडना सहज ही है। उदाहरण के लिये जैसे **दीप** शब्द को **मु** शब्द जोडकर **दीपमु** कहे थे उसीतरह दीपकांति

कहते हैं यहाँ पर दीप**मु**कांति नहीं कहा था इसका मतलब "**मु**" अक्षर की कोई अहमियत ही नहीं है उसीतरह काया शब्द को **मु** जोडकर **कायमु** कहे थे। इसलिये मानव के शरीर को **कायमु** कहने पर भी उसे **काया** की तरह ही हिसाब में लेनी चाहिए। हमने बयान करलिया ना कि मानव देह ही काया जैसी हैं। इसीलिये कुछ बडेलोग जिन्होने आत्मा के बारे में आध्यात्मिक तरीके से एक तत्व को भी लिखा कि "काया" कहलानेवाली साँप के घर में चंदमामा....। इसलिये हमारा शरीर काया (कच्चा फल) जैसा ही है उसे "**पंडुगा**" में बदलना ही होगा। यह बात जानलें कि यह विधान को बतानेवाली बाहर की प्रक्रिया ही आज हमारे बीच में वाला पंडुगा हैं।

हम समझते हैं कि आज के ज़माने में सब मत के पंडुगायें (त्योहारें) एक ही पद्दती, एक ही भाव के साथ हैं। पंडुगा यानि सब मत के लोग नये कपडे पहनना, अच्छा आहार खाना, किसी न किसी ईश्वर की आराधना करना, सजदा करना सामान्य बात हैं। कुछ लोग तो ऐसा समझते हैं कि सिर्फ खाने केलिये ही पंडुगा हैं समझ कर उसदिन सब दिनों से भी ज़्यादा खाकर हाँपते हैं। तो कुछ लोग झूला झूलना हो, खेल खेलना हो करते हुए खुशी पा रहे हैं। कुछ लोग पीकर उछल रहे हैं। कुछ लोग जुआ खेल में ही अन्यचिंता किये बगैर पूरा दिन गुज़ार रहे हैं। कुछ लोग समझते हैं कि यह दिन ईश्वर को सजदा करने लिये लैसेन्स का दिन हैं इसलिये सिर्फ वह एक दिन चाहे पसंद रहे या न रहे सजदा कर के हाथ साफ कर रहे हैं। कुछ उद्योगी उद्योग केलिये छुट्टी का दिन है, पंडुगा यानि बिना ड्यूटी (काम) वाला दिन है समझते हुए खुश हो रहे हैं। थोडे व्यापारी यह हिसाब न करते हुए कि पिछले साल भर हमने कितना पाप, कितना पुण्य हासिल किये, उसके बदले में पैसा कितना कमाये कह कर लाभ नष्ट के हिसाब देखले रहे हैं।

पूर्व में बडोंने रखी हुई भाव पूरा मिट्टी में मिलजाकर पंडुगाओं का असली अर्थ ही आज किसी को मालूम नहीं रहा। पूर्व में संवत्सर को एक पंडुगा रहता था। बाद में कुछ वक्त के बाद इनसान को ज्ञानी बनना हैं तो और थोडे पंडुगायें ज़रुरत है समझकर फैसला किये हुए बडेलोग कुछ खास पंडुगाओं को रखे थे। बडे लोगों ने अर्थ के साथ जुडे हुए पंडुगाओं को रखे तो मतलब के साथ अमल न करनेवाले लोग जिन्हे बडों ने नहीं कहा उनको भी पंडुगाओं की तरह अमल कर रहे हैं। उस नेपद्य में ही आज एक साल को कई बेहिसाब पंडुगायें तयार होगए। पर्व में यह भाव रहता था कि ईश्वर एक ही है। लेकिन आज अनेक दैव हुए हैं, अनेक पंडुगायें तयार हुये। पंडुगा मानव की चीवन केलिये मेज़रमेंट है कहकर ज़रा भी योचना न करने की हालत में हमलोगों ने कई पंडुगाएँ किये थे, और कई पंडुगाएँ (त्योहार) आनेवाले हैं। अब से किसतरह करना चाह रहे हैं यह बात आप खुद खूब योचना करलेके पंडुगाएँ करें।

यह समस्त जगत जो आँखों को नज़र आरही है वह एक दिन प्ररंभ होकर उसदिन से लेकर आज तक चल ही रही है। प्रपंच में के समस्त प्राणियों को मौत और पैदाइश हैं। इसीलिये ये तमाम प्राणियों को **जगति** कह रहें हैं। '**ज**' का अर्थ पैदाहोनेवाली, **गति** का अर्थ मरनेवाली के हैं। सब लोग यह जानलें कि यह जीवसमुदाय (पाणियों का समुदाय) जिसका शाश्वित नाम **जगत** है वह किसी न किसी दिन पैदा होकर, किसी न किसी दिन ज़रुर नाश होजायेंगी । यह सच तो सब जानते ही हैं कि एक इनसान पैदा होकर थोडा वक्त

यहाँ रहकर मरजा रहा है। जितना समय वह जिंदा रहता है उस समय को हम उस व्यक्ति की आयु कहते हैं। मनुष्य की आयु की माप की तरह निमिशों (मिनटों) से लेकर सालों तक हैं। ऐसा ही पैदा होकर, कुछ वक्त तक रहकर जानेवाली इस प्रपंच का भी आयु हैं। उसका माप युगों के हिसाब में रहता हैं। मनुष्य के पैदाइश के दिन को **जन्मदिन या जातक** कहते हैं। ऐसा ही प्रपंच की पैदाइश के दिन को **युग आदी** कहते हैं। उसीको कुछ काल के बाद **युगादि** कहा करते थे। जैसे जैसे वक्त गुज़रता गया वह युगादि **उगादि** में बदल गई। यह नहीं मालूम कि आनेवाले ज़माने में किस नाम में बदलजायेगी।

आज के ज़माने में कुछ लोग अपने पैदाइश के दिन को हर साल त्योहार की तरह मना रहे हैं। मीठे पतार्थ बाँटकर कहते हैं कि मेरा पैदाइश का दिन है। जन्मदिन के सेलेब्रेशन्स प्रस्तुत काल में ज़्यादा होगये हैं। लेकिन पूर्व में कहीं भी चरित्र में ऐसा नहीं है कि किसी ने भी अपनी जन्म दिन के खुशियाँ मनाये हो। ऐसे कुछ आधार भी नहीं है कि जब वे जिन्दा थे तब श्रीकृष्णस्टमि, श्रीरामनवमि उन्होने करलिया हो। पूर्व काल में कोई भी व्यक्तिगत पैदाइश का दिन कोई भी नहीं मनाते थे लेकिन सब मिलकर प्रपंच की पैदाइश के दिन को मानाया करते थे। उसी दिन को **युग आदि** नाम रखके सबसे ज़्यादा,उस ज़माने में ऐसा मनाया करते थे कि उससे बढ़कर कोई और त्योहार ही दुनिया में नहीं हैं। जैसे जैसे वक्त गज़रता गया उसके साथ साथ, बाद में बहुत सारे त्योहार तय्यार होकर सब की तरह युगादि भी एक त्योहार बनी। अगर और भी थोडा वक्त गज़र जाए तो शायद ऐसी हालत आजायेगी कि यह त्योहार तक नहीं रहेगा। अब तक तो सिर्फ थोडा नाम बदला, थोडा आचरण बदला। विदेशी सांप्रदाय जनवरी पहली तारीक साल की शुरुआत जैसा

बनगई। यह भी नहीं बता सकते कि आनेवाले ज़माने में हिंदू समाज में युगादि रहेगा कि नहीं।

इंदू लोग हिंदूओं की तरह बदलकर उनके संस्कृती को ही भूल गए फिर भी, शुरुआत में पैदा हुई इंदू जाति चाहे दूसरे मतों में बदल जाने पर भी, चाहे मानव इंदू संस्कृती को छोडदेने पर भी, वह संस्कृती मनुष्यों को नहीं छोडी हैं यह बात के सबूत के तौर पर आज हमारे बीच कुछ ऐसे चीज़ें बाक़ी हैं। उनमें एक मुख्य विषय के बारे में अब बयान करलेते हैं।

प्रस्तुत काल में भूमंडल में कई देश मौजूद हैं। ऐसा ही कई मत, कई संस्कृतिया,कई भाषायें, कई सांप्रदाय हैं। भूमी पर मानव चाहे कितने भी प्रकार से क्यों न रहे, रात और दिन तो सबकेलिये एक ही है। इतनाही नहीं वार (हफ्ते) में सात दिन, महीने में तीस दिन, साल को बारह महीनें सर्वसाधारण से हैं। और भी खास करके जाननेवाली बात यह हैं कि! समस्त प्रपंच के लिए हफ्तों के नाम भी एक ही हैं। चाहे वह कोनसे भी देश में रहें, कोई भी मतवाले क्यों न हो वार में दिनों के नाम आदि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार होना विशेष हैं। इंदुओं के लिये यह गर्व की बात हैं क्योंकि जो नाम प्रपंच में इंदुओंने पहले रखा था वे नाम ही पूरे प्रपंच पर लागू होना गर्व की बात ही तो है। हेना!

पूर्व में जिस दिन सृष्टि शुरुहुई थि वह दिन आदिवार था । वार में आदिवार का दिन पहला दिन होने से, हर वार को उस दिन छोटी त्योहार की तरह मनाया करते थे। प्रपंच के आदि में शुरु हई दिन को आदिवार कहलानेवाली नाम को रखे थे। आदि का मतलब **पहलावाला** हैं। क्योंकि सृष्टी आदिवार से शुरु हुई होने से वह दिन

सब को एक छोटी सी त्योहार की तरह रहा करती थी। उसदिन काम छोडकर संतोष से वक्त गुज़ारते हुए, पकवान बनालेकर, ईश्वर को नैवेद्य रखके वे भी खाया करते थे। वार में छः दिन काम करते हुए, पहले का एक दिन काम न करते हुए त्योहार करलिया करते थे। पूर्व में हर आदिवार का दिन त्योहार की वातावरण की तरह रहती थी। अब भी थोडा सा छेन्ज हर आदिवार सबको विश्रान्ति दिन होकर मांसाहारों को त्योहार की तरह ही हैं। पूर्व में सब में आदिवार के प्रति इसतरह का पवित्र भाव रहता था कि वह सृष्टि का पहला दिन हैं इसलिये उस दिन को पवित्र से ही गुज़ारते थे। आज दुरभ्यास करनेवालों को आदिवार इष्टाराज्य की तरह दिख रहा है। बहरहाल, कैसे भी हो कुल्हि तौर पर आदिवार की खासियत आज भी बाक़ी हैं। इसतरह भूमि पर सब देश के लोगों केलिये वार सात होकर, उसमें आदिवार पहलेवाली की तरह प्रत्येकता रखना, अगर हम इस बात पर गौर करें तो यह मालूम हो रहा हैं कि चाहे कालगमन में कौन किसतरह भी बदलजाए इंदुओं का पवित्र दिन आज भी सबकेलिये छुट्टी का दिन होकर थोडा त्योहार का माहोल रहना देखें तो, मालूम हो रहा हैं कि मनुष्य सांप्रदाय को छोडने पर भी, सांप्रदायें मनुष्यों को नहीं छोडे। इसतरह पूरे प्रपंच में इंदुओं के सांप्रदाय सबके पास रहने को देखें तो मालूम हो रहा है कि सृष्टि आदि में सब इंदू ही रहा करते थे, बाद में वह बदलते हुए आखिर में कई मत होजाने के बावजूद भी, जिसतरह कपडे में का हिंग खत्म होजाने पर भी कपडे को हिंग की बो (स्मेल) नहीं जाती उसीतरह मनुष्यों में इंदुत्व जाने पर भी इंदुत्व की बो मनुष्यों में जाये बगैर कम से कम थोडा तो वारों के रुप में बच कर हैं।

इंदुत्व वह है जो आदि में ईश्वर से स्थापित की गई ज्ञान से तय्यार हुई हैं। इतनी भूमंडल पर, इतने देशों के बीच (मध्य) में

प्रत्येक से हम निवास करनेवाली इस देश में ही इंदूलोग प्रकाशित हए। इसीलिये यह देश इंदू देश हुआ। इस ज़मीन पर हम निवास करते हुए, हमारे पूर्वजों के वारिस होकर, हमारे सांप्रदाय क्या है? यह बात हमें ही मालूम न होना, सृष्टादि में कौनसा दिन शुरु हुआ और उसकी क्या प्रत्येकता हैं यह बात भी मालूम न होना, आखिर में वार को एक बार आनेवाला आदिवार के बारे में बी मालूम न होना और उसे सिर्फ छुट्टी का दिन समझना, इस बात पर ज़रा भी खयाल न करना कि आखिर आदिवार ही क्यों छुट्टी का दिन हुआ, यह विषय को स्वामीजियाँ, गुरु, पीठाधिपत भी न कहपाना, इन सब बातों पर परिशीलना कर के देखें तो वह दिन के बारें में न जाननेवाले हमलोगों को देख कर हमारे पूर्विकों को दुखित होना ही पडेगा। और उनके वारिस होने के नाते हमें शर्म से सर झुकानाही पडेगा।

अब भी कुछ देरी नहीं हई हैं। हम यह बात जानलें कि **आदि** में शुरु हुआ हैं इसलिये उस दिन को **आदि** वार का नाम सार्थक हुआ हैं तुम यह बात जानलो कि सृष्टि आदि में शुरु हुआ आदिवार ही **युगादि** की तरह जब जब वापिस आरहा हैं, बाक़ी दिनों में आनेवाले युगादियों से भी आदिवार के दिन को आनेवाला युगादि ही स्वच्छ "**युगादि**" हैं। यह बात को पहले तुम जानने के बाद दूसरों को बताने की कोशीश करनी चाहिये। अगर तुम निज से (असल में) इंदू के वारिस हो तो, आदि में आदिवार से शुरु हुई युगादि वापिस अब आरही होने से उस दिन को पवित्र से गुज़ारना चाहिये समझकर कोशीश करनी चाहिए। आदि में के रहस्यों को जानने की कोशीश करें। उसदिन के काल को कथाओं के साथ, कवित्वों के साथ, गानों के साथ, पद्यों के साथ, नाटकों के साथ, पंचाँग श्रवण के साथ व्यर्थ से न गुज़ारते हुए, ईश्वर के ज्ञान के साथ बितानी चाहिये। असली

इंदू वारिस बनने केलिये, इंदू की तरह जिंदगी गुज़ारने केलिये, तुझ में इंदूत्व थोडा तो सजीव रहने केलिये, युगादि का नाम भी भ्रष्ट होकर आज उगादि की तरह बुलायेजाने वाली इस ज़माने में वापिस **युगादि** की प्रत्येकता को ढंका बचाकर बयान करना चाहिए यानि प्रचार करना चाहिये। उसदिन नये कपडे पहनना ही नहीं बल्कि, जिन लोगों को इस बात के बारे में नहीं मालूम उन्हे यह तफसील के साथ समझाके बताना चाहिये कि वह सृष्टिआदि में ही नयादिन था जिस दिन यह सबकुछ शुरुहुआ था।

आज भी कुछ लोग जो इंदुओं (हिंदुओं) की तरह हैं वे युगादि त्योहार को थोडी महत्व भाव के साथ ही कर रहे हैं। युगादि के दिन पाक साफ रहते हुए भोजन से पहले **युगादि पच्चडी** (यानि उगादि के दिन बनाये जानेवाली चट्नी को तेलुगु भाषा में **पच्चडी** कहते हैं)को प्रसाद के सूरत में ले रहें हैं। पूर्व में बडेलोगों ने यह बात बताचुके थे कि उसदिन युगादि पच्चडी को ज़रुर लेना चाहिए। अब कुछ लोग इसतरह सवाल करसकते हैं कि युगादि का तो मतलब जानगए, लेकिन क्या पच्चडी (चट्नी) की भी कोई प्रत्येकता हैं? उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! **पूर्व में अब हम जिसे पच्चडी या चट्नी कह रहे हैं उसे प्रसाद कहा करते थे।** प्रसाद जाकर पच्चडी में बदलगया। वास्तव में उसे ईश्वर की पूजा में रखके पूजा होजाने के बाद कुटुंब में के सब लोगों को बाटते थे। सब महत्व भाव के साथ लिया करते थे। अब हम यह बयान करलेते हैं कि जब के काल में युगादि प्रसाद के बारे में उनका क्या खयाल था।

यह बात तो सब जानते हैं कि युगादि सृष्टि आदि की निशानि हैं। इस बात के निशान के तौर पर कि सब कुछ सृष्टि आदि में ही पैदा हुआ आमपेडें, नीम के पेडें वगैरा बहुत से पेड को फूल होते हैं।

फूल होने के बाद फूल से काया (यानि कच्चा फल) तय्यार होना युगादि के समय में ही होता हैं। फूल होना, काया होने को ईश्वर ने नयीसृष्टि के निदर्शन के तौर पर रखा हैं। **फूल से काया (कच्चा फल) पैदाहुआ, गर्भ से काया मु (शरीर) पैदाहुआ।** काया हो, कायमु हो सृष्टिआदि में ईश्वर से ही बनाये गये थे। इसलिये ईश्वर की सृष्टि यानि जगती पूरी युगादि में ही पैदाहुई थी यह बात बताने केलिये ही पेडों को उसी समय में ईश्वर ने ऐसा किया कि फूल खिलना, कोमल फल पेड को आयें। वे जीव जो ईश्वर की सृष्टि हैं उनमें छे अच्छे गुण और छे बुरे गुण रहें जैसा ईश्वर ने ही किया हैं। जीव यानि मनुष्य भी होसकते हैं, जानदार पेडें भी होसकते हैं। वह ईश्वर जिसने छे के संख्या में गुणों को रखा हैं वही संख्या में छे स्वादों को भी पेडों में भर कर भेजा हैं। नीम के पेड में कडवा पन, इमली के पेड में खट्टा पन, तुम्मल पेड में वगर (Acrid) पन, मिर्ची के पेड में तीखापन वगैरा छे स्वादों को विविध पेडों में ईश्वर ने ही रखा हैं। युगादि समय में खिलनेवाले फूल सब स्वादें रखते हैं। इसलिये ज्ञान जानेहुए बडेलोगों ने छे स्वाद के फूलों को लाकर ईश्वर के सामने रख कर उन्ही को प्रसाद के रुप में स्वीकार कर रहे हैं। इसतरह करने में ज्ञानियों का भाव ऐसा रहता था कि अय ईश्वर!! छे गुण जो हमारे अंदर मौजूद हैं उनके प्रतीक के तौर पर छे स्वादवाले फूलों को तुझे दिखा रहे हैं। फिर ज्ञानियाँ ऐसा कहते थे कि छे स्वादों को हम खाकर खत्म कर रहें हैं। इसीतरह हमारे अंदर के छे गुणों को भी खत्म करलेंगें, यह काम कर के दिखा रहे हैं। यानि उनका भाव या इरादा यह हैं कि इसतरह छे गुणों के बदले में छे स्वादों के फूल को प्रसाद जैसा करके जिसतरह उस प्रसाद को खाकर जीर्णाशय में जठराग्नि में जला रहे हैं, उसीतरह छे गुणों के कर्मों को सर में की ज्ञानाग्नि से जलादेंगे। इसतरह होनेवाले षट स्वादों के प्रसाद कालक्रम में बदलते

हुए आकर सिर्फ एक नीम के फूल को लेकर बाक़ि स्वादों केलिये गूड, इमली वगैरा उसमें मिलाकर युगादि पच्चडी के रुप में ले रहे हैं। कुछ लोग तो सिर्फ नाम के वास्ते नीम के फूल को डालकर ज़रा भी कडुवा नज़र न आये जैसा शक्कर, गुड बडे प्रकिशत में डालकर पायस (खीर) की तरह बनालेकर पूरा दिन खा रहे हैं। ऐसा करने से युगादि प्रसाद युगादि पच्चडी में बदलकर आखिर में युगादि पायस की तरह बदलगई। सनातन से आता रहा युगादि का त्योहार इंदू संप्रदायों में बहुत ही मुख्य हैं। इंदूसंप्रदायों में के हर काम को बहुत ही अर्थ रहता हैं। बडोंने रखे हुए अर्थ को छोडकर बेमतलब से जैसी हमारि मरज़ी है वैसे करनेवाले काम संप्रदाय नहीं कहलाते। इसलिये युगादि को जैसे बडोंने कहा वैसे, उन्होंने जैसा किया हम भी वैसे ही करते हैं। युगादि कि पूरी विशिष्टता को जानकर, जगति की पैदाइश उसी दिन हुई हैं यह बात जानकर पवित्र भाव के साथ अमल किये तो वह असली युगादि त्योहार कहलायेगी। वरना युगादि उगादि की तरह, त्योहार बेकार में बदलसकता हैं। इसलिये वैसा बेकार न हुए जैसा युगादि को असली इंदुओं की पंडुगा की तरह समझलेकर अमल करते हैं।

भोगि – आग

भोगि की आग, इस बात को शायद हम संक्राँति त्योहार के संदर्भ में सुनते रहते हैं। जिसतरह युगादि त्योहार विशेषता रखती है उसीतरह ही भोगि, संक्राँति भी विशेषता रखते हैं। आध्यात्मिक के मुताबिक, ग्रहों के सफ़र के मुताबिक युगादि हो, संक्राँति हो विशेषता रखते हैं। हमारे बडे कहते हैं कि सूरज कालचक्र की कटक रासि में

जब प्रवेश करता हैं तो उसे कटक संक्रमण कहते हैं, उसी तरह सूरज मकर रासि में जब प्रवेश करता हैं तो उसे मकर संक्रॉंति कहते हैं। असल ये रासियाँ क्या हैं और क्युों हैं? इस बात पर योचना करें तो थोडा समाचार मालूम होसकता हैं। मनुष्य के आध्यात्मिक पाठ में कालचक्र बहुत ही प्रमुख्य रखती हैं। पूरा कालचक्र बारह भागों में विभाजित हैं। मानव का ज्योतिष्य यह बारह भागों को आधार करलेके हैं। कालचक्र में रहकर कर्म की परिपालन करनेवाले नव ग्रह निर्णीत काल के बराबर यह कालचक्र में ही घूमते रहते हैं। सबसे मुख्य ग्रह और पहला ग्रह सूरज हैं और कालचक्र में प्रसिद्ध हैं। क्योंकि सूरज पहलावाला होने से उसका नाम आदित्य भी है। ज्योतिश्य शास्त्र में सूरज के मुताबिक ही ग्रहाचार निर्णय किया जारहा हैं। कालचक्र के बारह भागों के नाम तरतीब के साथ इसतरह हैं कि 1) मेष 2) वृषभ 3) मिथुन 4) कर्काटक 5) सिंह 6) कन्य 7) तुल 8) वृश्चिक 9) धनुष 10) मकर 11) कुंभ 12) मीन। कालचक्र को उसमें के भागों को नीचे के तसवीर में देखसकते हैं।
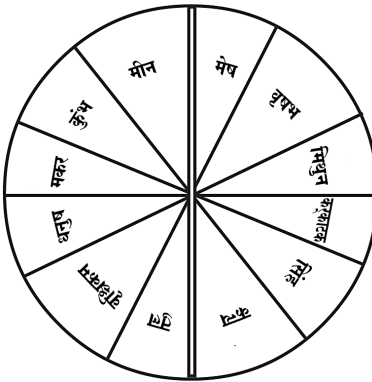
कालचक्र
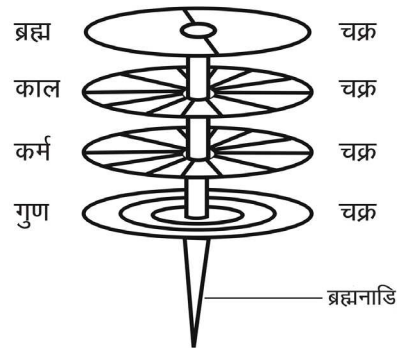
कालचक्र में के आधेभाग में सूरज जब संचार करता हैं तब उसे **आयण** कहते हैं। इसके मुताबिक दो आयण हैं वही उत्तरायण, दक्षिणायण हैं। सूरज कालचक्र में एक भाग को पार करने केलिये एक महीना लगेगा। इसके मुताबिक ही हमको महीनों के नाम भी निर्णय किये थे। वे तरतीब के साथ १) चैत्र २) वैशाख ३) ज्येष्ट ४) आषाढ ५) श्रावण ६) भाद्रपद ७) आश्वीयुज ८) कार्तीक ९) मार्गशीर्ष १०) पुष्य ११) माघ १२) फाल्गुण। कालचक्र में सूरज मेषरासि के भाग में सफ़र करनेवाली तीस दिनों को चैत्र मास कहा हैं। २) वृषभरासि में रहनेवाले काल को वैशाख मास कहा हैं। ३) मिथुनरासि के काल को ज्येष्टमास कहा हैं। ४) सूरज जब कर्काटक रासि में रहता हैं तो आषाढमास कहा हैं। ५) जब सिंह रासि में रहता हैं तो श्रावणमास कहा हैं ६) जब कन्यरासि में रहता हैं तो भाद्रपदमास कहा हैं। ७) जब तुलरासि में रहता हैं तो आश्वीयुज मास कहा हैं। ८) जब वृश्चिकरासि में रहता हैं तो कार्तीक मास कहा हैं। ९) जब धनुषरासि में रहता हैं तो मार्गशीर्ष मास कहा हैं। १०) जब मकररासि में रहता हैं तो पुष्य मास कहा हैं। ११) जब कुंभरासि में रहता हैं तो माघमास कहा हैं। १२) जब मीनरासि में रहता हैं तो फाल्गुणमास कहा हैं।

कालचक्र के बारह भागों में से छे भागों को उत्तरायण की तरह, बाक़ि छे भागों को दक्षिणायण की तरह हिसाब किया जारहा हैं। सूरज मकर रासि में प्रवेश किया हुआ पुष्यमास से मिथुन रासि के ज्येष्टमास तक के छे महीने के वक्त को उत्तरायण कहते हैं, ऐसा ही सूरज कटकरासि में प्रवेश किया हुआ आषाढ मास से धनुष रासि में रहनेवाले मार्गशीर्ष मास तक के छे महीनों के वक्त को दक्षिणायण कहना होरहा हैं। मेषरासि जो काल चक्र में अव्वल है अगर उसे

पहली माना जाय तो मीन आखरिवाली होगी। ज्योतिष्य शास्त्र के प्रकार पहली रासि मानव की जन्मरासि होगी, ऐसा ही बारवीं रासि मरण रासि होगी। मनुष्य की पैदाइश और किसतरह का शरीर मिलना चाहिये ये तमाम विषय पहले स्थान में मौजूद होते हैं तो मरण के बारे में पूरी जानकारी बारवीं स्थान में रहती हैं। मनुष्य के पैदाइश और मरण के विषय उत्तरायण भाग में ही हैं। यह भी कहा गया कि उत्तरायण भाग ज्ञानसंबंध है, दक्षिणायण भाग अज्ञानसंबंध हैं। उत्तरायण काल में मरजाने पर भी, पैदा होने पर भी मोक्ष पाकर ईश्वर में ऐक्य होने का मौका हैं।
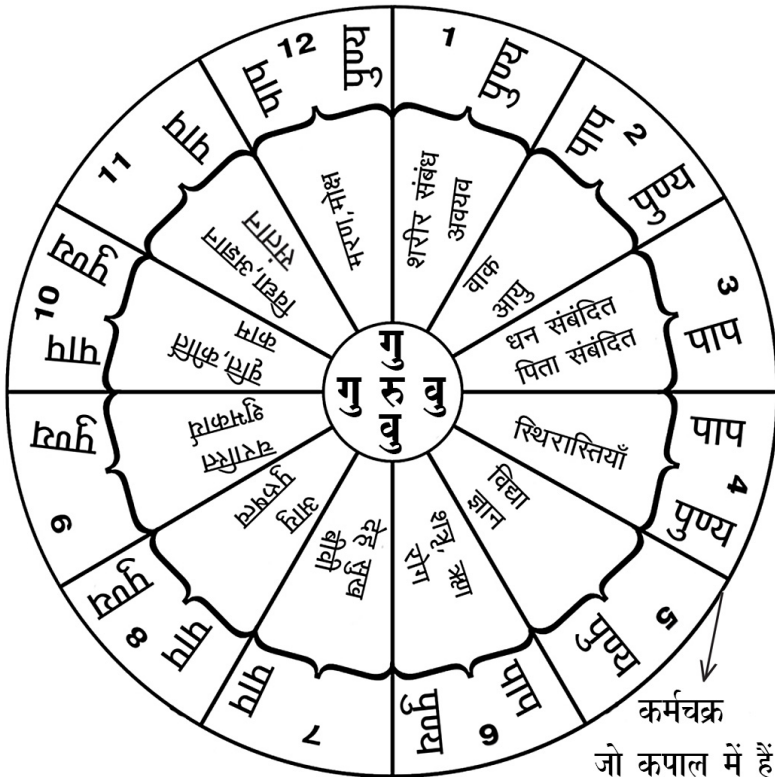
कर्म चक्र

इतनाही नहीं जो लोग उत्तरायण में पैदा होते हैं वे दैवसंबंध ज्ञान को हासिल करके ज्ञानि की तरह जन्मलेने का भी मौका हैं। सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करके वहाँ छे महीने रहता है उस वक्त को पूर्व में उत्तरायण उत्तमकाल कहा करते थे क्योंकि वह वक्त ईश्वर की वर है उसकी बडी विशेषता है । कालक्रम में उत्तरायण उत्तमकाल बदलजाकर उत्तरायण पुण्यकाल कहला रही हैं।

हमने बयान करलिया कि मेष, वृषभ, मिथुन ये तीन रासियों के काल को, ऐसा ही मकर, कुंभ, मीन रासियों में तीन महीनों के वक्त को उत्तरायण कहते हैं। बाक़ी छे महीने के काल को दक्षिणायण की तरह हिसाब करले रहे हैं। उत्तरायण हमने इसतरह हिसाब करलिया कि वह उत्तम हैं, दैव वर हैं, दक्षिणायण उन भोगों की निशानि हैं जो प्रपंच की वर हैं। दक्षिणायण प्रकृति भोगों की निशानि हैं। प्रपंच के अनुभवों को ही भोग कहरहे हैं। प्रपंच संबंध विषयों को अनुभव करने को भोग कहरहे हैं तो! दैवसंबंध आत्मा को अनुभव करने को ही योग कह रहे हैं। भोग में कर्म अनुभव किये जारहे हैं। लेकिन योग में कर्म जलाये जारहे हैं (यानि भस्म हो रहे हैं)। दक्षिणायण को भोगों की निशानि की तरह बोललिये थे। इस तरह कहना ही नहीं बल्कि ऐसा किया कि यह बात सबको याद रहजाये। हर मनुष्य को भोग भुगतना आदत सी हो गई हैं। सिर्फ सुख को ही भोग नहीं समझना चाहिए। कष्ट सुख (दुख और सुख) दोनों को मिलाकर भोग कह रहे हैं। भोग का अर्थ यह है कि अनुभव किये जानेवाले।

ऐसा ही हर इनसान योगों को हासिल नहीं करपा रहा हैं। योग वे हैं जो भोगों से व्यतिरिक्त होते हैं। योग वह हैं जिसमें कर्म अनुभव में नहीं आति, कर्म को जलानेवाले योग कहलाते हैं, योग वे

हैं जो ज्ञान कहलानेवाली आग के निलय है। यह बात कभी भी हमें भूलना नहीं चाहिये कि सिर्फ ज्ञानाग्नि कर्म को भस्म करसकती है। योग ज्ञानाग्नि की निलय है और उस योग की निशानि ही उत्तरायण है, भोग अनुभवों की निलय हैं और उन भोगियों की निशानि ही दक्षिणायण हैं। यह बात याद रहने के लिये ही साल में एक त्योहार को बडों ने रखा था और वही संक्राँति की त्योहार है, उसी को मकर संक्राँति कहते हैं।

मकर रासि में सूर्य प्रवेश करने को मकर संक्राँति कह रहे हैं। साधारण से जनवरि १४ तारीक को ही संक्राँति आति रहती हैं। शायद कई संवत्सरों को एकबार जनवरि १५ तारिक को संक्राँति होती हैं। जनवरि १३ तारिक तक दक्षिणायण रहा तो, १४ तारीक से उत्तरायण होता हैं। दक्षिणायण भोगों की निशान हैं इसलिये यह बात याद रहने केलिए ही जनवरि १३ तारीक को मतलब संक्राँति के पहले दिन को भोगी कहा हैं। भोगी के बाद संक्राँति कहना तो सहज ही हैं। भोगी के दिन रात के वक्त आग डालकर भोगि की आग कहकर नाम भी दिया हैं। भोगी के याद में उसके बारे में बोललेना उस रात को आग डालना यह सब कुछ तो सबलोग कर ही रहे हैं कि लेकिन उसका अर्थ, विवरण बहुत से लोगों को नहीं मालूम।

हमने यह पहले ही बयान करलिया था कि दक्षिणायण अज्ञान संबंध, प्रपंच संबंध हैं। दक्षिणायण प्रपंच अनुभवों की तार्काण है इसीलिये उसको भोगी के नाम से आखरीदिन की तरह याद करलेते हुए पूर्व में लोग इसतरह माँगते थे कि हमारे ज़िंदगियों में भी आज से भोग खत्महोजाकर योग आनी चाहिए। उस रातको इस मखसद से आग डाला करते थे कि भोग यानि हम सुख दुख भुगतने केलिए कारण हमारा कर्म ही है इसलिये हम चाहते हैं कि वह कर्म जलजाए।

जिसतरह भगवद्गीता में कहा गया था उसीतरह कर्म को लकडियों की तरह, ज्ञान को आग की तरह कम्पार करके आग डाला करते थे। जो कर्म अनुभव में आनेवाले हैं उन्हे भस्म करने की निशानि ही भोगी की आग है। दक्षिणायण के आखिर में भोगों को अल्विदा कहना, भोगि की आग डालना, ऐसाही उत्तरायण के पहले में योग की आह्वान करना बहुत ही खुशी की बात हैं। इसलिये उसदिन को संक्राँति के उत्सव की तरह त्योहार करलेना पूर्वाचार हैं। पूर्व में बडोंने भावयुक्त के साथ किये हुए रिवाज़ें आज भी बाक़ी है लेकिन लोगों को यह नहीं मालूम कि उस त्योहार को आखिर भोगी के नाम से ही क्यों बुलारहे हैं, भोगि की आग क्यों डाल रहे हैं, संक्रांति की त्योहार क्यों कर रहे हैं।

ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात ज्ञान की आग से सर्वकर्म भस्म होजायेंगें कह कर गीता में भगवान ने कहा हैं। एक भोगी व्यक्ति के कर्मो को ज्ञान की आग से जलाने को ही भोगि की आग कहते हैं। इस अंतरार्थ को बाह्य रुप से बताने केलिये पूर्व में बडे ज्ञानी लोग भोगि की आग डाला करते थे कि संक्रांति से पहले दिन अज्ञान केलिये आखरि दिन होना चाहिए उसदिन का वह आचार आज भी वैसा ही हैं। आचार तो है मगर मतलब नहीं हैं। आज के इस आचार को अगर उसदिन का भाव जोडकर भोगि की आग डालें तो वह काम बडी अहमियत वाला काम होगा। इसलिये आज अगर इसी उद्देश से काम करें तो एक न एक दिन वह ज़रुर पूरा होगा। बिना उद्देश का काम बेकार है, इसलिए बाज़ार में भोगि के आग जलाने से कोई फायिदा होनेवाला नहीं हैं। हमारे सर में भोगों की कारण यानि कर्म को ज्ञान की आग से जलाना चाहिए। कम से कम अब से तो विवरण जानकर भोगि का त्योहार मनाइये। चलिए, अब से तो शरीर में ज्ञान

कहलानेवाली आग को हासिल कर लेके कर्मों को जलाले सकते हैं यही मतलब के साथ बाहर भी भोगि की आग को डालते हैं।

"संक्रॉंति" के शब्द में दो भागों में अर्थ मौजूद हैं। हमने बहुत बार बयान करलिये थे कि "सं" का मतलब **अच्छा।** जैसे कि "सं" सार मतलब **अच्छा सार** रखनेवाली, "सं"बंध का अर्थ **अच्छा बंधन,** ऐसे ही "सं" गीत का मतलब **अच्छा गाना** है। उसी प्रकार अब संक्रॉंति यानि अच्छी क्रॉंति कहसकते हैं। क्रॉंति का मतलब अच्छा मुकाबला है या अच्छी लड़ाई कहसकते हैं। अब कुछ लोग हमसे इसतरह पूछ सकते हैं कि संक्रॉंति एक अच्छा त्योहार है तो आप इसतरह नये से उसे अच्छी लड़ाई, उत्तम मुकाबला क्यों कह रहे हैं? इस सवाल पर हमारा जवाब यह हैं कि! उसका अर्थ और अमल होना सब कुछ वास्तव ही हैं। संक्रॉंति में अच्छी लड़ाई रहना सच बात ही हैं। लेकिन ऐसा मत समझो कि वह लड़ाई या मुकाबला बाहर किसी और पर करने की नहीं हैं, कुछ लोगों के साथ मिलकर करनेवाली भी नहीं हैं। बाहर वाली लड़ाई अच्छी भी होसकती हैं या बुरी भी। लेकिन संक्रॉंति ऐसी वाली लड़ाई नहीं हैं वह हमेशा अच्छी लड़ाई ही हैं। हम कहरहे हैं कि संक्रॉंति व्यक्तिगत मुकाबला हैं। सामूहिक मुकाबला नहीं हैं। जिस व्यक्ति ने संक्रॉंति से पहले भोगी की आग को दिखाया वह दक्षिणायण के आखिर में सब इच्छाओं को मैं खत्म कररहा हूँ कहकर अपने उद्धेश्य को बाहर ऐलान करने के बाद उत्तरायण के प्रारंभ में मैं भोगी की तरह नहीं बल्कि एक योगी की तरह रहूँगा कहकर उसदिन संक्रॉंति को ऐलान कर रहा हैं।

जीव शरीर में रहनेवाले अहम् पर हो, मन पर हो मुकाबला करने को ही अच्छी लड़ाई कहरहे हैं। उसीको संक्रांति कह रहे हैं। **मन पर मुकाबला करें तो ब्रह्मयोगी के जैसा, अहम पर मुकाबला करें तो कर्मयोगी जैसा जीव बदलसकता हैं।** हमने यह पहले भी ज़िकर कर चुके थे कि यह व्यक्तिगत मुकाबला हैं, उनके अपने अपने शरीरों में सिर्फ जीव करने की लड़ाई ही संक्रांति हैं! जीव अपने शरीर में जबतक जैसे उसकी मन कहती हैं और जैसे उसकी अहम कहती हैं वैसे ही सुनता है। इसतरह सुनने से हर एक जीव भी अज्ञान के स्तिथी में रहे जैसा ही होगा। इतनाही नहीं बडों ने यह भी बतादिया कि ऐसा व्यक्ति योगी नहीं है, वह भोगी कहलायेगा। जो जीव जब तक मन, अहम की बात सुनता रहा वह एकदम उनकी बात को न सुनना क्या यह मन और अहम पर मुकाबला किये जैसा नहीं हुआ? मन और अहम दोनों बडी कोशीश कर के अपनी बात पर चले जैसा करवालेना चाहते हैं लेकिन उन दोनों के लाख कोशीशों के बावजूद भी, जीव उनकी बात को न सुनना उन पर मुकाबला किये जैसा नहीं हुआ क्या?

अहम और मन के खिलाफ रहना, उनकी बात न सुनना बहुत ही बडा और अच्छा काम हैं। इसीलिये उसका नाम "**संक्रँाति**" रखा हैं। देखा आपने! संक्रँाति में कितनी महत्व अर्थ छुप कर हैं!! **भगवद्गीता शास्त्र में पूरा सारांश यही है कि तुम योगी बनो**। योगी को दो प्रकार विभाजित करके गीता में ही कहा कि कर्म योगी, ब्रह्मयोगी। ईश्वर के धर्मों को अमल करने से कोई भी **योगी** बन सकता हैं। अगर ईश्वर के धर्म मालूम नहीं हुये तो, प्रकृती के धर्म यानि मन की बात, अहम की बात सुन कर अमल करें तो कोई भी **भोगी** बनसकता हैं। भोगि की त्योहार के दिन मुख्य आचरण ये है कि

एक भोगी इस इरादे से आग डालना चाहिये कि आज से मैं भोगों को (इच्छाओं को) छोडदे रहा हूँ, दूसरा मुख्य आचरण संक्रँाति त्योहार के दिन योग की अमल करें जैसा थोडे देर तो योग साधना में बैठना। पूर्व में भोगी, संक्रँाति को "**जोड**" त्योहारों की तरह आचरण किया करते थे। ये दो त्योहारों को आध्यात्मिक अर्थ के साथ ज्ञानियों ने डिज़ैन करके रखा हैं। इसलिये सब अर्थ जानकर अमल किया करते थे। **भोगी त्योहार कर्म अनुभव की निशानि है तो, कर्म नाश की निशान यानि योग की निशान के तौर पर संक्रँाति त्योहार को हर साल लोग मनाते थे।** उस ज़माने के स्वामीजियाँ, महर्षियाँ, बोधक कहा करते थे कि तुम लोग भोगों को छोड दो और योगों को करने की आदत डाल लो। परिवार में नये से पैदाहुए बच्चों को थोडी उमर आते ही भोगी, संक्रँाति के बारे में बताकर उन्हे सक्रम मार्ग में चले जैसा करते थे। इसतरह इन त्योहारों से लोग थोडा ज्ञान मालूम करके ज़िंदगी गुज़ारते थे।

आज जोडत्योहार भोगि, संक्रँाति दो त्योहार रहने पर भी पूर्वकाल के अर्थ और आचरण आज नहीं रहें। ऐसी हिंदू समाज तयार हुई कि उन्हें न भोगी का मतलब मालूम हैं न संक्रँाति का। यह सामान्य मानवों को ही नहीं बल्कि हिंदू मत में अपने आप को बडे ज्ञानियाँ समझने वालों को भी संक्रँाति का मतलब मालूम नहीं हैं। आज अर्थ मालूम न होने पर भी, आचरण थोडे हद तक तो हमारे बीच मौजूद हैं। भोगी के दिन भोगि की आग डालने वाले कुछ प्रांतों में मौजूद हैं। भोगि की आग लगाने का आचरण तो कर रहे हैं, लेकिन आग के सामने पूर्व की भाव किसी के पास न रहते हुए नशीलि पानीय पीकर नाच रहे हैं। भोगों को छोडने वाली उस समय में कुशी से पीते हुए, खाते हुए वक्त गुज़ार रहे हैं। दूसरा दिन यानि संक्रँाति के दिन उसके नाम के बराबर यानि जिस मक़सद से

संक्रँाति का नाम रखा गया उसके मुताबिक एक मिनट भी मन को ठहराने वाले हो, अहम को दबाने वाले हो नहीं दिख रहे हैं। संक्रँाति को औरतों का रंगोली का त्योहार समझते हुए हर घर के सामने रंगोलियाँ डाल रहे हैं। संक्रँाति के दिन भी मन और अहम पर ज़रा भी **क्रांति** के बगैर रंग के रंगोलियाँ डालकर,रंग के कपडे पहनकर खुशियाँ मना रहे हैं। यह सब देखने के बाद, मालूम हो रहा हैं कि पूर्व में बडों ने रखी हुई भाव ज़रा भी नज़र नहीं आरही हैं। हम समझते हैं कि अब हमने जो तरीका बताया उसके हिसाब से कम से कम थोडे हद तक तो लोग बदलेंगें। यह सब पढने के बाद आप नहीं बदले तो भी कोई बात नहीं हैं, लेकिन हमारि विमर्षा करके, दूषणा करके ऐसा बिलकुल मत कहना कि हम ही असली हिंदू है, तुम दूसरे मज़हब के हो, दूसरे मज़हब की बोधा कर रहे हो। हम जो कहरहे हैं वह आध्यात्मिक मतलब के साथ जुडी हुई होती हैं। कुछ लोगों को आसानि से समझ में न आसकती हैं। इसलिये हमारी दूषणा मत कीजिए।

दशरा

दशरा कहलानेवाली शब्द पहले '**दशर**' शब्द की तरह रहती थी। प्रस्तुत काल में दश के सैड में दीर्घवाला '**रा**' शब्द आगया। पूर्व काल में दश के सैड में दीर्घ वाला '**रा**' नहीं रहता था केवल बिना दीर्घ का '**र**' ही रहता था। इसलिये यह जानलें कि पूर्व में रहनेवाला 'दशर' का शब्द आज '**दशरा**' की तरह बुलाया जारहा हैं। हमने यह बात जानलिया कि आज जो भी त्योहार हैं वे सब ब्रह्मज्ञानियाँ उद्देश पूर्वक से ही रखे हैं। इसलिये वे सब भी आध्यात्मिक अर्थ से ही जुडे

हुए रहते हैं। अब हम भी जैसे उन्होनें फैसला करके रखा था उसी अर्थ के साथ बयान करलेना चाहिए। पूर्व में रहनेवाली दशर शब्द दशरा शब्द में बदलगई। बाद में थोडे वक्त के बाद आध्यात्मिकता पोशीदा होकर कुछ पुराणों की कल्पना से विजयदशमि हुई। इसतरह दशर विजयदशमि बनी। ऐसा बदलजानेसे बडोंने निर्णय किया हुआ दशर के भाव को विजयदशमि का भाव पूरा खिलाफ होगया। पूर्व में दशर के शब्द का आध्यात्मिक अर्थ एक ही रहता था। बाद में दशरा का भी खरीब खरीब वही अर्थ रहता था। लेकिन विजयदशमि नाम का भाव पूरा बदलगया।

यह बात तो सब जानते ही है कि शत यानि सौ, दश यानि दस। यहाँ दशर में '**र**' यानि **नाश** हैं। मंत्र के उच्छाटन में भी **रं** कहलानेवाली अक्षर को नाश के बदले में बीजाक्षर की तरह इस्तेमाल करते हैं। **हर** शब्द का अर्थ **नाश** करनेवाले के हैं। उसमें **र** शब्द का मतलब नाश है, **ह** शब्द का मतलब नाश करनेवाले के हैं। **रि** का मतलब पालन है, **हरि** का मतलब पालन या परवरिश करनेवाला हैं। यहाँ सिर्फ एक '**र**' की ही बात करें तो उसके अर्थ के बराबर खत्म करदेना, बिगड गए जैसा करना, नाश करना कहसकते हैं। **दशर** में '**र**' के अनुसंधान में दश कह कर हैं। दश यानि दस है ना! उसके प्रकार मालूम यह हो रहा हैं कि दस को नाश करनेवाली 'दशर' हैं। उसका अर्थ तो अच्छा हैं मगर लेकिन वे दस क्या चीज हैं? नाश क्या चीज़ हैं? यह सवाल किसी को भी आसकता हैं। इस सवाल का जवाब यह हैं कि! हमने साफ बयानकरलिया ना कि सारे त्योहारों के लिए हमें आध्यात्मिक जवाब ही ढूँढना चाहिए! उसके प्रकार ही हमलोगों को विवरण करलेना होगा। यहाँ कुछ लोगों को यह सवाल भी आसकता हैं कि वैसे भी यह आध्यात्मिक मतलब क्या हैं? उसके

बारे में भी ज़रा बयान करलेते हैं। आत्मा के बारे में मालूम करलेने को आध्यात्मिक कहते हैं। आत्मा शरीर के अंदर ही जीवात्मा के साथ निवास कर रही हैं। इसलिये शरीर में ही आध्यात्मिक हैं। और भी तफसील के साथ बयान करलिये तो आत्मा के बारे में अध्यायन करने को ही आध्यात्मिक कहते हैं। जिसतरह चोर है तो मालूम होजाता है कि वहाँ पर पोलिस भी हैं वैसे ही पोलिस है तो चोर भी ज़रुर होंगे, अगर आत्मा है तो जीवात्मा भी रहती हैं, जीवात्मा है तो आत्मा भी रहती हैं। जिस तरह पोलिस और चोर का अविनाभाव संबंध हैं उसी तरह आत्मा को जीवात्मा से संबंध हैं। इसीलिये हम आत्मा,जीवात्मा को जोड आत्मायें कह रहे हैं। जोड आत्मायें रहनेवाले शरीर के बाहर दस ऐसे शरीर के भाग हैं जो आँखों को दिखते हैं। उन्ही को दशेंद्रिय कहते हैं। उनका विवरण देखें तो ऐसा हैं कि उन्हे पाँच कर्मेंद्रिय, पाँच ज्ञानेंद्रिय की तरह डिवैड करके बता सकते हैं। कर्मेंद्रिय पाँच तरतीब के साथ १) पैर २) हाथ ३) मुंह ४) गुद ५) गुह्य कहसकते हैं। ऐसा ही ज्ञानेंद्रिय तरतीब के साथ १) आँख २) कान ३) नाक ४) ज़बान ५) चमडा कहसकते हैं। कर्म और ज्ञानेंद्रिय पूरे दस हैं ना! ये दस को ही '**र**' करनेकेलि कहा हैं, यानि नाश करो कहनेको ही **दशर** कहसकते हैं। अब फौरन ही किसी को भी एक सवाल पैदा होसकता हैं। वह यह है कि! वे पूछ सकते हैं कि दस को नाश करना मतलब क्या हम आँख को भोकदें क्या? कान को काटदें क्या? ज़बान को काटडालें क्या? ऐसा ही नाक को उखाड के फेंकदें क्या? चमडे को निकालदें क्या? इसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि!

आँख वगैरा ज्ञानेंद्रियों को हो, पैर वगैरा कर्मेंद्रियों को हो (चाखू से) भोकने केलिये, काटने केलिए किसी ने नहीं कहा। उनको

खत्म करो कहने का मतलब (अंतरार्थ) यह हैं कि उनके काम को खत्म करो। उनके काम को खत्म करें तो वे रहने पर भी न रहे जैसा ही होगा। इसके बारे नें एक छोटा सा मिसाल बोललेते हैं। सपोज़ एक घर में छोटे, बडे विद्युत के लैट्स (Electric Lights) पूरे दस है समझो । वे सुबह के वक्त जलने की ज़रुरत नहीं है, रात के वक्त दस बल्बें भी जलते रहते हैं। यह सबके घरों में रहने का आम तरीका हैं। लेकिन एक घर के मालिक को रात के वक्त भी रोशनी से कोई ज़रुरत नहीं हैं। तो तब वह क्या करेगा, क्या वह मालिक बल्बों के काम को खत्म करदेगा? या बल्बों को, वैरों को उखाड फेंकेगा? उखाडे बगैर ही उनके काम को खत्म करके ऐसा करेगा कि उनसे उजाला न आए। अगर वह ऐसा चाहता है कि घर पूरा अंधेरा होकर, रोशनी बिलकुल भी न रहें तो दस बल्बों को बुझाकर उनके (रोशनी देने के) काम को खत्म करदेगा। यह एक तरीका हैं तो दूसरा तरीका भी और एक हैं। वह यह है कि! घर के सारे बल्ब तो रोशनी को दे रहे हैं मगर वह अपने आँख को ज़ोर से बंद करलेने से उसे ज़रा भी रोशनी नहीं दिखेगी ना! इस तरीके से भी वह ऐसा करले सकता हैं कि उसे रोशनी के बारे में मालूम न हो। यहाँ एक विधान के प्रकार रोशनी न आने केलिए बल्बों के काम को रोक रहे हैं, लेकिन ऐसा थोडी न कर रहे हैं कि बल्बों को ही हटा नहीं दे रहे हैं ना। ऐसा ही दूसरे तरीके में बल्बें अपने काम कर रहे हैं मगर वह खुद न देखते हुए आँख बंद कर लेने से, ऐसा करले रहा हैं कि रोशिनी न रहे। लेकिन तब भी उसने ऐसा नहीं किया कि बल्बों को उखाडना हो, फोढना हो (नही किया)! यहाँ पर कुछ लोग इसतरह सवाल करसकते हैं कि रोशिनी न रहे जैसा करने केलिए और एक तरीका है ना कि उन सब बल्बों को फोढ़ भी तो सकते हैं हेना! ऐसे

करने से भी रोशिनि नहीं होगी ना! इसतरह पूछ सकते हैं। इसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि! अगर जब घर का मालिक रात के वक्त कुछ न करते हुए खाली रहना चाहता हैं तो, अगर उसे रोशिनी से कुछ काम ही नहीं हैं तो उसवक्त बल्बों को काम न करते हुए बुझादेना चाहिये। और एक तरीके में यह कहा कि आँखों को भी बंद करले सकते हैं! और यह भी बताचुके हैं कि बल्बों को नहीं फोढना चाहिए। क्यों फोढना नहीं चाहिये? इसका जवाब यह हैं कि वह मालिक जो ऐसा समझा कि रात के वक्त उसे रोशिनी की ज़रुरत नहीं हैं लेकिन जब जब रात के वक्त उस मालिक को काम करना पड रहा हैं। उस समय उसको रोशनी की ज़रुरत है। फिर जब रोशिनी की ज़रुरत है तो रोशनी देनेवाले बल्बों का भी रहना ज़रुरी है हेना! इसलिए करेंट के बेलों को नहीं उखाडा और ना ही फोढा।

इसीतरह से शरीर में काम करनेवाले बाहर के अवयव दस हैं। जिसतरह करेंट के बल्बों को सुबह के वक्त काम नहीं है दस अवयवों को भी रात के वक्त काम नहीं हैं। जैसे रात के वक्त बल्बों को काम हैं, सिर्फ सुबह के वक्त दस अवयवों को काम हैं। अगर शरीर में रहने वाले जीव को दस अवयवों के काम से ज़रुरत नहीं हैं तो एक तरीके के हिसाब से जिसतरह घर के बल्बों के काम को रुकाया वैसा ही अवयवों के काम को रोकसकते हैं। दूसरे तरीके के प्रकार रोशिनी को नहीं चाहने वाला जिसतरह आँख को बंद करलिया, उसी तरह दस अवयव काम करते रहने पर भी जीव अवयवों के फलित पर बगैर ध्यान के रहना चाहिए। दस बल्बें रोशिनि तो दे रहे हैं लेकिन जिसने आँखों को बंद करलिया उसे रोशिनि मालूम नहीं होती हैं, उसीतरह दस अवयव काम करते रहने पर भी उन पर ध्यान न रहनेवाले को अवयवों का फलित कर्म जीव को नहीं लगेगा।

इसतरह दो तरीकों से जीव दस अवयवों की ज़रुरत न रहे जैसा करलेसकता हैं। लेकिन दस अवयवों को भोकने की, काटने की कोई ज़रुरत नहीं हैं। जब ज़रुरत पडता है तब अवयवों से जीव को काम करना पड रहा हैं। इसीलिए अवयव शरीर को किसी भी हाल में रहना चाहिए।

एक तरीके के प्रकार दस अवयवों के कामों को रोकने को ब्रह्मविद्या शास्त्र भगवद्गीता में **ब्रह्मयोग** कहा हैं। दूसरे तरीके के प्रकार दस अवयव काम करते हैं तो जीव उनसे संबंध न रखते हुए फलित पर ध्यान न रखते हुए रहने को भगवद्गीता में **कर्मयोग** कहा है। ये दो योगों में दस अवयवों से संबंध को तोडडालना दो तरीकों से ही है। इसलिए तुम इनसान उस दस (इंद्रियों) के फलित को न रहे जैसा करलो। यह बात बताने की योग सारांश को **दशर** कहलानेवाली त्योहार के रुप में बडों ने रखा हैं। दशर का अर्थ यही हैं कि ऐसा करलो कि ये दस अवयव न रहे। पूर्व में इसतरह का अर्थ बताकर त्योहार को रखे थे। जैसे जैसे वक्त गुज़रता गया अज्ञान बढकर धर्म अधर्मों में बदलगये। इसीलिये आज दशर का कोई मतलब ही नहीं रहा। ब्रह्म, कर्म योग की निशानी ही दशर हैं, बडों ने दशर नाम रखने का उद्देश या अंतरार्थ ही यह हैं कि वह योगों की सूचना हैं, लेकिन आज के ज़माने के लोगों को यह बात नहीं मालूम हैं। अगर **र** का मतलब नहीं जानते है तो कम से कम **दश** का तो मतलब जानते होंगें ना! ऐसा हैं तो यह बात तो साफ नज़र आरही है कि दशरा बोले तो दसरा!! तब तो भी कम से कम यह सोच सकते हैं ना कि इस शब्द में दस का क्या मतलब है!!!

लेकिन ऐसा कोई भी नहीं सोच रहा हैं कि आखिर यह दस का क्या समाचार होसकता हैं। दशरा कहते ही कुछ नौकरी करनेवाले

इस बात से खुश हो रहे हैं कि वसूलों के नाम पर पैसे वसूल करसकते हैं। कुछ लोग ऐसे भी है कि यह त्योहार आये तो बहुत से लोग पैसे माँगेंगे, अगर जिन्होंने पूछा उनको नहीं दिए तो अच्छा नहीं लगेगा, अगर देना चाहा तो अपने पास पैसे न रहने पर भी इन्टेंस्ट (Interest) पर लाकर कर्ज़ करके इज़्ज़त के लिए वसूल देते हैं। दशरा आनेपर वसूलों के पैसों से कुछ लोग अपने बाकियों को खत्म करले रहे हैं तो, थोडे लोग वसूलों के रुप में दूसरों को दिए हुए होने से नये से बाक़ीदार होजारहे हैं। पूर्व में बडों ने यह सोच कर रखा कि दशरा त्योहार अच्छी ज्ञान की संदेश देगी, लेकिन आज दशरा त्योहार लोगों में वसूलोंको, दुरभ्यास को सिखाए जैसा हुआ। हमेशा हिंदूसंस्कृती को बचाने केलिए दूसरे मज़हबों पर कूदनेवाले हिंदू संस्थाएँ यह बात नहीं समझ पारहे हैं कि अपने मत में ही त्योहारों की संस्कृती मिट्टी में मिलजारही हैं। यह नहीं कहपारहे हैं कि इसतरह वसूलकरना ठीक नहीं हैं। हिंदूमत में कोई भी स्वामीजि क्यों न हो वसूलों की दुरभ्यास की खंडना न प्रत्यक्ष से कर रहा हैं न परोक्ष से। कोई भी खंडन करें या न करें हम तो कई सालों से यह विषय संस्कृती को खंडन करते ही आरहे हैं। हिंदू संस्कृती को ठीक करने केलिए हम जो कोशीश कर रहे हैं और हमारे बोधाओं को देखे हुए लोग इस बात से खुश हो रहे हैं कि इसे असली ज्ञान कहते हैं, तो कुछ लोग जो हिंदू मत में हम मुख्य लोग हैं कहते हुए पोजिशनों के नाम रखलिये हुए कुछ लोग हमको देखकर सेह नहीं पा रहे हैं और ऊपर से ऐसा हम पर प्रचार कर रहे हैं कि हम हिंदू ही नहीं हैं, हम परमतों के बारे में बोधा करनेवाले हैं। ऐसे लोग चाहे कुछ भी प्रचार करलें लोगों को तो यह साफ नज़र आ रहा हैं ना कि हम कौन है, क्या कर रहे हैं।

अब तक तो हमने यह जानलिया है ना कि पूर्व में दशर नाम से रहनेवाला शब्द गुज़रते वक्त के साथ दश**रा** शब्द में बदलगया। इतनाही नहीं दशरा विजसदशमि के नाम से भी बुलाया जारहा हैं। पूर्व में ज्ञानियों ने रखी हुई दशर नाम में नाश होजाने का मतलब बसा हुआ हैं तो, आज के विजयदशमि नाम में यह मतलब बसा हुआ हैं कि दस चीज़ें हासिल किये। **दश कहें, दशमि कहें,दोनों का मतलब दस ही हैं।** लेकिन र का मतलब नाश है तो, यह तो सब जानते हैं कि विजय का मतलब बडी जीत या कामियाबि हैं। युद्ध में एक जन नाश होजाता है तो दूसरा विजय पाता हैं। पूर्व में बडोंने दश (दस) नाश होनेवाले दिन को दशर कहा तो, आज दस पर विजय हासिल किये हुए दिन को विजयदशमि कह रहे हैं। कौनसा सही है यह खुद आप ही ज़रा सोचलीजिए। कुछ लोग तो ऐसे पुराण तय्यार करलिए जिस में कोई आध्यात्मिकता ही नहीं हैं फिर ऊपर से ऐसा कह रहे हैं कि यह वह दिन है जिसमें दुर्गा देवी ने विजय हासिल की हैं। नवरात्रि के पूजाएँ दुर्गा देवी को करते हुए आखिर दसवीं दिन को कह रहे है कि माँ ने विजय हासिल की हैं। और यह भी कह रहे हैं कि महिषासुर नाम के राक्षस को नौ बार मारडालने से वह ज़िन्दा हुआ तो आखिर में दुर्गा देवी ने पूरे तरीके से मारडाला इसीलिए उसे विजयदशमि कह रहे हैं। तो और कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि देवताओं ने दी हुई दस प्रकार के आयुधों से महिषासुर को मारा हैं इसलिए उसे विजय दशमि कह रहे हैं। जो भी हो मनुष्य ठीख होने की आध्यात्मिकता इन कहानियों में नहीं हैं, इसलिए मनुष्य अपने बारे में सोचे बगैर दशरा को दुर्गा देवी का विजय समझ रहा हैं। लेकिन ऐसा नहीं समझ रहा हैं कि बडों ने खुद इनसान के लिए कही हुई ज्ञान संदेश ही **दशरा** हैं।

दशरा की त्योहार के वक्त आयुधों की पूजा करना भी इस ज़माने में हैं। कुछ लोग उन चीज़ों की पूजा कर रहे हैं जिनसे वे काम करते हैं तो कुछ रौडियाँ,पार्टी के नायक (फ्याक्षन नायक) डैरेक्ट मारणायुधों की ही पूजा कर रहे हैं। इसतरह दशरा आयुधों की पूजा में बदलजाना विचित्र से है। इसतरह मारणायुध की पूजा करने केलिए भी कुछ लोग कुछ कहानियाँ बनाकर दिखा रहे हैं। इसतरह दशरा त्योहार में ज़रा भी आध्यात्मिकता न रहते हुए पुराणों की ज़ोर ही ज़्यादा होगई यानी सिर्फ ज़बान से बोलेजानेवाले बातें, न तो वे सच है ना हीं उनमें शास्त्र बद्धता होती हैं । इसलिए पूर्व में बडों ने रखी हुई आध्यात्मिक मतलब पोशीदा होकर नये तरीके के साथ रुप बदली हुई दशर आज हमारे सामने हैं। पूर्व में ब्रह्मविद्या को जानेहुए ज्ञानी लोग, एक नेक इरादे से कि लोग अज्ञान में नहीं गिरना चाहिए समझकर कुछ त्योहारों को भावयुक्त के साथ रखे हैं तो, आज उनके भाव के खिलाफ त्योहार तयार होगए। कम से कम अब तो बडों ने बताए हुए ज्ञान मार्ग के मुताबिक, उन्होंने जिस मक़सद से उस दिन बताया था उसी अर्थ के प्रकार त्योहारों को मनाते हैं। जिन्हे पंडुगा का विवरण नहीं मालूम उन्हे भी उसकी असलियत बताकर उन्हे भी सीधे राह में आचरण किये जैसा करते हैं।

दशरा की त्योहार वर्ष काल के आखिर में, सर्दी के मौसम के शुरुआत में आरही हैं। शरीर पर रहनेवाले दस अवयव जिसे स्थूल शरीर कहते हैं, उस वक्त ही ज़्यादा याद आयेंगे। ऊपर दिखनेवाले दस अवयवों को ही सर्दी होती है हेना! उसवक्त चाहे पंडित को हो या पामर को हो ठंड शरीर को याद दिला रही हैं। जब ठंड के तकलीफ से बाहर आनेकेलिए दस अवयवों को गर्मी के कपडे से ढक कर ऐसा करते हैं कि वे बाहर न दिखे। गर्मी कहलानेवाली

सुख केलिए दस अवयवों को नही दिखे जैसा कर रहे हैं हेना। ऐसा ही दस अवयवों के काम को रोक कर उन्हे ज्ञान कहलानेवाले कपडे से ढक कर नही दिखे जैसा करले कर मोक्ष कहलानेवाली सुख केलिए कोशीश करो इनसान को यह बात बताने केलिए ही ठंड काल के शुरु में ही दशरा की त्योहार आरही हैं। जैसे ठंड काल के शुरु में ही शरीर को ढकने केलिए कपडों को ढूँढते हैं वैसे ही शरीर के दस अवयवों से बिना संबंध रखते हुए ज्ञान को ढूँढलेना चाहिए। इसतरह दशरा त्योहार उन्नत ज्ञानमार्ग के लिए शुरुआत हैं। ठंड की तकलीफ को दूर करलेने केलिए जिसतरह कपडे की ज़रुरत हैं उसीतरह कर्म की तकलीफ को खत्म करलेने केलिए ज्ञान की ज़रुरत हैं। दशरा ठंड काल की शुरुआत में ही आ रही हैं। जिसतरह ठंड की निवारण केलिए कपडा इस्तेमाल करलेते हैं उसीतरह अब से कर्म निवारण केलिए ज्ञान की इस्तेमाल करलेते हैं।

शिवरात्रि

आध्यात्मिक भाव रखनेवाले त्योहारों में युगादि, दशरा, संक्राँति के साथ शिवरात्रि भी मुख्य त्योहार की तरह पहले से मनाई जा रही हैं। युगादि के बाद सब त्योहारों से प्राचीन त्योहार शिवरात्रि ही है! ज़मीन पर पैदा हुई पहली देवस्थान ईश्वरलिंग की मंदिर ही हैं! जब किसी भी तरह का प्रतिमा नहीं था तब सबसे पहली प्रतिमा शिवलिंग ही हैं!!! पूरे प्रपंच में सिर्फ एक भारत देश में ही पहली लिंग प्रतिष्टा कृतायुग में ही हुआ था। ईश्वरलिंग बडी महत्व अर्थ के साथ निर्मित की गई थि। उस ज़माने के बडों की भावना आज ढूँढने पर भी नहीं मिलता। कोई भी हो लिंग को सिर्फ फूल रखके नमस्कार करना है

मगर आराधना नहीं करनी चाहिये, अभिषेक भी नहीं करना चाहिए यह नियम उसदिन रहता था। यह नियम मालूम न होने से आज ईश्वरलिंग को अभिषेक, आराधनाएँ कर रहे हैं। मुख्य से ईश्वरलिंग को गर्भगुडी में नहीं रखना चाहिये। पूर्व में जिस उद्देश्य से शिवलिंग को रखे थे वह उद्धेश्य आज नहीं रहा। ईश्वरलिंग के ऊपर धारापात्र के सिवा सिंहतलाट भी नहीं रखना चाहिए। लिंग के सिवा किसी भी प्रतिमा को गर्भगुडि रख सकते हैं। ऐसा ही लिंग के सिवा कोई भी प्रतिमा को अभिषेक, आराधना रह सकते हैं। लेकिन आज सब प्रतिमाओं के साथ लिंग को भी गर्भगुडि बनाकर अभिषेक कर रहे हैं। इससे मालूम हो रहा हैं कि लिंग की प्रत्येकता आज के लोग नहीं समझ करलिए। पूर्व में लिंग को बयलु (बाहर) के प्रांत में ही प्रतिष्टा किया करते थे। लिंग को गर्भगुडी में रखने से, अभिषेक आराधनाएँ करने से, लिंग की आध्यात्मिक भाव मिट्टी में मिल जा रही हैं। इसतरह के अज्ञान के काम भविष्य में कोई भी करने का मौका है समझकर खूब सोंचे हुए ब्रह्मज्ञानि ऐसा न करने केलिए पूर्व में ही शिवरात्रि त्योहार को उद्देश पूर्व से रखे थे। फिर भी शिवरात्रि का मतलब न जानने वाले लोग बडों के मक़सद या भाव के खिलाफ आज चलरहे हैं। शिवरात्रि के दिन ही ज़्यादा अभिषेक आराधनाएँ करना हो रहा हैं। अब हम वह बडों की उद्देश को मालूम करने की कोशीश करते हैं जो आज हमारे पास नहीं हैं।

उस दिन जब ज़मीन पर किसी भी तरह के देवालय नहीं थे तब पहले परमात्मा (ईश्वर) की पहचान लोगों को मालूम कराने केलिये, यह बात बताने के लिये कि ईश्वर का कोई रुप नहीं हैं बिना नाक मुखवाले पत्थर को दिखाये थे। किसी भी तरफ देखलो लिंग का मुख नहीं दिखता ऐसे लिंग को ईश्वर की निशान की तरह रखे थे।

पूर्व में ईश्वरलिंग बयलु प्रांत में रहता था। परमात्मा की कोई पैदाइश नहीं हैं इसलिये वह गर्भ से पैदा होने का कोई मौका नहीं हैं। इसलिए यह बताने केलिये कि परमात्मा पैदा होनेवाला नहीं हैं गर्भ कहलानेवाली गुडी में, यानि गर्भगुडि में लिंग को रखा नहीं करते थे। बिना रुपवाले ईश्वर को इनसान के रुप में रहनेवाली बीवी नहीं हैं । ईश्वर की बीवी प्रकृति ही हैं। इसलिए प्रकृती को पाणिमट्ट की तरह लिंग के नीचे रखे थे। इसलिये आकार वाली पार्वती को सैड में प्रतिष्टा नहीं किया करते थे। कृतयुग में बडे लोगों ने ईश्वर की राज़ को यानि प्रकृति, परमात्मा और इन दोनों से पैदाहोनेवाले जीवों की जानकारी सब मालूम हुये जैसा लिंग प्रतिष्टा में डिज़ैन करके रखदिया ताकि लिंग प्रतिष्टा को देखते ही ईश्वर का पूरा विषय लोगों को समझ में आजाए। पूर्व में ज्ञानि लोग बहुत ही ज्ञान के साथ लिंग प्रतिष्टा को बयलु (ज़ाहिर) में ही कर के, सैड में कुछ भी प्रतिमा न रहे जैसा किया। ईश्वर की कोई वाहन नहीं हैं इसलिये यह काल में की नंदिवाहन भी पूर्व में नहीं रहती थी। वक्त के साथ साथ माया का प्रभाव ज़्यादा होजाने से अज्ञान बढजाने से लिंग को गर्भगुडी में रखना, लिंग के सैड में पार्वती को रखना, सामने नंदी को रखना हुआ। यह सब बातों की समर्थन करने केलिए कुछ लोग पुराणों के नाम से कथायें भी बनालिए। ऐसा प्रचार किये कि गरदन पर साँप रखनेवाले शंकर महर्षी के शाप से पत्थर बनगया, वह पत्थर ही लिंग हैं। उसे अमायक प्रजा सच समझकर यकीन किये।

गरदन पर साँप रखा हुआ नटराज शंकर को, लिंग रुप में रहनेवाले ईश्वर यानि परमात्मा से किसी भी तरह का संबंध नहीं हैं। शंकर की बीवी पार्वती है, ऐसा ही उसे बेटे भी हैं। ईश्वर को न आकार हैं न शंकर के जैसा परिवार हैं। बहुत से लोग शंकर कहें,

ईश्वर कहें, शिव कहें तो (तीनों को) एक ही समझ रहें हैं। ऐसा समझना बहुत ही बडी भूल हैं। यह जानलें कि शंकर त्रिमूर्तियों में से एक है तो, ईश्वर कहें या शिव कहें वह पूरे विश्व में फैला हुआ परमात्मा हैं। परमात्मा को रुप ही नहीं बल्कि नाम भी नहीं हैं। उसके प्रकार ईश्वर शिव यह दो नाम नहीं हैं। परमात्मा की महत्व को बताने के अर्थ के साथ जुडेहुये शब्द ही है ंमगर नाम नहीं हैं। ईश्वर शब्द का अर्थ अधिपति के हैं। सर्वेश्वर यानि सर्व का अधिपति परमात्मा हैं। यह जानलें कि शिव यानि वह बीजाक्षर हैं जो अग्नि की पानी की निशान हैं। **ऊँ नमःशिवाय** शब्द को सिर्फ लिंग के पास ही उच्चार करना चाहिए। आकार वाले शंकर के पास उच्चार नहीं करना चाहिए। ऊँ नमःशिवाय जिसे पंचाक्षरी कहते हैं उस पंचाक्षरी को, शंकर को किसी भी तरह का संबंध नहीं हैं। प्रकृती से भी नाश न होनेवाला ही परमात्मा है यह बताने केलिए ही पंचाक्षरि कहलानेवाली शब्द की तरह ऊँ नमःशिवाय कहा हैं। यह शब्द में प्रकृती यानि पंचभूतों से परमात्मा नाश नहीं होनेवाला हैं कहकर बताते हुये **ऊँ** को परमात्मा का बीजाक्षर कहा था। ऐसा ही **न** को आकाश की बीजाक्षर कहा हैं,**मः** को हवे की बीजाक्षर कहा है, **शि** अक्षर को आग की बीजाक्षर, **व** को पानी की बीजाक्षर,**य** को ज़मीन की बीज़ाक्षर की तरह रखके दिखाये। पाँच अक्षरों को नाश न होनेवाली को **पंचाक्षरी** कहा हैं।

पंच यानि पाँच अक्षर हैं, वे पाँच ही **नमःशिवाय** है तो छटी अक्षर की तरह पहले ही **ऊँ** हैं। पंचभूतों से अतीत रहनेवाले ईश्वर की निशानि ऊँ है तो, वह प्रकृती (पंचभूत) निशानि नमःशिवाय हैं। वे लोग जो पूरा ज्ञान रखते हैं परमात्मा को आश्रय करते हैं। जिन्हे ज्ञान नहीं मालूम वे प्रकृती के तरफ ही जाते हैं। प्रकृती के अग्नी पानी

के बीजाक्षर को लेकर शिव इसलिए कहा ताकि प्रकृती के तरफ गये हुए अज्ञान भी ईश्वर को याद करें। इसलिए ज्ञानियाँ ईश्वर कहें, अज्ञान शिव कहें तो दोनों भी ईश्वर को याद किए जैसा ही हुआना। हमने बयान करलिया था ना कि '**शि**' अग्नि की '**वा**' पानी की निशान है या बीजाक्षर हैं। तो अब एक सवाल पैदा होसकता हैं कि क्यों यहाँ पर सिर्फ पानी और अग्नी को ही लिया हैं? उसका जवाब यह है कि! अगर अग्नी को पानी के नीचे रखे तो पानी गरम होकर भाप में बदलकर नज़र न आते हुए खत्म होजाता हैं। अगर पानी को ही अग्नी पर डालें तो पानी से अग्नी भी बुझकर खत्म होजारहा हैं। इसतरह पानी से आग और आग से पानी खत्म होने का मौका हैं। ऐसा ही ज़मीन हवे को या हवा ज़मीन को नाश नहीं कर सकता। नज़र न आनेवाली आकाश किसी से भी नाश नहीं होती। इसलिए प्रकृती के निशानों में सिर्फ अग्नी पानी को ही एक दूसरे को नाश करले सकते हैं। कुछ भी ज्ञान न मालूम होनेवाले भी थोडा बहुत ज्ञान जानने केलिये, वे भी परमात्मा को याद करने केलिए बडोंने फैसला किया हुआ शब्द ही शिवा है। इसलिए पूर्व में ज्ञान को खूब जाने हुए पंडित परमात्मा को ईश्वरा कह कर पुकारे तो, पूरा ज्ञान न रखनेवाले अज्ञान शिवा कह कर पुकारा करते थे। इसतरह बुलाने से बुलाई गई शब्द को पकड कर सुननेवाले को यह मालूम होजाता था कि वे लोग पूरे ज्ञानि है या अज्ञानि। पूर्व काल में ऐसा रहता था तो आज यह तक आखिर किसे शिवा कहना है, किसे ईश्वरा कहना है किसी को भी यह बिलकुल मालूम नहीं हो रहा हैं। कर्णाटका रार्ष्ट में ज्ञानि अज्ञानि दोनों शिव शब्द ही ज़्यादा पुकार रहे हैं।

पूर्व में ऊँ नमःशिवाय कहलानेवाली छः अक्षर को पंचाक्षरी इसलिये कहा क्यों कि पहला अक्षर ऊँ जो परमात्मा की निशानि है

वह प्रकृती भाग यानि आकाश, हवा, आग,पानी, ज़मीन से नाश नहीं होती हैं इस मतलब से ही पंचाक्षरी को ऊँ नमःशिवाय कहा है। लेकिन यह साफ मालूम हो रहा है कि ऊँ नमःशिवाय कहलानेवाली पंचाक्षरी स्थूल से पाँच अक्षर नहीं हैं छः अक्षर हैं। जिसतरह ईश्वर के तरफ से पुकार रहे ईश्वर की और प्रकृती के तरफ से पुकार रहे शिव की अर्थ को मालूम नहीं करपाये वैसा ही यह बात भी हमने मालूम नहीं करपाये कि पंचाक्षरी में छः अक्षर है, उसका अर्थ पाँच भागों वाली प्रकृती से एक भाग वाली परमात्मा नाश नहीं होगा। इसतरह पूरी जानकारी मालूम न होनेवाली हालत में मानव है तो शिवरात्रि का अर्थ, उसका उद्देश कैसे मालूम होगा। ऐसी सूरत में क्या इनसान शिवरात्रि त्योहार को पूरे तरीके से इनसाफ करसकता हैं क्या? क्या अर्थ से जुडी हुई आचरण को त्योहार के दिन आचरण कर सकता हैं क्या? इसीलिए पंचाक्षरी की बात, ईश्वर शब्द के बारे में, शिव शब्द के बारे में इतनी तफसील के साथ बयान करना पडा। इतना ही नहीं **यह भी कहना पडा कि शंकर को और ईश्वर को किसी तरह का संबंध नहीं हैं, शंकर शरीर रखनेवाला हैं, परमेश्वर बिना शरीर वाला हैं।** और भी कहें तो शंकर भी ईश्वर के बारे में ध्यान किया करता था, मोक्ष केलिए प्रार्थना किया करता था, योग दंड की उपयोग करके चर्मासन पर ब्रह्मयोग की अमल किया करता था। ये सब पहले जानने के बाद ही शिवरात्रि त्योहार का अर्थ आसानी से समझ में आसकता है। अब हमने जो भी बताया वह सब नयी विषय ही है इसलिये जिसतरह नया आहार (खाना) खानेवाले को हज़म (जीर्ण) नहीं होता उसी तरह कुछ लोगों को यह विषय जीर्ण नहीं होसकता हैं। सिर्फ तुम लोगों को समझ में न आने से हो या तुम लोगों को पसंद न आने से हो अगर हमें दूषण करें या अज्ञानि

कहें या और भी कुछ बुरा भला कहें तो भी मैं जो निमित्तमात्र हूँ बरदाश्त करसकता हूँ। लेकिन हम में मेरे अलावा दूसरा वाला यानि आत्मा है ना! वह बरदाश्त नहीं करेगा। बडे पाप को आप पर थोपेगा। (यानि आप बहुत बडा पाप कमालेंगें)। यह ईश्वर के ज्ञान की संबंदित पाप है इसलिए अनुभव करते वक्त भयंकर से रहता हैं इसलिए जत्तन (केरफुल)!

अगर जीव शरीर में जी रहा है तो इसका मतलब यह मालूम हो रहा हैं कि उसे पाप पुण्य कहलानेवाली कर्म हैं। जब कर्म खत्म होजाता है तब वह जीव मोक्ष पाकर ईश्वर में ऐक्य होजाता है। **मोक्ष पाने केलिये ही हमें ज्ञान हासिल करना होगा। ज्ञान को जानने केलिए त्योहारों की आचरण करनी होगी।** जीव केलिये कर्म लकडियों की तरह है। जिस के पास लकडियाँ नहीं हैं उसी को मुक्ती कहलानेवाले घर में प्रवेश मिलेगा। जिसके पास लकडियाँ होते हैं उसे प्रवेश नहीं मिलेगा। इसलिए ज्ञान कहलानेवाली आग से लकडियों को खत्म करलेना होगा। इसलिए जीव मुक्ती पाने केलिए उसे जो चाहिए वह ज्ञान की आग हैं, इसलिए पंचभूतों में जलाने की स्वभाववालि आग की निशानि **शि** शब्द को लेकर, जलजानेवाले लकडियों के तरह भाप में बदलजानेवाले पानी की निशानि **वा** को लेकर शिवा कहा हैं। इसके प्रकार शिवा कहने में इसतरह का अर्थ हैं कि ज्ञानाग्री से कर्म कहलानेवाले लकडियों को खत्म करलूँगा। ज्ञान से कर्म खत्म होगया तो मुक्ती पा सकते हैं, यानि ईश्वर को पासकते हैं। ईश्वर त्रिगुणरहित हैं। गुण है तो वह दिन है, रात में गुण नहीं रहते, इसीलिए माया की निशानी दिन है, ईश्वर की निशानि रात है कह कर हमलोगों ने **सुबोध** ग्रंथ में बोललिये थे। ज्ञान की आग से कर्मों की लकडियों को आहुती करके, उस ईश्वर को पाऊँगा जो बिना तीन गुणवाला रात हैं।

यह भाव के साथ जलानेवाली आग की निशानि के तौर पर **शि** कह कर जलानेवाली कर्म के निशानि के तौर पर **वा** कह कर, पानेवाले ईश्वर को **रात्रि** की निशानि की तौर पर एक महत्व अर्थ के साथ पूर्व में युगादि के बाद रखी गई सब से पहला त्योहार शिवरात्रि हैं। देखा! शिवरात्रि में कितना महत्व अर्थ छुपा हुआ हैं!!

मानव केलिए मोक्ष को दिखानेवाली शिवरात्रि को बडोंने पहले त्योहार की तरह दिखाये तो, कृतयुग से त्रेतायुग, त्रेतायुग से द्वापरयुग, द्वापरयुग से कलियुग आने तक माया के असर से शिवरात्रि की अर्थ ही पोशीदा होगया। सब लोग ऐसा समझ रहे हैं कि शिवरात्रि मतलब शंकर की पूजा करने का दिन हैं और **ऊँ नमःशिवाय** को शंकर की निनाद समझले रहे हैं। लेकिन परमात्मा को हो, मोक्ष को हो कोई भी याद नहीं कर रहा हैं।

रुद्र कहें या शंकर कहें दोनों एक ही है। शंकर अपने सर पर ज्ञान की निशान चंद्र को रखलेकर यह कह रहे हैं कि मैं ज्ञानी हूँ। क्योंकि उनको ज्ञान मालूम है होने से योग केलिए जो चमडा ज़रुरी है उसे आसन की तरह करलेके, योगदंड की उपयोग करते हुए दैव (ईश्वर) में अपना मन लग्र करता था। इसतरह रुद्र शंकर, ईश्वर को पाने केलिए कोशीश कर रहा हैं तो, उसके रास्ते में हम भी चलकर शिवरात्रि को असली अर्थ के साथ न समझते हुए, शिवरात्रि को शंकर की दिन की तरह समझना गलती नहीं हैं क्या? पूर्व के आचार के प्रकार ईश्वर लिंग को सामने रखले कर उसे शंकर की तरह समझना गलती नहीं हैं क्या? सृष्टि रहस्य को बतलानेवाली लिंग के सैड में पार्वती को बीवी की तरह, नंदी को वाहन की तरह रखना गलती नहीं हैं क्या? इन सबकी मूलकारण अज्ञान ही है। बनी

बनाई हुई पुराणों को कुछ लोग प्रचार करने से पैदाहुई मौढ्य के कारण, विशेष अर्थ के साथ लिंग हमारे सामने रहने पर भी उसे ऐसा समझ रहे हैं कि वह शाप के कारण पत्थर में बदलगया हुआ शंकर हैं। बिना रुपवाले लिंग को कुछ लोग अज्ञान से वह मास्क लगा रहे हैं जिस पर शंकर का मुख का आकार हैं। लिंग को मुख का आकर रखने से लिंग के अर्थ को ही भंग हो रहा हैं।अबतक बहुत ही अज्ञान के साथ सृष्टि की मूल कारण ईश्वर को लिंग के रुप में न देखते हुए,उस ईश्वर को शंकर समझ बैठे । अब से तो कम से कम ईश्वर को लिंग की तरह, शंकर को रुद्र भूमि में संचार करनेवाले रुद्र की तरह देखना चाहिए। शिवरात्रि को कर्म खत्म होजानेवाली मोक्ष की रात की तरह देखना चाहिए।

प्रस्तुत काल में शिवरात्रि त्योहार पूरे देश में मनाई जाती हैं फिर भी कम से कम एक प्रांत में भी पूर्व के सांप्रदाय के अनुसार नहीं कर रहे हैं। पूर्व में इंदुत्व (हिंदुत्व) ज्ञान के साथ जुडी हुई होती थी। आज इंदुत्व राजकीय से जुडी हुई हैं। बिना दैवज्ञान की राज कीय हिंदुत्व की परदा डाललेकर हमारे जैसे लोगों को भी रोक रही है ताकि आत्म ज्ञान को न कहें। यही हमारा ध्येय है कि मनुष्य चलनेवाले अज्ञान मार्ग की खंडना करते हुए ज्ञान मार्ग की बोधा करना। और हमारा कर्तव्य यह है कि अगर हिंदू दैवमार्ग में ठीक से नहीं चल रहे हैं तो तुम लोग यहाँ अज्ञान से चल रहे हैं, ईश्वर ने कही हुई भगवद्गीता के खिलाफ चल रहे हैं। बहुत से वेदाँत लोग भी ज्ञान के खिलाफ चल रहे हैं तो, हम उनसे कहा कि वेद प्रकृती से पैदा हुये हैं, दैव जनित भगवद्गीता सब केलिये आमोद्य योग है और यही असली ज्ञान हैं। ऐसा ही हिंदू होने के बावजूद भी भगवद्गीता के प्रकार न चलनेवालों को देखिये बडों ने पूर्व में किस तरह बताया है कहते

हुये असली ज्ञान को बाहर दिखा रहे हैं। ज्योतिश्य शास्त्र के प्रकार, हमारे जातक के प्रकार ज़मीन पर हमारा काम जो ज्ञान छुप गया या पोशीदा होगया है उस ज्ञान को बताना ही हमारा काम हैं। हम शास्त्र बद्ध के साथ, पुराण रहित से ज्ञान बता रहे तो, इस बात से खुश होना चाहिए कि कई रहस्य जो अबतक मालूम नही हुये जो हमारे द्वारा मालूम हो रहे हैं। लेकिन इसके बजाये ऐसे हिंदू है जो हमसे कह रहे हैं कि आप ज्ञान की बोधा मत कीजिये इस वाखिये से ही मालूम हो रहा है कि हिंदू लोग कितने अज्ञान में फसे हुये हैं। आज इंदू (हिंदू) की तरह पैदा होने से, हमारा उद्देश यह है कि हिंदुओं को संपूर्ण ज्ञान दें। वह कोशीश अंदर की आत्मा करवारही है तो मैं कर रहा हूँ। मतलब हम ज्ञान की बोधा करते ही रहेंगें।

शिवरात्रि कर्मनिर्मूलन केलिए, मोक्ष प्राप्ति केलिए याद आना चाहिए। लेकिन कर्म कमालेने केलिए याद नहीं आना चाहिये' आज के ज़माने में शिवरात्रि के दिन जागरण के नाम से रात के वक्त जागते है। सबको यह मालूम है कि उसदिन जागना है? लेकिन असल क्यों जागना चाहिए? और जाग कर आखिर हमें करना क्या है? शिवरात्रि के दिन रात में सिनेमा, घूमना, पीना, वेश्याओं से गुज़ारना कर रहे हैं। कुछ लोग तो इसतरह गर्व से कह रहे हैं कि हमने गर्ल फेंन्ड से एन्जाय किया हैं। इसतरह आज के स़माज में युवता बदलजारही है तो, बडे लोग ऐसे चुप चाप रह रहे हैं कि कुछ हुआही नहीं हैं। ऊपर से कह रहे हैं कि कितने भी पाप करने पर भी अगर हज़ार रुपे खर्चा करके शिव को अभिषेक किया है ना वही चलेजायेंगें। पूजा करनेवाले पंडित भी यही कह रहे हैं कि पाप परिहार्थ केलिए ही पूजाएँ हैं (मतलब पाप करो फिर उनको धोने केलिए पूजा करो)। उस के कारण पाप का डर किसी को भी न रहते हुए यह भाव सब

में है कि पैसा खर्चा करके पूजा हो, अभिषेक हो करें तो पाप चलाजाता हैं। इस वजह से शिवरात्रि के दिन भी उस त्योहार को टैमपास केलिए ही कर रहे हैं। सांप्रदाय के बराबर त्योहार के दिन गुज़रे हुए काल के बारे में योचना करके, मैं कितना पका हूँ इस बात का हिसाब करलेना चाहिए। कर्म को खत्म करने की ज्ञान के बारे में तलाश करनी चाहिए। यह जानलें कि वे माया से जागृत होते हुए दूसरे लोगों को भी जागृत करने का दिन है इसलिए उस रात को शिवरात्रि की जागरण कहा हैं। लेकिन यह जानलें कि नींद गये बगैर जागना जागरण नहीं कहलाता।

अगर पढ़ाई न आनेवाले पामर दूसरों का अनुसार कर रहे हैं तो उसे मान सकते हैं (क्योंकि उन पामरों को न मालूम होने से अनजान में गलती कर रहे हैं इसलिए नज़र अंदाज़ कर सकते हैं)। लेकिन विद्वान होकर भी, विज्ञानी होकर भी दूसरे जो कर रहे हैं उनका विवरण मालूम न करते हुए अंधेपन के साथ कर रहे हैं मतलब वह बेकार है यानि उसका कोई मतलब ही नहीं हैं। शिवरात्रि के बारे में हो, और बाक़ी त्योहारों के बारे में हो ज़रा भी उनकी असलियत न जानते हुए, कम से कम मालूम करने की कोशीश भी न करते हुए, अंधेपन से जा रहे होने से, हेतुवाद पूछनेवाले सवालों को जवाब नहीं दे पा रहे हैं। विद्वान भी सही जवाब न पाने के कारण यह सब मूढत्व (मूढ भक्ती), मूढ यकीन है कहते हुए हेतुवाद भी यह कह रहे हैं कि ईश्वर ही नहीं हैं। अब तक बहुत सारे लोग जिन्होने इस बात पर योचना किया कि असल में ज्ञान क्या चीज़ हैं उनको सही जवाब न मिलने से कुछ लोग परमत का आश्रय ले रहे हैं तो, कुछ लोग नास्तिक वादों में बदल जा रहे हें। कुछ लोग तो प्रजा विज्ञान वेदिका के नाम से ईश्वर ही नहीं है कह रहे हैं, भगवद्गीता बूटक है,

ज्ञान बोलने वाले सब धोके बाज़ हैं। हमारे जैसे लोग ज्ञान को बोल रहे है तो वह समझ में न आने से कह रहे हैं कि आपका पूरा ज्ञान हिंदू मत के खिलाफ का ज्ञान है इसतरह कहते हुए गुस्सा होनेवाले लोगों को क्या उन्हे इस माम्ले में हेतुवाद, विज्ञान वेदिकाएँ नहीं दिखे। हम यह विज्ञाप कर रहे हैं कि अब तो कम से कम अपने आप पर यह रंग मत लगालीजिए कि हम हिंदू हैं, और खुद जाग कर अज्ञान में फसे हुये हिंदुओं को बचाइये। पहले तुम ज्ञान को हासिल करो! बाद में दूसरों को ज्ञान के बारे में बताना, तब ही हम भी ठीक होसकते हैं, हमारे संस्कृती में के त्योहार भी ठीक होसकते हैं।

श्रीराम नवमी

त्रैतायुग में दशरथ महाराज को कुमार (पुत्र) की तरह राम पैदा हुआ था। उसदिन ग्रहचार के प्रकार हो या महर्षियों के बात के प्रकार हो **राम** कहलानेवाला दो अक्षरों का नाम दशरथ के पुत्र को रखे थे। कुछ लोगों ने उस नाम के सामने इज़्ज़त के साथ, शुबप्रद से **श्री** कहलानेवाला अक्षर को जोडकर **श्रीराम** कहा हैं। यह बात जानलें कि **श्री** कहलानेवाला बीच में इज़्ज़त केलिए जुडाया गया हैं मगर राम कहलानेवाली दो अक्षरों की नाम ही असली नाम है। इसलिए कुछ ज्ञानी जन कहते हैं कि राम शब्द को जब जब याद किया करलो क्योंकि राम कहलानेवाला दो अक्षरों का शब्द बहुत ही महत्व अर्थ को अपने अंदर रखती हैं। क्योंकि बडोंने कहा कुछ लोग बैठते समय उठते समय राम कहना आदत करलिये थे। पूर्व में इसतरह राम शब्द बहुत से लोग पुकारा करते थे। नवीन काल में पढाइयाँ ज़्यादा होजाकर जैसे विज्ञान बडते जारहा हैं पूर्व काल में जिसतरह राम

कहते थे वैसे अब कोई भी नहीं कह रहा हैं। इसमें विशेष यह है कि पूर्वकाल के पद्दती के प्रकार अगर कोई कहनेवाले होते हैं तो भी, वे राम कहलानेवाले दो अक्षर ही कहेंगें। लेकिन श्रीराम कहलानेवाला तीन अक्षर के शब्द को नहीं पुकारते। उत्तरभारत देश में बहुत से लोग प्रस्तुत काल में भी एक दूसरे से मुलाखात रखनेवाले अगर सामने आजायें तो वे रामराम कहते हैं (आप लोग इसको गौर कर सकते हैं) राम राम शब्द इसलिए इस्तेमाल किया जाता हैं कि सामने वाले इनसान को इज्ज़त देने के लिए। राजस्थान गुजरात रार्ष्टों की लोगों में रामराम कहना मुकम्मिल तरीके से नज़र आ रहा है। पूर्व काल से ऐसे अच्छी पद्दती को हमारे बडोंने आदत की हैं। राम शब्द की विशिष्टता ही ऐसी हैं। कबीर दास वगैरा ज्ञानियाँ भी राम शब्द को छोडे बगैर याद करते थे।

आज के ज़माने में कुछ हेतुवादियाँ ऐसा पूछ रहे हैं कि राम में क्या महत्वता है। राम दशरथ के बेटे की तरह पैदा होकर जायदाद के मामलों में जंगल को जाकर कई कष्ट उठाया था। सीता को खोकर पता न मालूम होते हुए कुछ संदर्भों में रोया भी था। सामाजिक न्याय से भी पेश न आते हुए बीवी को वह भी गर्भिणि स्त्रि को जंगल में छोडदिया। बाप कह कर मालूम होने से पहले राम को खुद के बेटों ने ही दूषणा किये थे। शोहर यानि राम सीता को वापिस घर आने के लिए कहा तो बीवी ही इनकार की थी । उसके खुद के ज़िदगी में ही कई तकलीफों का सामना किया हुआ राम किस में बडा हैं। जो विशिष्टता उन्हे ही नहीं है वह उनके नाम में कहाँ से आगया? इसतरह कुछ हेतुवादिया सवाल कर रहे हैं। क्या उन्हे आदर्श जोडी कहते हैं जिन्होंने अपनी जिंदगी में एक साल भर भी मिलकर संसार नहीं किया? क्या वह बडा है जिसने अपनी शीलवती बीवी की गुमान

कर के जंगल को भेजा। इसतरह कहनेवाले नास्तिक भी है कि वह तो ईश्वर ही नहीं हैं। इतना ही नहीं वह राम से भी हमारा राम ही बडा है कहनेवाले दक्षिण देश के द्राविड भी हैं। इसतरह से बात करने वाले सब लोगों को हम जवाब नहीं देसकते। क्योंकि बोलने के बावजूद भी उसे पूरा न सुननेवालों को, उल्टा बात करनेवालों को कोई भी जवाब नहीं देसकते।

हर इनसान में दूसरों के बारे में कहने में तीन तरह के भाव रहते हैं। तीनों को प्रपंच भाव कहते हैं। वह एक तटस्थ भाव, दो विमर्शा का भाव, तीसरा विश्वास का भाव। यह तीन भावों के प्रकार ही कोई भी इनसान हो दूसरे इनसान को हिसाब करता रहता हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि न विमर्शा करते हैं न विश्वास, कुछ न कहते हुये तटस्त रहते हैं। जिसका भाव उसे बडा दिखता हैं। इसलिए हमारा भाव उन्हे पसंद आसकता है, नहीं भी आसकता हैं। इसलिए मैं प्रपंच पद्दती के इन तीन भावों के प्रकार कुछ न कहते हुये, यह तीन भावों से अतीत रहनेवाले आध्यात्मिक भाव के प्रकार बताना चाहता हूँ। ऐसा इसलिए बताना चाहा कि! आध्यात्मिक भाव में न विमर्षा रहती हैं, न विश्वास, न तटस्त। आध्यात्मिक भाव सब केलिये समान होता हैं। यह भाव सब के संबंदित है, सब में समान है होने से श्रद्धा रखनेवाले को समझमें आसकता हैं। जिसे श्रद्धा नहीं हैं उसे समझमें नहीं आयेगा। अब हम इस उद्देश से बता रहे हैं कि जो आध्यात्मिक भाव को अब हम बताने जा रहे हैं उसे श्रद्धा रखके सब समझ करलेंगें। इसलिये श्रद्धा के साथ देखिये।

एक ऐसी रहस्य है जो दशरथ के पुत्र श्रिराम के प्रति विश्वास रखनेवाले राम भक्तों को, विश्वास न रखनेवाले नास्तिक, हेतुवादों

को मालूम नहीं। वह यह है कि! त्रैतायुग में के दशरथ राम से पहले ही कृतायुग में ही राम कहलानेवाला दो अक्षरों का शब्द हैं। राम से पहले ही राम कहनेवाला नाम रहना आश्चर्य ही हैं हेना! अब वह आश्चर्य कर विषय के बारे में मालूम करते हैं। राम कहलानेवाली दो अक्षरों की शब्द को लोगों को कृतायुग में के ज्ञानियाँ ही परिचय कराये थे। उस ज़माने में जब राम पैदा नहीं हुआ था तब ही **राम** कहलानेवाले दो शब्दों को आध्यात्मिक तौर पर विशेष अर्थ रहा करता था। **र** मतलब **नाश** है कहकर हमने पहले ही मालूम करलिये थे। दशरा पंडुगा के अंश में ही हम बताचुके थे कि **र** कहें या **रा** कहें दो भी एक ही बात है। सुबोधा ग्रंथ में जब **मम** के बारे में कहा था तब ही हमने यह बात बतादिया कि **म** यानि **मैं** या **मेरा** हैं, **मम** का मतलब **मेरा।** उसके प्रकार देखें तो राम शब्द में यह मतलब बसा हुआ हैं कि **मेरा** कहनेवाला शब्द नाश होना चाहिए। इसका मतलब यह हैं कि मैं कहलानेवाला जीव नाश होजाना चाहिए, यह वह दो अक्षरों के शब्द में मौजूद हैं। जीव नाश होगया तो ईश्वर की तरह बदलजासकता है। यानि ईश्वर में मिलजासकता हैं। राम शब्द में यह अर्थ बसा हुआ है कि एक जीव जन्म राहित्य को माँगते हुये, ईश्वर में ऐक्य होजाना चाहिये। उसी तरीके से बरताव करना चाहिये। जीव कभी भी हो ईश्वर में दाखिल होनेवाला ही हैं। जीव शब्द खत्म होजाकर ईश्वर शब्द की तरह बदलना ही पडेगा। इसीलिये भगवद्गीता में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में जीव को क्षर कहा हैं। क्षर का मतलब नाश होनेवाले के हैं। बडों ने ही यह आदत लोगों को डलवायि कि संदर्भ में हो या असंदर्भ में हो जब जब राम शब्द को पुकारें ताकि उससे मनुष्य को यह बात हमेशा याद रहें कि मैं ज़रुर नाश होनेवाला ही हूँ। पूर्व में सबको यह बात यानि राम शब्द का मतलब बहुत अच्छी

तरीके से मालूम होकर रहता था। मैं नाश होनेवाला हूँ कह कर सब में एक धृढ भाव सिर्फ राम कहलानेवाले दो अक्षरों के वजह से ही रहता था। भगवद्गीता में कही हुई क्षर भाव, यानि नाश भाव **र** से, मैं कहलानेवाली भाव **म** से हो रहा हैं। इसीलिए राम शब्द को ऐसी शब्द समझते थे कि जिस में परम पवित्र अर्थ बसा हुआ हैं। बडी अहमियत वाली राम शब्द को दशरथ के पुत्र की नामधेय की तरह रखलिये। उसदिन से लोगों में आध्यात्मिक ज्ञान कम होजाने से राम का शब्द दो अक्षरवाली श्रीराम में यानि तीन अक्षरों में बदलजानेसे सब लोगों में यह भाव ही रहगया कि दशरथ पुत्र से ही राम का शब्द आया हैं, राम बोले तो दशरथ राम ही कह कर लोग समझ बैठें। वही भाव आज तक बाक़ी हैं।

रामदास ने ऐसा समझलिया कि राम बोले तो दशरथ का पुत्र ही है तो,रामदास से बडा कबीरदास जिस राम की ज़िकर वह करता था उसे वह दशरथ राम नहीं समझता था। इसलिये ही वह एक संदर्भ में जब उसे दशरथ राम दिखने पर उसने कहा कि तु मेरा राम नहीं हैं जा! कबीर ने ऐसा कहा कि मैं जिस राम को याद कर रहा हूँ वह तुम नहीं हो (कबीर ने इसतरह कहा मतलब कबीर पूर्व का ज्ञान आध्यात्मिक के प्रकार जानता था। रामदास को आध्यात्मिक मालूम न होने से, उसने ऐसा समझा कि राम शब्द को श्रीराम कहनेवाला नाम समझा। एक रामदास ही नहीं, उस ज़माने के त्रैतायुग से लेकर ऐसे कई लोग है जिन्होने दशरथ राम को ही असली राम समझे। वैसे सब लोग श्रीराम पर भक्ति से श्रीराम नवमी को पंडुगा की तरह मना रहे हैं। श्रीराम नवमी आज पूरे भारतदेश में आचरण करनेवाली पंडुगा की तरह हैं। ईश्वर के पास पहुंचने केलिए पहला स्टेप भक्ति है भक्ति को श्रीराम पर बढालेकर श्रीराम नवमी मनाने से

भक्ति में परिपक्वता पाये हुये होकर आखिर में राम शब्द की मतलब समझ में आजायेगी। इसलिये श्रीराम पर भक्ति से तो कम से कम जब जब राम कहने की आदत करलिए तो अच्छा हैं। ऐसे आदत करलेने से आखिर में एक न एक दिन ज़रुर राम शब्द की अर्थ को समझने का मौका मिलेगा। रामा कह कर किसी न किसी रुप से नही समझे तो वह दो अक्षरों के भाव को मालूम होने का मौका तक नहीं है ना! इसलिए बडों ने कहा कि राम पर भक्ति से हो या गुस्से से हो कैसे भी हो हर हमेशा रामा शब्द को पुकारना बेहतर हैं।

राम कहें या वही शब्द को घुमा कर **मरा** कहें दोनों का अर्थ एक ही है। इसलिए नारद महर्षी वाल्मीकि से पहले **मरा** शब्द की मंत्र की ही बोधा की । वाल्मीकि को नारद, दशरथराम पैदा होने से पहले **मरा** शब्द की मंत्र की उपदेश किया था। वही **मरा** शब्द की उच्चारण करते हुये वाल्मीकि कई साल कढी तपस्या की, मरा शब्द की उच्चारण करते हुये कई संवत्सर ऐसे ही रहजानेसे जिस जगह पर वह बैठा था वहीं पर (चुंमटी का घर जैसा) मिट्टी बढगई उसीको तेलुगु भाषा में पुट्टा कहते हैं। इसतरह का पुट्टे को वल्मीकम् कहते हैं। बहुत वक्त के बाद वह पुट्टे से बाहर आया है होने से उसे वाल्मीकि कहा हैं। वाल्मीकि को आदिकवि कहा है मतलब आप खुद सोचिए कि वह कितने पहलेवाला है। राम शब्द का अर्थ जाना हुआ वाल्मीकि उस नामवाले राम के चरित्र को यानि रामायण को लिखपाया हैं। रामायण से पहले भी कुछ चरित्राएँ हैं जिसे कवियों ने लिखा हैं, इससे यह मालूम होता हैं कि वाल्मीकि आदिकवि है इसलिए यह बात आसानी से मालूम हो रहा हैं कि वह राम से भी बहुत पहले वाला हैं। वह वाल्मीकि जिसने हजारों साल जिंदा था उसने बुढापे में राम के चरित्र को रामायण की तरह लिखा हैं।

त्रैतायुग से प्राचुर्य में आई हुई श्रीराम नवमी पंडुगा को आचरण करने से, राम शब्द पुकारने से, जिन्हे आध्यात्मिक मालूम नही उन्हे भी कभी न कभी तो मालूम करलेने का मौका आयेगा। यह भी मालूम होगा कि राम शब्द बहुत ही पवित्र हैं। इसलिये श्रीराम नवमी को त्योहार की तरह करनेवाले सब उसदिन नये कपडे पहन कर, नया आहार खानाही नहीं बल्की नये ज्ञान को मालूम करने की कोशीश करनी चाहिए। श्रीराम नवमी के दिन चने की दाल, पानक को प्रसाद की तरह बाटलेना ही नहीं बल्कि **ज्ञान के बारे में, योग के बारे में** प्रवचन बोल लेना चाहिए। इसतरह उधर बाहर के दशरथ राम की आराधना कर के तो अंदर के **आत्मा राम** के बारे में मालूम करने की कोशीश करनी चाहिए। हम यह बता रहे हैं कि अब से उत्तरायण में आनेवाले श्रीराम नवमी को अर्थ के साथ आचरण करके सही ज्ञान फलित पाना चाहिए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमि

ईस्वी के पूर्व ३२२८ साल जुलाई महीना १९ के तारीक बहुल अष्टमी के दिन वृषभ लग्न में श्रीकृष्ण पैदाहुआ। इसके मुताबिक यह मालूम हो रहा हैं कि अब से ५२३८ साल के पूर्व श्रीकृष्ण ज़मीन पर पैदा हुये थे। हमने बयान करलिया था ना कि अगर समझ करलिए तो उनकी ज़िंदगी ही बडी ज्ञान संदेश हैं। उसके प्रकार उनके जन्म में भी बहुत ही ज्ञान बसा हुआ हैं कह सकते हैं। एक विशेषता तो यह है कि कृष्ण जब पैदा हुआ था तब पहले पैर बाहर आये थे और वह अष्टमी का दिन भी विशेषता पाई थी जिसमें कृष्ण पैदा हुआ था। कृष्ण की जन्माष्टमी की विशेषता देखें तो वह इसतरह

मालूम होता हैं कि सर्वसाधारण से कुछ भी ज्ञान न जानने वाले लोग भी कहते हैं कि अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट है और अष्टमी, नवमी के दिन भी काम भी नहीं करते। चंद काम शुरु करने से पहले ही देखलेते हैं कि ये दो तिथियाँ न रहें। हमने कुछ लोगों से पूछा कि अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट है कहने में आप का क्या राय हैं तो वे इसतरह कह रहे हैं कि अगर अष्टमी के दिन काम शुरु किये तो उसदिन वह काम बडी महनत से होती है। ऐसा ही अगर नवमी के दिन शुरु किये तो वह काम नष्ट के साथ जुडा हुआ होता हैं। इसतरह उनके बातों से यह मालूम हो रहा हैं कि यह ज्योतिश्य शास्त्र के प्रकार होनेवाली चीज़ नहीं है। ज्योतिश्य शास्त्र में ऐसा कोई सूत्र ही नहीं हैं। फिर भी पूर्वकाल में यह बात बहुत ही प्रचार में रहता था। तक़रीबन पचास साल के नीचे तक अष्टमी नवमी कहलानेवाले बातें वहाँ वहाँ सुनाई देते थे। प्रस्तुत नवीन काल में वह बात भी सुनाई नहीं दे रही हैं। अबके पढाइयाँ पढने वाले बच्चों को तो यह भी नहीं मालूम कि आखिर तिथी क्या चीज़ है। आज भी कई गाँवों में ऐसा कहना हम देख सकते हैं कि आज अष्टमी है, अष्टमी के दिन सफर क्यों कर रहे हो, अब तक (इंतेज़ार करके) जा जाकर अष्टमी के दिन ही क्यों शुरु कर रहे हो, इसके मुताबिक अष्टमी,नवमी दोनों तिथियों में से नवमी हवे में चलदिया। समझ में यह आरहा हैं कि सिर्फ अष्टमी बचकर हैं। ऐसा लग रहा हैं कि गाँव के प्रांतो में कहीं एक जगह अबतक बचीहुई चीज़ अष्टमी भी दस सालों के बाद खत्म होजायेगी। अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट कह कर रहा करता था हमारी इस बात के आधार के लिये अबतक भी अष्टमी बाक़ी हैं। कालगमन में कई चीज़े खत्म होगये हैं। फिर भी हमारा इरादा यह है कि ज्ञान की क़ीमत को बढानेवाले बातें कभी भी खत्म नही होना

चाहये। इसलिये आखिर अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट है यह बात को बडोंने क्यों अमल में लाये? और कब से लाये? चलिये, इन सवालों के जवाब ढूँढते हैं।

अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट है, यह वाक्य श्रीकृष्ण पैदा न होने से पहले नही था। कृष्ण पैदा होने के बाद ९० साल तो भगवद्गीता को बताया था। भगवद्गीता को बताने के बाद यह विषय कुछ लोगों को मालूम हुआ कि कृष्ण महान है। जिस दिन कृष्ण पैदा हुआ था तबसे उसदिन को गोकुल में, मधुरा में त्योहार की तरह मनाना शुरु हुआ था। भगवद्गीता युद्ध रंग में कही गई थि। भारत युद्ध ईसाई पूर्व ३१३८ संवत्सर में हुआ था। इसके मुताबिक भगवद्गीता पैदा होकर अब तक ५१४८ संवत्सर हुये थे। भगवद्गीता पैदा होने के बाद कुछ ज्ञानियाँ यह पहचान लिये कि वह सामान्य मानव नहीं था। जब से श्रीकृष्ण जयंती करना शुरु किये थे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमि इसतरह बनी थि। जब से श्रावण मास बहुल अष्टमी के दिन बडी त्योहार की तरह किया करते थे। इसतरह वे लोग जो दैवज्ञान को रखते हैं उन्होंने शुरु की हुई श्रीकृष्ण अष्टमी थोडे वक्त के बाद पूरे देश में सबलोग करना शुरु किये थे। भगवद्गीता बताने के बाद कृष्ण ३६ संवत्सरों को मरगया। जब कृष्ण सजीव से था तब ही कृष्ण जयंति को कृष्णाष्टमी की तरह करना हुआ। द्वापर युग में ही कृष्णाष्टमी त्योहार की तरह तयार हुई।

कृष्ण मरने के दो साल के बाद ही कलियुग शुरु हुआ ०था। कलियुग के शुरुआत में पूरे देश में मुख्यत्योहार की तरह कृष्णाष्टमी होता था। कलियुग में कृष्णाष्टमी पूरे देश में ही पाँच छे सौ साल तक उत्सव की तरह होता था। जब से माया के प्रभाव से धीरे धीरे

कृष्णाष्टमी त्योहार करना एक एक जन मना करते हुये आगये। इसतरह चार या पाँच सौ सालों को कृष्णाष्टमी करना ९० फीसद बंदकरदिये। आखिर थोडे वक्त को केवल ५ फीसद लोग ही वह भी मधुर, गोकुल नंदगाव के नज़दीक प्राँतों में करना, गाय चरानेवाले ही किया करते थे। गाय चरानेवालों के गल्लियों में कृष्ण ने छोटे उमर में किये हुये माखन की चोरी को याद दिलाने के लिये हंडी को पोढना वगैरा कार्य भी त्योहार के वातावरण में अभी भी कर रहे हैं। कलियुग के प्ररंभ में बहुत ही बडे धूम धाम से मनाये जानेवाली कृष्णाष्टमी त्योहार आज सिर्फ निशानी के तौर पर बच कर है। ऐसी हालत न आने के लिये बडों ने एक प्रयोग किया। वह प्रयोग ही अष्टमि कष्ट है,नवमी नष्ट यह बात हैं। कुछ लोगों को यह समझ में नहीं आसकता है कि आखिर इसतरह के शब्द बडोनें बनायें क्यों? अब हम उस उद्धेश्य को देखते हैं जिस उद्धेश्य से उसज़माने के बडों ने इस वाक्य को बनाया था।

पूर्व में कृष्ण मधुरानगर में अष्टमी के दिन पैदा हुआ था। दूसरे दिन नंदगाँव में दिखा। जिस दिन वह पैदा हुआ था उसी दिन ही वसुदेव ने रहस्य से कृष्ण को मधुरा नगर से सैडवाले नंदगाँव को पहुँचाया। इसलिये दूसरे दिन यानि सुबह होने के बाद कृष्ण यशोदा को पैदा हुआ कहकर वह गाँव पूरा मालूम होगया। कृष्ण अष्टमी के दिन के रात के वक्त जब कृष्ण पैदा हुये थे, सुबह होने के बाद तिथी नवमी आयी थि। नवमी के दिन चरवाहों (ग्वालों) को कृष्ण के जनम के बारे में मालूम हुआ था। नवमी के दिन नंदगाँव में मालूम हुआ। मधुरा में कृष्ण अष्टमी के दिन पैदाहुआ था। कृष्ण की पैदाइश अष्टमी के दिन हुआ, इसलिए वे लोग जिन्हे आत्मज्ञान मालूम था श्रावण बहुल अष्टमि के दिन कृष्णाष्टमी नाम से किया करते थे। नंदगाँव में

सब गाय चराने वाले अपने गावों में नवमी के दिन गोकुलाष्टमि के नाम से नवमि के दिन उत्सव किया करते थे क्योंकि उन्हे कृष्ण नवमी के दिन दिखा इसलिये वे ऐसा किये थे। वे जाति पर अभिमान से गोकुलाष्टमी के नाम से त्योहार मनाया करते थे ताकि अपना नाम चरित्र में रहजाए। आज भी श्रीकृष्णाष्टमि, गोकुलाष्टमि दोनों नामों से अष्टमी,नवमी दो दिन भी त्योहार मनाये जा रहे हैं। अष्टमी के दिन ज्ञानियाँ जो करते हैं वह कृष्णाष्टमी है, नवमी के दिन गोकुल के वंश के लोग आज के ज़माने में उन्हे यादव कहते हैं वे लोग खास कर के गोकुलाष्टमी करना हो रहा हैं।कृष्ण की पैदाइश अष्टमी के दिन ही है फिर भी कृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी दोनों नामों से अष्टमी के दिन नवमी के दिन त्योहार मना रहे हैं।

कृष्ण जयंति को नवमी के दिन करने पर भी उसका नाम गोकुलाष्टमी कह कर अष्टमी में ही मालूम हो रहा हैं यानि साफ दिख रहा हैं। इसलिये श्रीकृष्ण का जन्म उत्सव अष्टमी,नवमी दोनों दिन करना आनंद दायक काम समझ सकते हैं। कलियुग के पहले ही पूरे देशमें कृष्णाष्टमी,गोकुलाष्टमी दो दिन हुआ करते थे। वे दो दिन सब लोग अपने अपने कामों को रोक कर उत्सव किया करते थे। उन दिनों में किसी को भी काम में नही भेजा करते थे। अगर काम होतो कृष्ण के उत्सव में शामिल नहीं होंगें समझ कर सब कामों को छोडदेते थे। उन दिनों में किसी को भी, किसी भी तरह का काम केलिये अच्छा मुहुर्त रहता है तो उसे किये बगैर छोडदिये जैसा,और कोई भी किसी भी काम के तरफ जाये बगैर बडों ने एक डर रख्खा था। अगर अष्टमी के दिन कोई भी काम किये तो उसमें तकलीफ उठानी पडेगी, वह काम ठीक से नहीं होगा कहकर लोगों में डर पैदाकिया। ऐसा ही नवमी के दिन काम शुरु किये तो उससे ज्यादा

नष्ट आयेगा कहकर डर रखे थे। कृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी ठीक तरह से होने केलिये, सब शामिल होने का मौका रहे जैसा इसतरह से बोल के डर को रखवाके, वह दो दिन काम को मना करवाये। अष्टमी कष्ट नवमी नष्ट इस बात का प्रयोग कर के उसे इस्तेमाल कर के लोगों में प्रचार किया ताकि कम से कम इस डर से तो सब लोग त्योहार में शामिल होंगे। उसदिन उन्होने जो किया वह उद्देश अच्छा उद्देश ही था फिर भी अष्टमी कष्ट नवमी नष्ट यह बात आज किसी को भी मालूम नहीं। यह बात मालूम हुये बगैर जाना ही नहीं बल्की कृष्णाष्टमी करनेवाले भी ९० फीसद कम होगये।

हमने यह बयान करलिया ना कि हम कृष्ण जयंती को करें या न करें वह अष्टमी के दिन ही क्यों पैदा हुआ इस बात पर गौर करें तो बहुत ही ज्ञान मालूम होता है ।उसके बारे में तफसील के साथ बयान करलिये तो इसतरह से हैं। अमावास्या से पौर्णमी तक १५ दिन है, ऐसा ही पौर्णमी से अमावास्या तक १५ दिन हैं यह बात तो सबको मालूम हैं। श्रीकृष्ण पौर्णमी से अमावास्या तक १५ दिनों में रहनेवाले बीच में के अष्टमी के दिन वह पैदा हुआ था । १५ दिनों में पाड्यमी से सप्तमी तक ७ दिन, बीच में अष्टमी, बाद में नवमी से अमावास्या तक ७ दिन हैं। ७+१+७=१५पंद्रह को दो समान भाग करना चाहे तो ७ और ७ दिनों की तरह डिवैड करे तो शेष में १ बचता हैं। उस एक दिन को अष्टमी की तरह समझे, यह याद रखलें कि उसके पहले ७ दिन है और बाद में ७ दिन हैं। श्री कृष्ण बीचमें वाली अष्टमी को ही पैदा होने में एक विशेष अर्थ हैं।वह यह है कि!

भगवान श्रीकृष्ण ज्ञान के अज्ञान के बीच संधी जैसे हैं। वह ज्ञान से अज्ञान के ओर, अज्ञान से ज्ञान के ओर भेजनेवाला केंद्र हैं।

कई बडे ज्ञानियाँ सहित श्रीकृष्ण ने अपने ज़िदगी में चले हुये तरीकों के मुताबिक उनके आचरण को देख कर, ऐसा कह रहे हैं कि कृष्ण ने जो गीता बतायी थी वह अच्छी तो है मगर उनका आचरण ही हमें पसंद नहीं आया। बरताव मुख्य है ना!अगर कोई अमल कर रहा है मतलब वह उसके अंदर के गुणों से ही तो अमल करता है ना, वह कितना भी महत्व ज्ञान बतायें लेकिन श्रीकृष्ण के कामों को देखें तो ऐसा नहीं लगता कि जितनी महत्व बोधा उसने बतायी है उतना महान वह नहीं हैं। इसका मतलब यह हैं कि ऐसे लोग ज्ञान से कृष्ण के द्वारा अज्ञान में चलेगये जैसा ही है । उनका ज्ञान पूरा निष्प्रयोजन ही हैं। इसका मतलब उन्होने श्रीकृष्ण ने जो कहा उसे समझ नहीं पाये। ऐसी सूरत में श्रीकृष्ण ने जो असली ज्ञान कहा हैं वह अलग तरीके से समझमें आने से वह ज्ञान उसके प्रवर्तन से भिन्न लगने से वे श्रीकृष्ण को भिन्न जासकते हैं। जब श्रीकृष्ण ज्ञान का केंद्र हैं तो, उनके भिन्न (व्यतिरेक) जानेवाले को देखके ऐसा समझना चाहिये कि वे अज्ञान के तरफ ही जारहे हैं। ऐसा ही जो लोग श्रीकृष्ण को देख कर इसतरह समझते हैं कि वह जो भी कर रहा हैं,कह रहा हैं,करवारहा है वह सब एक ही है इसतरह समझनेवाले ज्ञान में आगे बढते हैं। उनको देख कर जिस जगह पर है वहाँ से कुछ लोग ज्ञान मार्ग में,कुछ लोग अज्ञान मार्ग में जा रहे हैं। इसलिये उसने अष्टमी के दिन को चुनलेकर इसलिये पैदा हुआ था कि इससे यह बात लोगों को मालूम होजाये कि श्रीकृष्ण इधर ज्ञान के उधर अज्ञान के बीच में रहनेवाला हैं। अब कुछ लोगों में यह संशय आसकता हैं कि श्रीकृष्ण बहुलपक्ष अष्टमी के दिन ही क्यों पैदा होना चाहिये?क्यों वह शुक्ल पक्ष अष्टमी के दिन पैदा नहीं हुआ? इसका कारण क्या होसकता हैं?उसके लिये हमारा जवाब यह है कि!
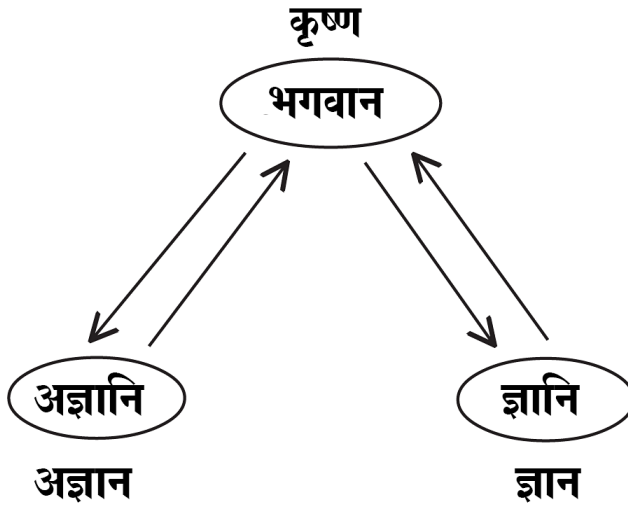
ज्ञानबोधाओं में ऐसे कई संदर्भ है जिसमें चाँद को ज्ञान की चिह्न बताये थे। गीता के अक्षर परब्रह्म योग में २५ श्लोक में अगर योगियों को दूसरा जन्म है तो ज्ञान की विकास के साथ पैदाहोंगें कहते हुये चाँद्रमसम ज्योतिः यानि चंद्रतेजस के साथ पैदा होंगें कह कर ज्ञानविकास को चाँद की चाँदनी के साथ कम्पार करके कहा हैं। इसलिये रोशिनि वाली पौर्णमी को ज्ञान की तरह, अंधेरी आमावास्या को अज्ञान की तरह आसानी से कम्पार करले सकते हैं। ज्ञानस्वरुप परमात्मा अज्ञानवाली प्रपंच में आकर भगवान की तरह पैदा हुआ हैं। इसलिये ज्ञान चिह्न पौर्णमी से अंधेरा होजाते हुये आखिर में अमावास्य में बदलनेवाली बहुल पक्षमी में पैदाहुआ। इसतरह बीचमें अष्टमी के दिन इसलिये पैदा हुआ ताकि यह बात किसी को मालूम न हो कि वह ज्ञानि है या अज्ञानी और वह उसदिन पैदा होके यह बताना चा रहा हैं कि ज्ञान, अज्ञान दो भी मुझ में ही हैं, ज्ञान का और अज्ञान का द्वार भी मैं ही हूँ। पौर्णमी खत्म होजाने के बाद आनेवाले अष्टमी के

दिन पैदा हुआ। इसलिये यह जानलें कि ज्ञान प्रकाश या ज्योती परंधाम से अज्ञान अंधकार प्रपंच में आया हैं। इसतरह जिस दिन वह पैदा हुआ उसदिन में बहुत ही विशेष अर्थ बसा हुआ हैं। इसलिये उनके पैदा हुये दिन को महा पर्वदिन समझकर, उस दिन को श्रीकृष्णाष्टमी नाम रख के पूजा करले रहे हैं।

अगर ऐसा कहें तो क्या कोई भी यह बात को यकीन कर सकता है कि जो इस सर्व सृष्टी का आधार हैं, तमाम देवतायें जिसे ईश्वर मान कर सजदा कर रहे हैं, हर जगह फैलकर सबको नज़र न आते हुये जो ताकत बसी हुई है वह ताकत, क्षण क्षण गुजरता हुआ काल होकर, सबका आयु,आरोग्य होकर, मरण होकर जो है वह, यानि वह ईश्वर ही कृष्ण जैसा पैदा होकर, इनसान की तरह हिला हुआ यानी हरकत किया हुआ एक व्यक्ति हैं? शायद कोई यकीन नहीं करेगा लगता है। यह सवाल ज़रुर पैदा होगा कि क्या इतना महान ईश्वर (छोटा) इनसान जैसा कैसे पैदा होसकता है? यहाँ पर एक छोटा मिसाल बयान करलेते हैं। समुद्र सकल भूमंडल से टच होकर हैं। वह बडी विशाल है,उसमें बेहिसाब प्राणियाँ मौजूद हैं। अगर ऐसा कहें तो क्या कोई इस बात का यकीन करेगा कि वह समुंदर जिसके बगैर भूमी (जमीन) की कोई लैफ ही नही है वह तेरे घर में यानि तेरे शरीर में है। जिस तरह यह बात यकीन नहीं करसकते कि ईश्वर ही कृष्ण है उसी तरह यह बात भी यकीन नहीं करसकते कि समुंदर तेरे घर में ही है। उतना बडा ईश्वर इतना छोटा इनसान कैसे होसकता हैं? जिस तरह हम यह बात यकीन नही करते उसी तरह हम यह बात भी यकीन नहीं करते हैं कि क्या इतने छोटे घर में उतना बडा समुंदर है!! फिर भी विवरण करके देखे ं तो यह बात सच है कि ईश्वर इनसान में ही है, ऐसा ही यह बात भी सच ही है कि

समुंदर घर में हैं। असाध्य को सुसाध्य करनेवाली वह विवरण क्या है अब हम देखते हैं।

पानी समुंदर में है। पूरे समुंदर में भरा हुआ पानी के कुछ धर्म हैं। ऐसा ही विश्व में ईश्वर हैं। पूरे विश्व में फैला हुआ ईश्वर के कुछ धर्म हैं। कई बेहिसाब पानी के बूंदों के मिलन ही पूरे समुंदर में भरा हुआ पानी हैं। ऐसा ही कई दैव अंशों का मिलन ही ईश्वर हैं। पूरे समुंदर में के पानी को जो धरम है, वही धरम पानी के बूंद को भी हैं। इसीतरह पूरे विश्व में भरा हुआ ईश्वर को जो धरम है वही धरम दैव अंश को भी हैं। समुंदर में के अखंड पानी को जो धरम है,वही धरम खंड पानी के बूंद में भी है। ऐसा ही विश्व में अखंड ईश्वर को जो धरम है,वही धरम खंडवाले ईश्वर को भी है। गौर करनेवाली बात यह है कि अखंडवाली पानी को समुंदर कहते हैं। समुंदर में से खंड होकर बाहर आया हुआ एक पानी के ड्राप को पानी का बूंद कह रहे हैं। ऐसा ही अखंड से सब जगह फैला हुआ दैवशक्ति को ईश्वर कह रहे हैं। ईश्वर से अलग अलग खंड की सूरत में रहनेवाले एक अंश को भगवान कह रहे हैं। जिसतरह समुंदर,पानी का बूंद एक ही धरम रखता हैं उसी तरह दैव (ईश्वर) को भगवान को एक ही धरम हैं। यह फन्डमेंटल धरम है कि ईश्वर के धरम ईश्वर ही जानता है,ईश्वर को ही इनसानों को बताना पडेगा। भगवान भी यही धरम रखता है। इसलिये ईश्वर के धरमों के बारे में भगवान भी जानता है। ऐसा ही ईश्वर ही इनसान को अपने बारे में बताना चाहिये यह धरम के प्रकार भगवान ही इनसानों को मालूम करवायेगा यानि ईश्वर के बारे में बतायेगा। यह उपमान के प्रकार कोई भी हो इस बात पर विश्वास रखता है कि ईश्वर ही भगवान कहलानेवाले एक इनसान के सूरत में आयेगा। ईश्वर और भगवान दोनों एक ही है। फिर भी जिस हालत में

वह है उसके प्रकार जब वह अपरिमित रहता है तब उसे ईश्वर कहते हैं, जब वह परिमित रहता है तब उसे भगवान कहरहे हैं।

अपरिमित ईश्वर परिमितवाली शरीर में,निराकार ईश्वर आकार वाले शरीर में, बिना नाम वाला ईश्वर नामवाले शरीर में, किसी भी तरह का काम न करनेवाला ईश्वर काम करनेवाले शरीर में जब आता हैं तो उस शरीर को भगवान कह रहे हैं। ईश्वर की अंश शरीर धारी होकर श्रीकृष्ण की तरह आया हैं। वही भगवान श्रीकृष्ण है। इतना बडा ईश्वर मानवाकार में आयाहुआ वह समय बहुत ही पवित्र है, इसीलिये उसे महत्व जान कर भगवान की जन्मदिन को पंडुगा की तरह मनालेरहे हैं। वह कुछ लोगों केलिये कृष्णाष्टमी है तो, कुछ लोगों केलिये गोकुलाष्टमी हैं। वह कृष्ण जयंति जो सब लोग कलियुग के आरंभ में किया करते थे वह आज खत्म होते चले जा रही है। माया ईश्वर के व्यतिरिक्त है। माया मानव में रहते हुये ऐसा कर रही है कि ईश्वर के ओर मानव न जाये। ऐसा करने के लिये जो ज़रुरी इंतेजाम चाहिये उन सबको माया तय्यार कर के रख रही हैं। माया करनेवाले कामों मे से एक काम यह है कि कृष्णाष्टमी को न रहे जैसा करना भी एक काम ही है। इसीलिये पूर्व में बडों ने जो कहावत के सूरत में कहा था कि अष्टमी कष्ट है नवमी नष्ट है वह आज के जामाने में किसी को मालूम न हुये जैसा की है। यह बात किसी को भी मालूम न होने के कारण कृष्ण जयंति का खयाल किसी में नही है। माया के प्रभाव के कारण मनुष्य भगवान को ज़रा भी पहचान नहीं पाये। उन्हे साधारण इनसानों से भी कम समझलिये। माया इनसानों के सर में गुणों के रुपमे रहते हुये, ऐसा कर रही है कि इनसान ईश्वर के तरफ न जाये। तो ऐसा करने केलिये माया का प्लान यह है कि इनसान को इसतरह यकीन

दिलाना होगा कि जिस रास्ते में वह जा रहा है वही सही ईश्वर का रास्ता है इसतरह का बहकाव में लाकर उसे गलत रास्ते में भेजना होगा। इस प्लान का हिस्सा हि कृष्णाष्टमी के बदले उसके जगह और एक पंडुगा लाकर रखके, उसने ऐसा किया कि सब की नज़र उस पर गिरे। जैसे ईश्वर ने कहा वैसे माया की ताकत बहुत ही ज्यादा है। इसलिये कृष्णाष्टमी के बदले में उसके जगह अपनी त्योहार को लाकर रख दी और ऐसा किया कि छोटे बडे सब उसमें शामिल हो।

पूर्व में कृष्णाष्टमी को ग्यारा दिन की त्योहार की तरह किया करते थे। कृष्णाष्टमी वह त्योहार नहीं है जिसे घर के अंदर किया जाये। पूर्व में सब लोग गल्लियों में ही किया करते थे। गल्लियों में ही उट्ला का खेल खेलते थे। गल्लियों में ही मरद गोपिकाओं की तरह औरत का भेष डालकर मलाई के चोरों की तरह आते हैं तो उन्हे औरतें सूपों से, लकडियों से मारते थे। औरतों के भेष में रहनेवाले मरदों को औरतें मारना भी उत्सव में एक हिस्सा ही हैं। गल्लियों में ही मंडप को बाँध कर,वह मंडप में प्रतिमा को रखके ,ग्यारह दिन पूजा करते थे।गल्लि में के मंडप में ही कृष्णलीलाओं का प्रदर्शन करते हुये उट्लों का खेल,माखनचोर का खेल वगैरा खेलते हुये संतोश के साथ ग्यारह दिन उत्सव कर के, आखरी ग्यारवी दिन यानि चविति के दिन मंडप में के कृष्णप्रतिमा की ऊरेगिंपु (जल्सा) कर के,वह प्रतिमा को घर में रखले कर उत्सव को खत्म किया करते थे। यह बात जान लें कि देश में सबसे पहला गल्लियों में मनाये जानेवाला उत्सव कृष्णाष्टमी ही था। कृष्णाष्टमी से पहले किसी भी तरह के उत्सव गल्लियों में मनाये नहीं जाते थे । बाद में माया के प्रभाव से एक एक उत्सव तय्यार हो गये। उनमें से विनायक चविति पहले का है तो, बाद में दुर्गाष्टमी दूसरा हैं। विशेष बात यह है कि कृष्ण की त्योहार

अष्टमी तिथी के नाम से है तो, उसके प्रत्याम्नय में तिथियों के नामों से ही विनायक चविति, दुर्गाष्टमी के नाम से गल्लियों के उत्सव तय्यार हुये।

कृष्णाष्टमी के बदले में पहले तयार हुई त्योहार विनायक चविति है तो, बाद में हाल ही में दुर्गा देवी का त्योहार भी गल्लियों में मनानेवाली त्योहार बनगई। दुर्गा देवी की त्योहार को पूर्व में भक्ति के साथ गृहों में ही नौ दिन किया करते थे। दुर्गा देवी को एक एक दिन एक एक अलंकार के साथ पूजा करना सांप्रदाय के साथ जुडा हुआ काम है कहसकते हैं। आज भी दुर्गा देवी की त्योहार यानि दशरा को सांप्रदाय से जुडी हुई त्योहार कह सकते हैं। लेकिन विनायक चविति को बिना सांप्रदायवाली त्योहार कह सकते हैं। तो अब यह सवाल पैदा होगा कि जो त्योहार हमारी सांप्रदाय ही नहीं है वह हमारे बीच में आखिर आई कैसे? इस बात पर गौर करें तो मालूम हो रहा हैं कि उसकेलिए थोडा विवरण हैं। हमने पहले ही बतादिया ना कि अष्टमी हो, चविति हो तिथियों के नाम हैं! पूर्व में वे बडे लोग जो इंदू धरम को जानते थे ज्योतिश्य शास्त्र के तिथियों को लेकर, एक एक तिथी को एक एक विषय का प्रबल्य जोडकर, उस तिथी के दिन उस विषय को बडी अहमियत मिले जैसा किये थे। उसके प्रकार चविति के दिन वह विषय को प्राधान्यता दिये जो समाज से संबंदित हैं। ऐसा ही सप्तमी योग को, अष्टमी मोक्ष को, दशमि एकादशि दो तिथियाँ भक्ति को, ज्ञान को और अमावास्या,पौर्णमी यह दो परमात्मा के विषय को प्रधान्यता देते हैं। इसतरह फैसला करदिया। इसलिए चविति के दिन मनाये जाने वाले त्योहार नागुल चविति, विनायक चविति दो भी समाज के भलाई के विषय को बताने के लिए इंतेज़ाम किया। यदि हम पहले नागुलचविति के बारें में बयान करलिये तो, फिर वही विधान के

प्रकार विनायक चविति भी समझ में आसकती हैं। जब ज्ञान में और माया के बीच फरख जानने केलिए विनायक चविति के बारे में पहले मालूम होकर रहना चाहिए। विनायक चविति के बारे में सच बताने के बावजूद भी माया के प्रभाव से उसे गलत समझने का मौका हैं। इस्लिए वह समाज श्रेयस से किस तरह संबंदित हैं यह जानने के लिए पहले नागुलचविति के बारें में जानना ज़रुरी हैं। आख़िर क्यों बडों ने नागुलचविति को लोगों के बीच में रखा था इसके बारे में अब हम बयान करलेते हैं। यह सब बताने से पहले और एक बात को पहले ही बतानी है। वह यह है कि! नागुलचविति प्रजाओं के श्रेयस(भलाई) के लिए रखी गई त्योहार है, फिर भी बडों की महनत मिट्टी में मिलजाकर वह श्रेयस प्रजाओं को नहीं मिल रही हैं। ऐसा ही विनायक चविति को भी बडों ने योचना कर के हमें दिखाने पर भी, मनुष्य उस फलित का श्रेयस को नहीं पा सक रहे हैं। इतना ही नहीं ऊपर से कह रहे हैं कि यह सब मनाने वाले गुमराह यानि गलत रास्ता पकडलिए। जब तक हम ये दो चवितियों के बारें में बयान नहीं करलेते तब तक कृष्णाष्टमी की अहमियत हमें मालूम नहीं होती। इसलिए यहाँ नागुलचविति और विनायक चविति के बारे में बोलना पडा।

नाग चतुर्थि

नाग चतुर्थी के बारे में बता रहे हैं, देखिये। हमने पहले ही बतादिया कि यह समाज के श्रेयस केलिये हैं। इसलिये यह सब समाचार पढनेवाले तुम को भी काम आति हैं। इसलिये श्रध्दा से गौर कीजिये। नाग का मतलब सॉंप हैं, चतुर्थी मतलब चार के हैं। नाग

चतुर्थी यानि साँपों से पूरी सुरक्षा पाना। अपाय से बाहरगिरने को ही श्रेयस कहते हैं। अगर साँपों के कटाव से कोई भी बाहर आगया तो उसका मतलब यही हु आना कि वह अपाय या प्रमाद से बाहर आगया है। इसतरह बाहर पडने का एक विधान हैं। इसलिये हम यह कह रहे हैं कि नाग चतुर्थी समाज श्रेयस के बारे में बतानेवाली प्रक्रिया हैं। ज़मीन पर ८० जातियों के साँपें हैं। सब ज़ात के साँपों को विष (ज़हर) नहीं रहता। सिर्फ पंद्रह जातों में विष रहता हैं। उनमें नाग साँप जाति एक हैं।

ज़हर रखनेवाले बाक़ी जातों के साँपों में से भी नाग जाति को ही मनुष्य को जल्दी से मारडालने का विष प्रभाव हैं। इसीलिये पूर्व के वैद्य पंडितों ने ऐसा समझा कि अगर एक नाग साँप विष का तोड की वैद्य को बतादिये तो सब जातियों के वैद्य के बारे में बतादिये जैसा ही हैं। पूर्व में ज्यादा तर प्रकृति सिद्ध मूलिका वैद्य रहा करता था। उन्होने फैसला करलिया कि साँप के विष को तोडने के मूलिकाओं को हर गाँव में भी बढाना चाहिये। उस प्लान के मुताबिक ही हर गाँव में पहले नीम के पेड को, उसके सैड में पीपल पेड को बोया था। उनके सामने नाग साँपों के प्रतिमाओं को रखे थे। पूर्व में हर गाँव में नीम,पीपल पेडें एक जगह रहना, वहाँ एक पत्थर विशाल से बैठने के लिये रखना ताकि लोग आराम करसके, उस पत्थर पर पेड के शरुआत में ही पहले नाग प्रतिमाओं को रखना करते थे। इसतरह बाँधे गए जगह को नागोंका गट्टा कहते थे। आज भी कुछ गाँवों में पीपल, नीम के पेडों के नाग के गट्टे दिखते हैं। हाल ही में तयार हुये चंद गावों में नाग के गट्टे नहीं हैं। यह बात बाद में बयान कर लेंगें कि क्यों कुछ गाँवों में नाग के गट्टे नहीं हैं।

साँप काट कर विष (ज़हर) छडगया तो यानि सर को छडगया तो पहले ज़बान की चकने की ताकत चलेजाति हैं। जबान मालूम करनेवाली छे स्वादों में पहले कडुवा पन मालूम नही होगा। ऐसी हालत को जानने के लिये कडुवे टेस्ट वाली नीम के पेड को नागों के गट्टे में रखे थे। ज़हर का असर सर पर छडने के बाद उसे निकालना आसान होजायेगा। इसीलिये साँप काटे हुये व्यक्ति को,नीम का पत्ता खिलाते हैं ताकि उससे यह मालूम होजाये कि ज़हर उसके सर को छडा या नहीं। ज़हर छडने से कडुवापन मालूम नहीं होता है उसवक्त सर से ज़हर निकालने की कोशीश कर सकते हैं। नीम के पत्तों के द्वारा ज़हर के बारे में जिन्होने मालूम किया, उसे निकालने के लिये पीपल के पत्तों को इस्तेमाल करते हैं। पीपल के पत्तों के काडियों (पत्ते के बीच में रहनेवाली ब्रह्मनाडि जैसी लकडी से) जिस के सर में विष हैं उसके कानों में रखने से, पीपल के पत्ते अपने काडियों के द्वारा सर के अंदर के ज़हर को अपने पत्तों में खींचलेते हैं। इसतरह दो या तीन जोडों के पत्तों से पूरे विष को निकाल सकते हैं। बाद में नीम के पत्ते को चबाये तो वह कडुआ रहने से यह मालूम कर सकते हैं कि ज़हर उतर गया हैं। ज़हर को खींचनेवाला पीपल का पत्ता साँप के फण के जैसा रहना और पत्ते का नीचे का हिस्सा साँप की पूँछ के जैसा रहना हम गौर करसकते है। इससे यह मालूम हो रहा हैं कि हर पत्ता भी एक साँप के समान हैं, साँप का ज़हर साँप ही खींचलिये जैसा, पीपल का पत्ता ज़हर को खींच ले रहा हैं। यह वैद्य का तरीका सबको मालूम हुये जैसा, पूर्व में हर गाँव में पीपल और नीम के पेड को बडाके पालके बाँध के रखे थे। उसी तरह वही पेडों के नीचे नाग साँप के प्रतिमा को भी रखने की वजह यह हैं कि! पेडों के नीचे ही साँपों के तसवीरों को रखे थे ताकि अगर ये साँप

काटें तो उनके बगल में जो पेड हैं उन पेडों के पत्ते ही उनका वैद्य हैं। कहावत हैं कि **हर पत्ता एक औषध हैं** पीपल, नीम का पत्ता किसकेलिये औषध है? अगर यह सवाल किसी को आया तो उसके जवाब में फौरन यह याद आने केलिये कि साँप है उन पेडों के नीचे साँपों को रखे थे। इसलिये बडों ने सोंचा कि हर गाँव में भी ऐसा ही है तो, सब को उस वैद्य के बारे में मालूम होकर सब साँप के काटने से बाहर पडसकते हैं।

प्रस्तुत काल में उस ज़माने के बडों की उद्देश की बारे में कोई नहीं जानता। आज भी कुछ गाँवों में नाग के गट्टे,पीपल,नीम पेडों के साथ रहने पर भी यह बात किसी को नहीं मालूम कि वे वैद्य विधान के लिये रखे गयें थे और पीपल,नीम के पेड साँप के ज़हर केलिये अच्छे औषध हैं। ज़हर के निशान के तौर पर साँप के तसवीरों को, औषध के निशान के तौर पर पीपल,नीम के पेडों को रखा तो वह भाव कालगर्भ में मिलगया। साँप के प्रतिमाओं को नाग देवताओं की तरह, नीम, पीपल के पेडों को लक्ष्मी नारायणों की तरह समझ कर प्रजाएँ पूजा कर रहे हैं। इसतरह वैद्य भक्ति में बदलगई । वे लोग जिन्होने इसतरह समझा कि साँप के प्रतिमाओं को पीपल और नीम के पेड की छाँव गिरने केलिये ही रखे गये उन्होने प्रतिमाओं को पेडों के नीचे रखे बगैर मंदिरो में प्रतिष्टा करना शुरु किये। इसीलिये नाग प्रतिमायें आज के ज़माने में मंदिरों में नज़र आ रहे हैं। गाँवों में पीपल, नीम के पेड जोडी में रहना दिख ही नहीं रहे हैं। पूर्व में बहुत ही प्लानाड से वैद्य पंडितों ने यह बात सबको मालूम हुये जैसा साँप के प्रतिमाओं को और पीपल,नीम के पेडों को रखा हैं कि साँप के प्रतिमायें जान (प्राण) निकालने के साँप हैं, पीपल और नीम के पेड जान डालते हैं तो, प्राण निकालने के साँप देवताओं के स्थान में हैं। जान डालने वाले औषध के पेड अदृश्यस्थान में हैं। साँपों

के बारे में, औषध पेडों के बारे में चर्चा वेदिकाएँ नाग के गड्डों पर ही रख के लोगों को मालूम होने के लिए नाग चतर्थी के नाम से श्रावण मास शुक्ल पक्षचतुर्थी को पूर्व में फैसला किया। पहले वैद्य पंडितों ने रखी हुई उद्देश कालक्रम में बदलजाकर, आखिर में नाग चतुर्थी एक भक्ति से मनाये जानेवाली त्योहार में बदलगई। हमारे बडोंने हमारे श्रेयस के लिए एक अद्भुत औषध को दिये तो उसे न समझते हुये कालगर्भ में उनके उद्देश को ढाँक दिये। हमारे कहनेके बाद भी कम से कम बडोंने पहुंचाई हुई फलित को अब भी न समझते हुये उल्टा बात करनेवाले मौजूद हैं। पूर्व में समाज के श्रेयस केलिये हमारे बडों ने जिसविधान को हमें पहुँचाया उसके लिये हमें उनके ओर शुकर गुज़ार होना चाहिए। लेकिन हम उन्होने पहुँचाई हुई विधान या तरीके को हवे में छोडदिये। बहुत पहले पोशीदा होगया हुआ विधान आज मालूम होने पर भी, कम से कम यह भी नहीं समझ रहे हैं कि यह सब हमारे भला केलिये ही है। आज इन सब बातों को जिन्होंने बताया वह हो और उस वक्त (पुराने ज़माने) में बहुत ही परिशोधना कर के जिन्होने बताया वह हो उन्होने तो दूसरों से कुछ चाह कर तो यह सब नहीं कहा था ना! बल्कि दूसरों की भला केलिए मुफ्त में बताया था, यह बात ज़रा भी सोचे बगैर मूर्खत्व से इसतरह कह रहे हैं कि यह सब बातें बताने के पीछे इनका मक़सद नागदेवता की पूजा को रोकना ही है, यह तो हिंदू मज़हब का ही नहीं हैं। खुद आप ही सोचिये कि ऐसा कहना क्या ठीख तरीका हैं। आज भी ऐसेलोग मौजूद है जो बिना सोचे समझे और यह न जानते हुये कि कौनसा सच है और कौनसा गलत, निस्वार्थ से समाज श्रेयस के लिये चाहनेवालों के बारे में गलत तरीके से बात करते हैं। इसलिये हम चाहते है कि कम से कम अब पढनेवाले आप तो सच को समझकरलें।

विनायक चतुर्थी

अबतक नाग चतुर्थी के बारे में बयान किये, अब विनायक चतुर्थी के बारे में बताते हैं। यह विषय को भी गलत तरीके से समझने का मौका है। इसलिये हम चाहते हैं कि पढने वाले हर एक समाचार (Point) को खूब गौर करें। वे बडे लोग जो यह बात जानते हैं कि यदि इनसान सही मार्ग पर चलने के लिये इनसान को आध्यात्मिक विकास, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक विकास की जरुरत हैं इसलिये उन्होने ये तीन तरीकों को त्योहारों के रुप में बताते हुये, सब में आध्यात्मिक ज्ञान को ही ज्यादा अहमियत दिये थे । अब तक हमलोगों ने जो बयान करलिया और जो बयान करलेने जा रहे हैं वे सब त्योहार हिंदू (इंदू) मत में ही है। पूर्व में हिंदू संस्कृती बडी शान से रहा करती थी। प्रस्तुत काल में ऐसे हिंदू तय्यार हो गए कि वे हिंदू संस्कृती को पराया संस्कृती की तरह, पराया संस्कृती को हिंदू संस्कृती समझते हैं। अगर यह बात आप यकीन नहीं कर सके तो अब हम जो बताने जारहे हैं वह प्रत्यक्ष प्रमाण देखने के बाद तो आप यह मानजायेंगे कि मेरी बात सच ही हैं। क्रीस्तु शक २००८, ८वा महीनह, ८ तारीक, ८ घंटों के, ८ मिनटों को अच्छा मुहूर्थ है, इसकी विशेषता यह है महीना, दिन सब ८ संख्याहोन, कई देश इसदिन को शुभदिन समझते हैं, पूरे प्रंपच में बहुत सारे विवाह हो रहे हैं, चैना में उलंपिक्स भी इसी दिन प्ररंभ कर रहे हैं इस टापिक पर टीवी ९ वाले चर्चा वेदिका रखके उसमें जोतिश्य शास्त्र पंडितों को, सांख्या शास्त्र के पंडितों को मिलाकर उनके चर्चा को अगस्त ८ वी तारीक सुबह ८ घंटों को प्रसार किये थे। उस चर्चा में एक संदर्भ में कहा कि कलियुग ४,३२,००० संवत्सर हैं। उस संख्या में अब तक केवल

२००० साल ही गुज़रे थे, और भी गुज़रने का वक्त बहुत है यह बात स्वयंपंडितो ने ही कहा था। उस बात को, उनके सैड में रहनेवाला दूसरा ज्योतिश्य पंडित ज़रा भी खंडन न करते हुए ऊपर से टीवी ९ वाले भी तटस्त थे। वहाँ बैठे हुए दो ज्योतिश्य पंडित टीवी ९ वाले सब हिंदू ही थे। फिर भी कोई भी अपना मुंह नहीं खोला। वहाँ कलियुग का परिमाण ४,३२,००० है तो, द्वापर युग ८, ६४,००० साल गुज़र जाकर, कलियुग प्ररंभ होकर ५१०८ साल भी गुज़र जाकर, ५१०९ वीं साल हो रहा है। इज़्रायेल देश में पैदा हुआ एसुप्रभु मरकर क्रीस्तुशक प्रारंभ होकर २००७ संवत्सर गुज़र कर, २००८ संवत्सर में ७ महीने भी खत्म होकर ८ वाँ महीना चल रहा हैं। ऐसी सूरत में हिंदुओं के धर्म के मुताबिक युगों का परिमाण हैं तो, उस टीवी प्रोग्राम में कहा गया कि कलियुग का परिमाण ४,३२,००० है तो अब तक जो वक्त गुज़रा वह सिर्फ ५१०८ साल चार महीने ही है तो, हिंदू धर्म के प्रकार इस संख्या को बोललेने के बजाये ईसाई मज़हब के क्रीस्तुशक के सालों को बोललेना गलती नहीं है क्या! ब्राह्मण के बारे में प्रस्तावना करके उसका नाम डेविड ब्रस कहे जैसा, कलियुग के आयुप्रमाण की प्रस्तावना करके, क्रीस्तुशक की भुक्त को (यानि जो वक्त गुज़र चुका उसके बारे में) बतायें तो हिंदूसंस्कृति को छोडकर ईसाई संस्कृति को बोललिये जैसा नहीं हुआ क्या! आप ही बताइये जिसके बारे में उन्होने बातकिया था क्या उसे हिंदू संस्कृति कहते हैं?

ऐसी ही और एक प्रत्यक्ष सत्य को बताते हैं देखिए। **त्रैतशक–३०, कलियुग ५१०९ वीं साल, सर्वधारि नाम संवत्सर नं –२२, चैत्रमास महीना १, वसंत ऋतु** कहकर हिंदू संस्कृति के प्रकार युगादि से शुरुहुई क्यालेंडर को हम तयार करके हमने कहा था कि जनवरि

महीने से शुरु हुआ क्यालेंडर इस्तेमाल मत कीजिए वह हमारि संस्कृति नहीं है, इसतरह कहकर युगादि से शुरु हुई हमारी क्यालेंडर को मुफ्त में बाँटे तो, महानंदि में दूसरे मज़हब का प्रचार कर रहे हैं कहकर क्यालेंडर को टीवी के खरीब लाकर दिखाके, लैन से तीन दिन प्रसार किये हुये टीवी ९ वालों को हम और हमारि क्यालेंडर इसायियत की तरह दिखा तो उनके सामने क्रीस्तुशक के २००० सालों को कलियुग में गुज़रे हुये सालों की तरह बोले हुये लोग आपको हिंदुओं की तरह दिखे है क्या? हिंदू धर्म को बतानेवाले ईसायियों की तरह, ईसायियित को बतानेवाले हिंदुओं की तरह टीवी ९ वाले प्रचार करना देखें तो आप को क्या लग रहा है आप खुद सोचिये। टीवी ९ वाले युगादि से शुरु हुये हमारे क्यालेंडर को दूसरे मज़हब की प्रचार कर रहे हैं कहकर टीवी में क्लोज़ अप में दिखायें तो, उसमें कितना सच है कितना झूठ इस बात की योचना किये बगैर ही कुछ हिंदू लोग हमारे क्यालेन्डरों को अनंतपुर जिल्ला गुंतकल्लु में आग लगाकर जलादिये। बहतरीन समाज के लिये टीवी ९ कहलाने वाले असत्य को इसतरह प्रसार कैसे करसकते है? यह सब देखें तो आप खुद ज़रा सोचिये कि हिंदूलोग हिंदुत्व को न पहचानने वाले अंधे लोगों के जैसा है कि नहीं?

और एक बात कहते हैं, देखिए। पंचांग, ज्योतिश्य, नवग्रह पूर्व से हिंदुओं ने फैन्ड औट किया था, हिंदु लोग उसका हिसाब रखते हैं। हमने आध्यात्मिक में भी बयान करलिये कि हिंदुलोग कर्म सिद्धाँत के अनुसार ग्रहचार रहते हैं। ऐसी सूरत में क्रीस्तुशक २००८, ८ वीं महीना, तारीक ८ के प्रकार हिंदुओं केलिए वह अच्छा दिन कैसा हुआ। वे तीन ८ एकबार ही मिलकर आना ईसायियों के लिये अच्छा होसकता हैं मगर हिंदुओं केलिए वह दिन अच्छा कैसे हुआ?

ज्योतिश्य शास्त्र के प्रकार उस दिन की कोई प्रत्येकता नहीं हैं। ऐसी सूरत में उस दिन के बारे में खास कर टीवी में प्रचार करके बात करना, क्रीस्तुशक २००८ के बारे में तारीफ किये जैसा नहीं हुआ क्या? हिंदुओं के पंचांग के प्रकार न यह ८ वीं साल है, नाही ८ वाँ महीना, नाहि ८ वाँ दिन। ऐसी सूरत में अगर ईसायियों के तीन आठों के बारे में बातकरने वाले हिंदू है तो, हम भगवद्गीता के बारे में ज्ञान बताते हुये, युगादि से क्यालेन्डर तयार किये हुये हम परमत वाले हैं क्या? जिन लोगों ने हमारे क्यालेन्डर को जलाया और चीरा और वह टीवी ९ जिसने हमारे क्यालेन्डर को पकड कर कहा कि यह ईसायियों का क्यालेन्डर हैं वे सब उनके अपने घरों में जनवरी से शुरु हुई क्यालेन्डर को रखलेना समंजस है क्या? जो लोग जनवरी १ को नया साल समझकर खुश होते हैं, उस दिन रात को टीवी में दिखाने वाले सब परमत पर चले जैसा नहीं हुआ क्या? इसतरह पूछते, समझाते गये तो यह मालूम हो रहा है कि हिंदूमत में दैवज्ञान बारीक होकर, हिंदू अपने संस्कृती को और अपने ज्ञान को न पहचान ने की हालत में हैं। ऐसी हालत से हिंदुओं को बाहर निकालने केलिये, हिंदू संस्कृती को आईने में दिखाने वाले त्योहारों को समझाते थे। हिंदुओं को आध्यात्मिक कहलानेवाले आईने में त्योहारों के अर्थ को दिखाते आये थे। और यह भी कहा कि सामाजिक जागृती को बतानेवाले नाग चतुर्थी में भी भक्ति को बढालेने केलिये कहा था। उसी कोण में सामाजिक न्याय, नीती को दिखानेवाली विनायक चतुर्थी में भी भक्ति को बढालेने केलिये भी कह रहे हैं। नाग चतुर्थी समाज के लिए आरोग्य देनेवाली सूत्र के बारे में बताती है तो, विनायक चतुर्थी सम समाज को खायम करने की अंश के बारे में बतानेवाली हैं। समाज को बडी संदेश देनेवाली विनायक चतुर्थी के बारे में अब बयान करलेते हैं।

हम हर साल अगस्त,सेप्टेंबर महीनों में आने वाले विनायक चतुर्थी को बहुत ही उत्साह के साथ मनाते हैं। आज इंदू (हिंदू) लोगों के मन में बडी मज़बूत जगह बनाली हुई इस त्योहार के बारे में दूसरे मतों के तरफ से बहुत विमर्षाएँ भी हैं। ऐसे विमर्षक हमारे पास आकर पूछा कि आप तो बहुत ही सही सही सत्य विषयों को बता रहे हैं ना! तो फिर क्या आप हमारे सवालों के जवाब देंगे। उसके जवाब में हमने ऐसा कहा कि हम तो आध्यात्मिक में सही ज्ञान के विषय को बताते हुए जिंदगी गुज़ारना चाहा। इसलिये अगर आप के सवालों के जवाब मेरे पास है तो मैं बताऊँगा, अगर नहीं है तो कहूँगा कि मुझे नहीं मालूम है, पूछिये। जब उन्होने जो बातें पूछा वे इसतरह हैं।

१) इंदूमत में विघ्नेश्वर त्योहार नाम से एक त्योहार को मना रहे हैं हेना! विघ्नेश्वर का अर्थ विघ्नों का अधिपति ही है, हेना। विघ्न का मतलब रुकावटें, आटंक ही है, हेना। ऐसे रुकावटों के अधिपति को शत्रृ समझकर गाली देने की बजाए पूजा क्यों कर रहे हैं? अगर बुरा करनेवाला ताकतवार है तो कोई भी उसका सामना न करते हुये उसकी तारीफ किये जैसा, आप भक्ति भी इस डर से कर रहे हैं कि विघ्नेश्वर हमारेलिये रुकावट की तरह खडा होगा समझकर, डर से उसकी पूजा कर रहे हैं। लेकिन भक्ति से नहीं कर रहे हैं। इसकेलिये आप क्या कहेंगें?

२) क्या यह ठीक लगता है कि बहुत ही भक्ति के साथ, और बहुत ही खर्चा करके बहुत ही सुंदर से तयार किये हुये विघ्नेश्वर के प्रतिमाओं को बहुत ही भक्ति से पूजा करके, सामनेवाले दिन दिखाये हुये भक्ति को तालाब में मिलाकर, विघ्नेश्वर को पानी में फेंकदेना? क्या इसे कोई भक्ति कहते हैं कि विनायक को इसतरह पानी में डकेल कर हाथ साफ कर रहें हैं कि अब तेरा सहवास बस है अब हमें तेरी ज़रुरत ही नहीं है?

३)   दस रुपे रख के दैवज्ञान को बतानेवाली ग्रंथ को खरीद करने केलिए तकलीफ उठानेवाले बहुत से लोगों को आप देखे होंगे। ऐसे लोग भी हज़ार रुपये खर्च करके विनायक के प्रतिमाओं को बनाके उनको तोडकर अपने पैसे को बरबाद करले रहे हैं। कुछ लोग तो ज़बरदस्ती से प्रतिमाओं के खर्च के लिए पैसे वसूल करते हैं। इसतरह जबरदस्ती के साथ पैसे वसूल करना जबरदस्ती भक्ति नहीं है क्या?

४)   एक ही तरह, एक ही पद्दती में, एक ही क़िस्म से अवयवों के साथ पैदा हुये हम, यह बात भूल कर कि हम एक ही ईश्वर के बच्चे हैं, मत के द्वेषों को बढालेने वाले अध्याय में विनायक के त्योहार को इस्तेमाल करले रहे हैं। आप तो ज्ञान पाये हुए योगियाँ है इसके बारे में क्या कहेंगें?

इसतरह जिन्होने पूछा उनको विनायक चतुर्थि का रहस्य मुझे बताना पडा। अगर उनके सवालों का सही जवाब नही दिये तो, उनके हृदय में विनायक चतुर्थि के बारे में जो भाव है उसे बदल नहीं सकते। हमारे लिये महत्व या बडा होने पर भी पूछने वाले को छोटा दिखसकता हैं। इसलिये निजार्थ को बताना ही पडेगा इसलिये मैं ने ऐसा कहा कि प्रपंच के पैदायिश के वक्त मत या मज़हब नहीं थे। देव या देवताएँ भी नहीं रहते थे, सिर्फ सब यह जानते थे कि ईश्वर एक ही हैं। गुज़रते वक्त के साथ साथ ऐसी अवगाहना मनुष्यों में कम होना शुरु हुआ था। उस समय में महान तत्ववेत्ताएँ कुछ लोग खूब योचना कर के, अज्ञान के बीज को निकालने के लिये, दैवत्व के बारे में प्रचार करना शुरु किये थे। ईश्वर का कोई रुप नहीं है, इसलिये बिना नाक, मुख वाले पत्थर (लिंग) को निशान के तौर पर रख के, यह बोधा किया कि ईश्वर इसतरह हैं। उसका (यानि उस पवर) का कोई नाम नहीं है इसलिये उसे ईश्वर कहा हैं। ईश्वर का मतलब अधिपति

या मालिक के है मगर और कुछ नहीं हैं। जिस ईश्वर के बारे में लोग भूलगये उसके बारे में सबका मालिक एक है कहते हुये रुपवाले पत्थर को दिखा कर बयान किये।

इसतरह ज्ञान के प्रकार ही नहीं बल्कि, संघ के प्रकार भी दो तरीकों से इनसानों को चलाने केलिये उस दिन बडों ने कोशीश किया था। आज जिसे हम **सामेता** कहते हैं वह शब्द को उस दिन **समता** कहा करते थे। **बडों की बात दही खाने की पोटली जैसी है**, यह कहावत आज भी है यह इसलिये रखा था कि बडों की बात कभी भी नहीं बदलती, और वह सच है, कभी भी खराब नहीं होगी कहने के लिये समता की तरह यह कहावत कहा गया था। यानि बडों की बात को समता की तरह दही खाने की पोटली का शब्द इस्तेमाल किये थे । समता का अर्थ समान के हैं। ऐसा ही और एक कहावत है कि चिंता न करनेवाली औरत को मेले (Market Place) में भी नींद आई है। इसका मतलब यह है कि बिना फिकरवाली औरत को भीडवाले मार्केट प्लेस में नींद जाने के बराबर(समान) कम्पार कर के बोलना। ऐसी समता का शब्द कुछ वक्त के बाद पुकारने में सामता में बदल गई। ऐसा ही और थोडे वक्त को सामेता में बदल जाकर आज हमारे सामने मौजूद हैं। इसतरह के कई मुख्य सामेताओं (कहावतों) को पूर्व मानव को समाज में सक्रम तरीके से चलाने केलिये बडों ने रखे थे। उस तरीके के प्रकार ही समाज में के एक बुराई को निकालदेने केलिये ईक्वल कम्पारिज़न के साथ, समाज में रहनेवाले कमज़ोर को चूहे से कम्पार कर के, ताकतवार को हाथी से कम्पार करके कहा करते थे। ताकतवार कमज़ोर पर हुकूमत करके सताने को इसतरह कहावत के सूरत में कहते थे कि चूहे पर हाथी सवार किये जैसा। यह तो संघविद्रोह कार्य है इसलिये यह काम अच्छा काम नहीं है कह

कर सबको मालूम हुये जैसा, मुंह से कहना ही नहीं बल्कि दृष्य रुपसे आँखों को दिखनेवाली एक कार्यक्रम के रुपमें दिखाते थे। एक छोटे चूहे को रखकर, उस पर बडे हाथी को बैठे जैसा कर के गाँव में पूरा ऊरेगिंपु (जल्सा) किया करते थे ताकि लोगों को यह बात समझ में आजायें। और आखिर में यह तरीका अच्छा तरीका नहीं हैं बताने केलिये वह दृष्य को नाश किया करते थे। वे लोग तसवीरों को पानि में इसलिये डुबाते थे क्योंकि उन्हे लगा कि मट्टी से बनाये हुये तसवीरों को अगर आग में डालकर जलायें तो और भी खूब मज़बूत बनकर खराब नहीं होंगे लेकिन उसके बदले अगर पानी में डालें तो वे तसवीर पूरे तरीके से नाश होजायेंगे। पानी में डालने के बाद वह दृष्य जल्दी से नाश होने केलिये पानी में डालने से पहले ही उसके हाथ, पैरों को तोडकर पूरे तरीके से पानी में मिलगये जैसा करते थे। यह उसदिन का निमित्त आचरण था संघसंस्करण के लिये। यह कार्य हर साल एक आचरण की तरह करना आज भी बाक़ी हैं। लेकिन किसी को भी उसका असली मतलब मालूम नहीं। आज सिर्फ लोगों को यही मालूम है कि सामने वाला कर रहा हैं इसीलिये मैं भी करुँगा, लेकिन कोई भी यह बिलकुल नहीं सोच रहा हैं कि उसका अर्थ क्या हैं यानि कोई भी यह जानने की कोशीश नहीं कर रहा हैं कि आखिर उसका असली मतलब क्या हैं? जब एक मत के लोग जिसे आचरण कर रहे हैं वह आचरण पूर्व में बडे भाव से रखी गई थी कह कर जब उस मत के लोगों को ही नहीं मालूम है तो, दूसरे मत के लोग उसे गलत समझने में उनकी कोई गलती नहीं हैं। लेकिन अगर उसमें हम सही अर्थ को, आचरण को लिये तो उसमें ऐसी कुछ बात ही नहीं है जो विमर्शा करने की लायक है। कोई भी विमर्शा नहीं करसकता, जब असली अर्थ मालूम होता है तो सब मत के लोगों से मदद ज़रुर मिलेगी।

हमने पहले ही कहा था ना कि! पूर्व में मत की नाम तक लोग नहीं जानते थे और उनके मन में एक ही भाव रहता था कि ईश्वर एक ही हैं। और उन्होने पत्थर के लिंग को यह बताने केलिये रखा कि ईश्वर का कोई नाम और रुप नहीं हैं। फिर भी गीता के वाक्य के अनुसार गुज़रते वक्त के साथ धरम अधरम में बदल जायेंगे और कुछ वक्त के बाद मानवों में अज्ञान के वश में एकत्व खत्म होजाकर, हम और तुम कहलानेवाले समूहों (र्गूपों) में बटगये हुए लोगों को भी नाम रहा करते थे। इसतरह कुछ वक्त के बाद बनेहुये समूह ही वैष्णव, शैव है। पूर्व में वैष्णवों ने और शैवों ने सामप्रदायों को बनालेकर, ये हमारे सामप्रदाय है कहते हुये, उनकी भद्रता केलिये कुछ पुराणों को लिख कर, वे सब लोगों को मालूम हुये जैसा करके, उनके सामप्रदायों को हिफाज़त से रखलिये। ऐसे पुराणो में शैव संबंदित शिव पुराण पैदाहुई।

इसतरह शैव बनने से पहले ही दो हजार साल पहले समाज में बुराई को हाथी, चुहे की तरह दिखाकर पानी में डुबोनेकी आदत थी। वह आचरण करते करते बडे लोग मरते हुये आये तो, छोटे लोग उनकी अनुसार करते हुये आखिर में ऐसी हालत आगई कि क्यों यह काम कर रहे हैं यह बात किसी को भी नहीं मालूम हुआ। अर्थ या मतलब मालूम हुये बगैर ही बहुत लोग मिलकर खुशी के साथ चूहे को, हाथी को घुमा रहे हैं। यह कुछ भक्ति का कार्य है ंसमझकर उस हाथी के आकार को सजदा करना शुरु किये थे। इसतरह शैव उद्भभ होने वाले दिनों को ही चूहे, हाथी के तसवीरों को मानने वाले थे। इसीलिये शैवों नें शिवपुराण में चूहे को, हाथी को एक विशिष्टता रख के कहा कि हाथी का सर रखनेवाला विनायक हैं, पार्वती का बेटा हैं ताकि इससे लोगों में भक्ति बढे। ऐसा करके उन्होने अच्छा काम ही

किया था। जब से हाथी का तसवीर जाकर हाथी का सर रखनेवाला तसवीर आया है। जो भक्ति पहले से है उसे और भी ज़्यादा करने से विनायक के तसवीर बनानेवाले ज़्यादा होगये। पैसे खर्चा कर के पूजा करनेवाले ज़्यादा होगये, लेकिन पानी में डालकर खुंदलने के आचरण को चुडा न सके। वे बडे लोग जिन्होने इस विधान को छुडा ना सके उन्होने कहा कि विनायक निमज्ञन को पानी में ही करना चाहिए। निमज्ञन का अर्थ स्नान है मगर तोडना नहीं, लेकिन ऐसा नही समझना चाहिये कि जिस ईश्वर की पूजा की उसे ही फेंकदेना निमज्ञन नही। आपने पूछे हुये पहले सवाल में आपने कहा था कि विघ्न पहुंचानेवाले विघ्नेश्वर की दूषणा करनी चाहिये, लेकिन पूजा नहीं करनी चाहिये। असल विघ्नेश्वर को गाली देने के लिये या भला बुरा कहनेकेलिये उसने हमें किसी भी तरह का विघ्न हो, बुराई हो नहीं किया था ना। इसलिये उसकी दूषणा करने की कोई ज़रुरत नहीं हैं। भक्ति रखके विघ्नेश्वर की पूजा करने में कोई गलती नहीं हैं। लेकिन जिसकी पूजा की उसे वैसाहि रखलेते तो अच्छा होता। लेकिन पानी में फेंकदेना अच्छी बात नहीं हैं। सब लोग यह बात अच्छी तरह से जानलें कि अगर सच बतायें तो उसकी दूषणा या पूजा करने के बदले में लोगों को यह बतानेकेलिये गाँव में पूरा जल्सा (ऊरेगिंपु) करना चाहिये कि संघ में के अन्याय को बहिर्गत करने केलिये ही यह कार्य किया जा रहा हैं। ऐसा ही उसे खत्म करने के उद्देश से ही उस तसवीर को पानी में डुबाकर नाश कर रहे हैं।

आप के पूछे हुये सवालों में से दूसरे सवाल के प्रकार जबरदस्ती से पैसा वसूल करके उत्सव करना अच्छी पद्दती नहीं हैं। भक्ति में भी वह जबरदस्ती वाली भक्ति होगी, मगर पूरे मन के साथ करनेवाली भक्ति नहीं होगी। बिना पसंद से जो लोग देते है वे पूछने

वाले को ही नहीं, विघ्नश्वर को भी बुरा भला कहने का मौका है। इसलिये दूसरों से पैसा वसुल करवाना अच्छी बात नहीं हैं।

पूर्व काल में समता का शब्द सामता में बदलकर आखिर में जिसतरह सामेता में बदलगया, उसीतरह उसदिन बडोंने रखी हुई संघ संस्करण तरीका यानि चूहा, हाथी की ऊरेगिंपु (उत्सव) आज भक्ति के रुप में बदलगई। पुराणों के प्रभाव के कारण हाथी का रुप विनायक के रुप में बदलजाने पर भी आचरण पूरा न बदलते हुये पूर्वाचरण ही करने से कुछ दूसरे मत वालों से विमर्शा की खाबिल हुई हैं। इस आचरण को पूरे भक्ति भाव में बदलालिये तो भी कोई पर्वा नहीं या तो पहले की तरह संघकेलिये रखलिये तो भी कोई बात नहीं हैं। लेकिन न उधर, न इधर कहे जैसा जो काम कर रहे हैं उसका अर्थ मालूम न होने की वजह से वह कार्य दूसरे मतों के लोगों से, देखनेवालों से विमर्शा की जा रही हैं। विनायक निमज्ञन (स्नान) के नाम से छोटे छोटे तसवीरों को पानी में फेंकना देखें तो, किसी को भी वह कार्य भक्ति नहीं लगता। ऐसा लगता है कि सिर्फ खुशी के लिये किये जानेवाली काम जैसा लगेगी, लेकिन पूरे भक्ति से किये जानेवाला काम जैसा नहीं लग रहा हैं। क्या उसे ऊरेगिंपु कहने के लिये कुछ जगहों में पीरों की ईद की तरह पीकर नाचना, लकडियों से मारलेते हुये जाना देख रहे हैं तो वह चिचोरा साँप्रदाय लग रहा हैं लेकिन अर्थ साँप्रदाय नहीं लग रहा हैं। उस दिन हमारे बडों ने समाज में बुराई को मिटाकर सम समाज की स्थापना करने केलिये हम लोगों को दिखाके जो आचरण किये उनको समझ न सक के, उनके अर्थ को मिटाकर, जैसे हमारी मरज़ी है वैसे हम विनायक चतुर्थी को करलिये। इधर पढे हुये लोग, उधर पढाई न आनेवाले लोग मूर्खत्व से बडों के उद्देश को मिट्टी में मिलाकर अर्थरहित वाली विनायक चतुर्थी को मना रहे हैं।

यहाँ खासकर बोलने वाली बात यह है कि! कृष्ण भगवान होने पर भी, ईश्वर की अंश भगवान जैसे इस ज़मीन पर आने पर भी हमारे जीवनों की साराँश वाली भगवद्गीता को कहने के बावजूद भी, भगवान हो या भगवद्गीता हो आज के मानवों को बडी (महत्व) न दिखते हुये, भगवान की पैदाइश की दिन यानि कृष्णाष्टमी को किये बगैर, उसके जगह में विनायक चतुर्थि को लाकर रखदिये। हमने पहले ही बयान करलिया कि कृष्णाष्टमी ग्यारह दिनों की ईद हैं। इतना ही नहीं यह भी बता चुके थे कि कलियुग के प्ररंभ में गल्लियों में मनाये जाने वाली त्योहार सिर्फ कृष्णाष्टमी एक ही है। माया प्रभाव से एकदिन मनाये जाने वाली विनायक चतुर्थी ग्यारह दिन होगई। और ग्यारह दिन मनाये जाने वाली कृष्णाष्टमी एक दिन की बनगई। इतनाहि नहीं पूर्व में कृष्णाष्टमी त्योहार खत्म होनेवाला दिन भाद्रपदमास शुक्लपक्ष चतुर्थी के दिन होती हैं। ठीख उसी दिन विनायक चतुर्थी की तरह हिसाब करने की वजह से, कृष्णाष्टमी की खात्मे के दिन यानि ग्यारवी दिन के लिये रुकावट पैदा हुई। इसतरह कृष्णाष्टमी के ओर रुकावट की तरह विनायक चतुर्थी आने से हिंदू संस्कृति में की अहमियतवाली कृष्णाष्टमी खत्म होजाकर, बे अहमियत वाली विनायक चतुर्थि अपना जगह बनाली थि। कृष्णाष्टमी के खातिमे के दिन ही विनायक चतुर्थी प्ररंभ होने से, कुछ लोग विनायक चतुर्थी को न छोड सकके कृष्णाष्टमी को एक दिन की त्योहार में बसादेके, सिर्फ श्रावण बहुल अष्टमी के दिन कृष्णाष्टमी को करना शुरु किये थे। इसतरह करने से ऐसा होगया कि हम हमारे मुख्य सांप्रदाय को न मालूम होते ही छोडदिये जैसा हुआ। इसतरह साल में एक दिन की त्योहार में कृष्णाष्टमी बदलजाकर कुछ वक्त बीत जाने के बाद, कालक्रम में उस एक दिन त्योहार को भी भूलकर, इस हालत पर पहुंचगये कि हमें

यह तक मालूम नहीं हैं कि आखिर कृष्णाष्टमी का क्या मतलब हैं। और भी विशेषवाली बात यह हैं कि कुछ प्रांतों में जिस जाति में कृष्ण बडे हुये वे यादवों को (गाय चरानेवालों को) भी कृष्णाष्टमी के बारे में नहीं मालूम हुआ। कृष्णाष्टमी वह दिन है जिसमें साक्षात ईश्वर अवतार लेकर भगवान जैसा आया हुआ पहला दिन है लेकिन आज उसकी कोई आदरणा नहीं हैं, अर्थ नहीं हैं, आचरण नहीं हैं सब खत्म होजाकर, बिना दैवत्व वाली एक समाज श्रेयस की विषय,माया की ताकत की वजह से दैवस्थान का आक्रमण करके सब से आदरण पाते हुये, सब से आचरण किये जा रही हैं। इसतरह समाज में विनायक चतुर्थी गल्लियों में मनायी जानी वाली त्योहार की तरह बदलजाना, इतनाहि नहीं बल्की ग्यारह दिन की त्योहार की तरह बदलजाना, कृष्णाष्टमी को सब प्रकार से आदरण न रहना हमारे लिये बहुत ही दुख दायक की बात हैं। मुझे ही नहीं बल्कि हर एक हिंदू (इंदू) को भी दुख करने की बात ही हैं। हर एक जन भी पीछे मुडके देखलेने वाली बात हैं।

इंदू (हिंदू) धर्मों को पूर्व वैभव आनेकेलिये, इंदुत्व सब के लिये आमोदयोग्य होने के लिये, आज के ज़माने के आचरणों को छोडकर, उस ज़माने के आचारों को अमल करनी चाहिये। इतना सब कुछ कहने के बावजूद भी कुछ लोग जिद्दी से झगडते हुये इसतरह पूछ सकते हैं कि वैसे भी विनायक चतुर्थी तो हिंदू धर्मो के संबंदित त्योहार ही है! विनायक तो पार्वती, शिव का बेटा ही तो है हेना! मैं यह बात शुरु से कह रहा हूँ कि शास्त्र ही हमारे लिये आधार हैं। भगवद्गीता से पहले व्यास के ज़रिए लिखी गई एक पुराण कथा में से पार्वती, विनायक आये थे। विनायक की पैदाइश ही अशास्त्रीय और प्रकृती के विरुद्ध हैं। यदि कोई हमसे जब इसतरह पूछता है कि

क्या बाप के बगैर बेटा कैसे पैदाहुआ? बाप से संबंध न रखते हुये माँ ने बेटे को किसतरह पैदा करलिया? तब इस सवाल का जवाब हम शास्त्रबद्ध के साथ बता नहीं सकते। ऐसा पैदा होनेवाला माँ का बेटा होता है लेकिन बाप का बेटा नहीं होता। वह नरसिंह स्वामि, विनायक जिनके सर, मुंडी अलग अलग होते हैं वे कथायें पुराण ही होते हैं। लेकिन शास्त्रबद्ध चरित्र नहीं होते। कवियों ने जो कहानियाँ बनाई उनको छोडकर वास्तव चरित्र वाले विषय की ही स्वीकार करनी चाहिये। नाग चतुर्थि शास्त्रीयता रखती हैं। ऐसा ही विनायक चतुर्थि की भी शास्त्रीयता हैं। ये दो समाज के श्रेयस से संबंदित है फिर भी, शास्त्रीयता को छोडकर नाग चतुर्थी, विनायक चतुर्थी पर अशास्त्रीयता को नहीं थोपना चाहिये।

कुछ लोग हम हिंदू (इंदू) मत की रक्षा करेंगें, हिंदू धर्मों को बचायेंगे कहते हुये, हिंदू धर्म रक्षण कहलानेवाली निनाद से कुछ नाम रखके संघों की स्थापना करलेके, उनकी हुकूमत के लिये हिंदू धर्मों का नाश कर रहे हैं। ऐसे लोगों को यह तक नहीं मालूम कि हिंदू धर्म क्या हैं और वे कैसे रहते हैं? क्या ऐसे लोग हिंदु धर्मों को बचाते हैं? ऐसे संघ दूसरे मतों पर दौर्जन्य करते हुये ऐसा कर रहे हैं कि हिंदुत्व तो शांति स्वरुप ही नहीं हैं। ऐसे लोग उनकी शान और शोहरत केलिये हमारे जैसे लोगों को भी बेइज्ज़त कर रहे हैं। जिन्हे ज्ञान मालूम है वे लोग ऐसे लोगों को हिसाब न करते हुये, इंदू धर्मों के प्रकार ही अमल करना चाहिये या बिहेव करना चाहिये। वह व्यास जिसने पुराणों को लिखा था उसे खुद जब भगवद्गीता मालूम हुआ तो अरें मैं ने यह क्या करदिया जब भगवद्गीता इतनी महत्वपूर्ण है तो मैं ने पुराण लिख कर बडी गलती करदी है उसे इस बात की पश्चात्ताप होकर वह बहुत ही दुखी हुआ था। जिसने पुराण लिखा वह खुद

पक्ष्चात्ताप किया तो, यह बात न जानते हुए हम उन पुराणों के आधार से ही नाग चतुर्थी को, विनायक चतुर्थी को हमारे मरज़ी के मुताबिक मनायें तो दैवद्रोह किये जैसा ही है। असली हिंदू धर्मों को कमतर किये जैसा ही होगा। इसलिये अधर्म तरीकों को छोडकर धर्म के पद्दतियों की आचरण करना चाहिये। अगर कृष्णाष्टमी को ग्यारह दिन करें तो विनायक चतुर्थी करने का मौका नहीं रहेगा। ग्यारवी दिन विनायक चतुर्थी होगा। उस दिन कृष्ण मंडप में रहने की वजह से विनायक को मंडप ही नहीं रहता।

एक ऐसी रहस्य है जिस के बारे में ज़मीन पर बहुत से लोगों को ही नहीं बल्कि एक तरह से सबको नहीं मालूम। वही ईश्वर की पालना है। ईश्वर के पालना में महाभूत, भूत, उपभूत अपनी भूमिका निभाते हुये ज़मीन पर अपना पालन चलारहे हैं। यह विषय भगवद्गीता में शास्त्रबद्ध के साथ मौजूद हैं। ईश्वर कुछ नहीं करता, जो यह सब कुछ कर रहे हैं वे तीन प्रकार के भूत ही हैं। हमने एक ग्रंथ में भी कहना हुआ कि ईश्वर के खिलाफ काम करनेवालों पर भूतों की दृष्टी रहती हैं। यह भी बताए थे कि देवताओं के दर्शन केलिये जाते समय, आते समय और उसमें शामिल होते समय,शादियों को जाते समय, आते समय ज़्यादा प्रमाद होने केलिये भूत ही कारण हैं। हर साल विनायक चतुर्थी त्योहार में विनायक निमज्ञन के संदर्भ में बहुत ही प्रदेशों में एक, दो, या तीन जन इत्तेफाकन मरना हो रहा हैं। हर साल ऐसा हो रहा है फिर भी यह बात किसी को भी समझ में नहीं आरहा हैं कि आख़िर ऐसा क्यों हो रहा हैं। यह किसीको भी मालूम नहीं हो रहा हैं कि यह भूतों का काम हैं। विनायक चतुर्थी के समय पूरे देश में हज़ारों के संख्या में लोग मर रहे हैं। भूतों से आनेवाले ऐसे दुर्घटना खत्म होजाने केलिये वह विनायक चतुर्थि को रोकदेना

चाहिये जिसे पंचभूत पसंद नहीं करते, और उस ईश्वर की आराधना यानि भगवान का जन्मदिन को त्योहार की तरह करना अच्छी बात है जिसे भूत पसंद करते हैं।

सब गौर करने के बाद यह ग्रंथ को पढनेवाले सब, कृष्णाष्टमी करना, सबसे पहले शुरु कीजिए। कृष्णाष्टमी में विनायक चतुर्थी के जैसा न कुछ खर्चा रहता हैं, न दुर्घटना होती है। हर साल प्रतिमाओं को खरीद ने की भी ज़रुरत नहीं हैं। घर में की प्रतिमा को गल्लियों में रख कर,ग्यारवीं दिन उत्सव मनाकर उस प्रतिमा को वापिस घर में रखलनी चाहिए। किसी भी हालत में कृष्ण प्रतिमा को पानी में निमज्जन करना हो, कहीं पे भी फेंकना हो नहीं करना चाहिए । आखरी दिन ऊरेगिंपु (जल्से) के बाद कृष्ण प्रतिमा को घर में ही रखलेनी चाहिये। विनायक चतुर्थी के समय चंदा, वसूल ही ज़्यादा हो रहे हैं। उसमें विनायक भक्ति से भी पैसों की वसूल ही मुख्य किरदार निभा रही हैं। जिन लोगों के पास देने की ताकत नहीं हैं उनके पास भी ज़बरदस्ती के साथ पैसे वसूल करना हो रहा है। कृष्णाष्टमी में ऐसा कोई विधान नहीं हैं। ऐसा मंडप बनाये ताकि प्रतिमा बारिश से न भीगे फिर उसमें कृष्ण प्रतिमा को रखके,नारियल (टेन्काया) को पोढकर आराधना करें तो काफी हैं। जैसे विनायक मंडप में रखते हैं वैसे कृष्ण के सामने सिनेमा के गाने बजाने रखना हो, टैमपास केलिये पत्ते खेलना अच्छी बात नहीं हैं। कर्नाटक प्रांत में हर विनायक मंडप में भी पत्ते खेलने की आदत हैं। ऐसे काम कृष्ण प्रतिमा के सामने नहीं करना चाहिये। कृष्ण मंदिर में ग्यारह दिन भी खास तरीके से गीता पठन हुये जैसा इंतेजाम करलेनी चाहिए। वह भी गायकों ने गाये हुये भगवद्गीता की रिकार्डिंग को नहीं रखना चाहिये। पाक, साफ रहते हुये कोई भी हो गीता को सुबह,शाम पठन

करना चाहिये। कृष्ण मंडप में वेदपठन निषेद हैं। कृष्ण के पूजा में वेदमंत्रों को इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। मंत्ररहित साधारण पूजा करना बेहतर हैं। जिन्होंने नशा पी है वे लोग कृष्ण प्रतिमा के आस पास भी नहीं जाना चाहिये। जाने पर भी जब कुछ भी नहीं होगा,लेकिन बाद में उसके आरोग्य (सेहद) में बहुत फरख आजायेगा। ऐसे बीमारियाँ लगजाते हैं जो कभी ठीख ही नहीं होंगे। रोगें (बीमारियाँ) भी भूत ही हैं, इसलिये भूत उनलोगों को नहीं छोडते जिन्होने भगवान की बेइज्ज़ती की। जिन्होने भगवान को छोडकर दूसरे देवताओं की आराधना कर रहे हैं उनके साथ अब तक भूतों ने ऐसा किया कि वे दुर्घटनाओं में फसजाये और उनके आरोग्य में कई बीमारियाँ आजाये। इसलिये उनके गुस्से के हखदार न बनते हुये दूसरे देवताओं को छोडकर कृष्णाष्टमी करें ऐसे लोगों को उन भूतों की मदद मिलती है जो ईश्वर की पालन में खास किरदार निभा रहे हैं। अगर भगवान ने जो ज्ञान कहा था उसे मालूम किये तो, शरीर में रोगों (बीमारियों) की सूरत में रहनेवाले भूत भी वैसे लोगों की इज्ज़त करते हुये अपने रोगों से उन्हे बचाते हैं। इतनाहि नहीं आज जो प्रकृति के वैपरित्य हो रहे हैं छोटे से लेकर बडे तक सब ईश्वर के पालक भूतों से ही हो रहे हैं। कृष्णाष्टमी को भक्ति से करने की वजह से उस जगह में प्रकृति (भूत) के वैपरीत्य कम होजाते हैं। बारिशें भी भूतों की वजह से ही आरहे हैं। इसीलिए जिस जगह पर भगवान पर भक्ति रहती हैं वहाँ बारिश ठीख से बरसता हैं। यह सब कवित्व नहीं हैं,नग्र सत्य हैं। हमने कहा था ना कि यह बात किसी को भी नहीं मालूम है कि भूत मतलब क्या चीज़ हैं, ईश्वर की पालना क्या चीज़ हैं! ये विषय जानने के लिये हमारी रचना जिन्न-भूतों की यदार्थ संघटनाये नाम वाली ग्रंथ को पढें तो यह मालूम होजायेगा कि ईश्वर की पालना क्या है, भूत मतलब क्या हैं?

आप तो अखलकम वाले तो नहीं है। लेकिन सिर्फ हेतुबद्द के साथ न सोचने की वजह से ऐसे बरताव कर रहे हैं कि जिसतरह अखल कम वाले बरताव करते हैं। वह ऐसा है कि!! कृष्ण का चरित्र है, कृष्ण भी हमारी तरह ही पैदा हुआ हैं। जिसदिन वह पैदा हुआ उसका तारीक भी हैं। और वह साल भी है जिसमें उसकी मौत हुई। लेकिन विघ्नेश्वर तो पैदा ही नहीं हुआ, उनकी कोई चरित्र ही नहीं हैं। सिर्फ पुराणों में बनाया गया। माया से बनवाया जाकर असली भगवान की तरह पूजाकिये जा रहा हैं। वास्तव में विनायक है या नहीं? इस बात की योचना किये बगैर अंधेपन के साथ बरताव करने से नास्तिकवाद इसतरह कह रहे हैं कि बिना हेतुबद्दता वाला विनायक है ही नहीं इतनाही नहीं बल्कि यह भी कह रहे हैं कि असल में ईश्वर ही नही है जिसके बारे में शास्त्र बता रहे हैं। जब व्यास अज्ञान की दशा के उमर में था तब पुराण लिखना हुआ, उसमें विनायक के किरदार को लिखना हुआ। सारे पुराण सिर्फ कालक्षेप के लिये लिखे गये थे मगर कर्मक्षेप केलिये नहीं। विनायक के जीवन के बारे ज़रा भी न जानने वाले इनसान, विनायक के उत्सव करने में आगे हैं। कृष्ण के जीवन के बारे में मालूम होने पर भी, कृष्ण मानव के जीवन से संबंदित और मनुष्य कर्मों से बाहर निकलने का ज्ञान को बताने के बावजूद भी, जो लोग कृष्णाष्टमी नहीं मनाते, वे लोग विनायक के जीवन के बारे में मालूम न होने पर भी और विनायक इनसान को जो ज्ञान ज़रूरत है वह कुछ न बताने पर भी, विनायक चतुर्थि को मना रहे हैं। मैं तुम लोगों से हिंदू मत को छोडकर दूसरे मत में जाने केलिये नहीं कह रहा हूँ। हम आप लोगों से यह कह रहे हैं कि हिंदू (इंदू) पथ की उन्नती को जानकर वह कृष्ण जिसने इंदू धर्मों को बताया उसे भगवान की तरह पहचान कर, हर साल को कृष्णाष्टमी करें, ऐसा करने से आप के कर्म नाश होजाते हैं।

कृष्ण को भगवान की तरह न पहचानने के कारण उन्हे अश्रद्धा किया। इतनाहि नहीं सब कवियों ने कृष्ण को श्रिंगार पुरुष की तरह लिखने से, कृष्ण को चिचोरे की तरह हिसाब करलिये। भागवत पुराण में स्वयं पोतना कवि ही तेलुगु में इसतरह लिखा कि कृष्ण मधुरा को जाकर कंस को मारने से पहले ही गोपिकाओं से घूमा करता था, उनसे श्रिंगार में शामिल होता था। संस्कृत में व्यास थोडा विचित्र से लिखा तो उसे तेलुगु ज़बान में तर्जुमा किया हुआ पोतना और भी कल्पित बनाकर और भी विचित्र से लिखा। कृष्ण मधुरा को जाना, कंस को मारना यह सब उनकी ग्यारह साल की उमर में हुआ। क्या ग्यारह साल को ही कोई भी इनसान स्त्रियों से संयोग करता हैं क्या? क्या श्रिंगार में शामिल होता हैं? क्या ये बातें विचित्र नहीं है! उसतरह कृष्ण को गलती से लिखने से, उसके आधार से इनसानों में माया मज़बूत से काम कर के, ऐसा किया कि कृष्ण को चिचोरे की तरह हिसाब करलें। इसीलिये कृष्ण की विषय के बारे में कोई भी सोच नहीं पाये। ९० साल के उमर में कृष्ण भगवद्गीता को बोलने के बाद, पुराणों को लिखा हुआ व्यास अपनी गलती का अहसास करलेके, पुराणों से व्यतिरिक्त भगवद्गीता को संस्कृत में श्लोकों के रुप में लिखा। उतना बडा व्यास ही अपनी गलती को पहचान कर अपने श्लोकों में कृष्ण ने बताई हुई धर्मों को बताया। उसने जो श्लोक लिखे थे उसमें ही कहा था कि वेदपठन,तप,यज्ञ धर्म नहीं है अधर्म हैं। जब इतने बडे कार्य ही अधर्म हैं तो विनायक चतुर्थी भी अधर्म ही हैं। इसलिये अब से वास्तव विषय को मालूम करके वह ईश्वर जो विश्वव्यापि, सृष्टिकर्ता है भगवान बनकर कृष्ण की तरह आया हैं, ईश्वर ही भगवान की तरह गीताज्ञान को कहा हैं, वही भगवद्गीता कह कर जान कर कृष्ण की आराधना कर के ईश्वर को

नज़दीक होने की कोशीश करते हैं। ईश्वर के पास पहुंचनेकेलिये उनका पता (अड्रेस) हमें नहीं मालूम। उस पता के बारे में बतानेवाला ही भगवान हैं, वह भगवान ही कृष्ण हैं। इसलिये कृष्ण जब शरीर के साथ हमारे बीच में हैं तब वह भगवान के रुप में ईश्वर हैं, ऐसा ही जब वह हमारे बीच शरीर से नहीं है तब ईश्वर भगवान हैं कहसकते हैं। शायद समझमें नहीं आया होगा और एक बार ध्यान से सुनिये। कृष्ण जब ज़मीन पर था द्वापर युग में उसे ईश्वर कहसकते हैं जो भगवान के रुप में हैं और कृष्ण जब ज़मीन पर नही था यानि कलि युग में उसे ईश्वर के रुप में भगवान है कहसकते हैं। अबतक बहुत से स्वामीजियाँ, बोधक ईश्वर और भगवान के बीच बगैर फरख के बता चुके थे। लेकिन अब ऐसा नहीं बोलना चाहिये यह साफ तौर पर पहचान के बोल लेना चाहिये कि कौन ईश्वर है, कौन ईश्वर नहीं हैं।

अबतक कृष्ण पर जो भी गलत फेहमियाँ हैं वे सबको मिटाकर भगवान कृष्ण को मालूम करते हैं। अब तक भगवान ने जो कहा वह ज्ञान को नहीं जानने वाले हम अब उन्होने जो कहा उसका सारांश के बारे में मालूम करते हैं। यह बात को साबित करते हैं कि कृष्ण पर भक्ति रखनेवाले गोपि, गोपिकायें उसदिन ही नहीं आज भी मौजूद हैं। कृष्ण पर भक्ति भाव को बढालेकर अपार्थ भाव को यानि गलत भाव को मिटा देते हैं। यह बात दूसरों को बताते हैं कि ज़मीन पर सिर्फ एक कृष्ण ही भगवान हैं।उस नेपध्य में ही विनायक चतुर्थी को छोडकर, कृष्णाष्टमी को मनाते हैं। हम करना ही नहीं बल्कि सबको बताके करवाते हैं। चलिये यह बताते हैं कि हिंदुत्व मत नहीं हैं पथ (रास्ता) हैं। ज़मीन पर चाहे कोई भी मत वाला क्यों न हो उसे इसी पथ में आना ही होगा। यह बात सबको समझ में आये जैसा करते हैं कि आप के मत में जो ईश्वर है वही ईश्वर यह भगवान है। दूसरों को

बदलाने केलिये पहले हमको बदलना होगा। अगर हम बदलें तो हमारे रास्ते पर ही दूसरे चलेंगे। इसलिये हम बदलने केलिये कृष्णाष्टमी से पहले शुरु करते हैं।

पारन त्योहार वास्तव में एक त्योहार नहीं हैं। यह त्योहार जो त्योहार हि नहीं हैं लोगों में त्योहार से भी ज़्यादा प्रमुख्य पाई हैं। कई प्राँतों में इसके कई नाम हैं। इसको कुछ प्राँतों में कनुमा त्योहार कहते हैं तो, कुछ प्राँतों में पारन त्योहार कहते हैं। हम ने यह पहले ही बतादिया कि यह एक खास त्योहार नहीं है फिर भी प्रामुख्य पाई थी। इसीलिए इस त्योहार को हर त्योहार के पीछे लोगों ने लटकालिया। इससे पहले हमने जो भी त्योहार बयान करलिए यानि युगादि हो, संक्रांति हो, दशरा हो होजाने के दूसरे दिन यह त्योहार को आर्य वैश्यों के सिवा सब कम्पलसरिलि अमल किया करते थे। उस दिन मसालों से भरे हुए मांसाहार को खुशी से खाते थे। त्योहारों को औरतें श्रद्धा से करते हैं तो, पारन त्योहार मरद भी श्रद्धा से करते हैं। जो जोश त्योहार के दिन नहीं रहता वह पारन में दिखता रहता हैं। अब हम यह जानने की कोशीश करते हैं कि आखिर यह पारन त्योहार (कनुमा) शुरु कैसे हुआ।

खास कर बोललिए तो त्योहारों को दो प्रकार डिवैड कर सकते हैं। जब त्योहार तयार हुए थे तब तो दो प्रकार के त्योहार नहीं रहा करते थे। बाद में थोडे वक्त को माया का प्रभाव त्योहारों पर भी फैलने से, आध्यात्मिक अर्थ के साथ जुडे हुए त्योहार देवताओं के

त्योहारों की तरह बदलजाने से यह कहना पडा कि त्योहार दो प्रकार के हैं। उन्ही को हम क्षुद्र देवताओं के त्योहार, महा देवताओं के त्योहार कह रहे हैं। इससे पहले हमने जो भी त्योहार बयान करलिये थे वे सब महा देवताओं के त्योहार हैं तो, उनके अलावा ग्रामदेवताओं को पूजनेवाले सब त्योहार क्षुद्र देवताओं के त्योहार कहीं जा रही है। क्षुद्र देवता कहलानेवाले ग्रामदेवताओं के त्योहारों में आराधना के नाम से जानवरों के बलि (खुरबानी) माँगते हैं। यह बात तो सब जानते ही हैं कि खुरबानी दी हुई जानवरों की गोश्त को उस दिन सब खाना आज तक भी हो रहा है। क्षुद्र देवता के पूजायें, खुरबानियाँ गुज़रे हुए तीन युगों में नहीं थे कलियुग के शुरु में ही प्रारंभ हुए हैं। यह भी ज़रा मालूम करते है कि क्षुद्रदेवताओं के पूजाएँ कैसे शुरु हुए।

विश्व की पैदाइश की निशानि के तौर पर युगादि को पहली त्योहार की तरह सब मनाते थे। यह बात तो सब जानते ही है कि युगादि त्योहार चैत्रमास में गरमी के मौसम में मनाते हैं। कृतायुग में उस ज़माने में ज़मीन पर लोग बहुत ही कम रहा करते थे। आज की तरह उस ज़माने में बस्तियाँ या शहरें, रवाना सौकर्य (ट्रान्सपोर्ट) नहीं रहते थे। वहाँ वहाँ छोटे छोटे गाँव रहते थे। आज के जैसे नौकरियाँ जब नहीं थे। सब लोग व्यवसाय करते ही जीते थे (ज़िंदगी गुज़ारते थे)। व्यवसाय के ज़मीन कम, जंगल के प्रांत ज़्यादा रहते थे। जंगल के प्रांतों में जानवर, परिंदे समृद्ध से रहते थे। गर्मी के काल में व्यवसाय के सारे काम खतम होजाने के बाद, सब लोग बगैर काम के जब फ्री रहते हैं उस वक्त ही युगादि की त्योहार आ रही हैं। जिन्होने युगादि को मनाया वे लोग दूसरे दिन काम न होने से सब लोग मिलकर खुशी से पास वाले जंगल में शिकार केलिये जिस दिन

त्योहार होगया उस रात को जाया करते थे। उस रात को सबलोग मिलकर शिकार करते थे। रात में मिलेहुए हिरनों को, हरिणों को,जंगल के सुवरों को, खरगोशों को दूसरे दिन गाँव में लाकर वे सबलोग जिन्होने शिकार केलिये गए हुए सब बराबर उन जानवरों के गोश्त (माँस) को बाँटलेते थे। इसतरह आया हुआ माँस को उसदिन पका कर खाते थे। इसीलिए युगादि होजाने के बाद दूसरे दिन को उस ज़माने में शिकार का दिन कहा करते थे। जानवर इनसानों के आने को देखकर भाग रहे तो उनके साथ भाग कर शिकार करने से उसदिन को पारुवेटा दिन कहते थे। पारुवेटा शब्द आखिर में पारेट शब्द में बदल गया हैं। कालक्रम में पारेट शब्द भी बदलकर पारन शब्द की तरह बदलगई।

पारन का शब्द रायलसीमा के प्रांत में ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं। पहाडों को कनुमायें भी कहते हैं। नलमल कनुमायें का मतलब नलमल पहाड हैं। यह मालूम हो रहा हैं कि मल का मतलब जंगल, कनुमा का मतलब पहाड हैं। कुछ लोग युगादि के रात को पासवाले पहाड को जाकर शिकार करके जानवर को लालिया करते थे। इसलिये उसदिन को कुछ प्रांत के लोग कनुम त्योहार भी कहते हैं। इसतरह युगादि के दूसरे दिन शुरु हुई कनुम त्योहार या पारन त्योहार आज सब त्योहारों के पीछे के दिन ज़रुर रहना हो रहा हैं। पूर्व में जंगल को जाकर जानवरों को शिकार करके त्योहार मनाते थे तो, आज गाँव में ही जानवरों को पालकर कर उन्हे मार कर खारहे हैं। उन दिनों के जैसा न जंगल को जाने का काम हैं, न भाग कर शिकार करने का काम। अगर पैसा हैं तो किसी भी तरह का जानवर का माँस हो मिलजाता हैं। यह विधान द्वापर युग में ही शुरु होकर अमल में है तो, कलियुग के प्रारंभ में ही और एक विधान प्रारंभ हुआ।

वे देवतायें जो कृतायुग में नहीं थे वे सब त्रैता युग से मनुष्यों के बीच स्थान बनालिये। द्वापर युग के आखिर में त्योहारों में रहनेवाली आध्यात्मिकता खत्म होजाकर ऐसी हालत आगई कि त्योहार बोले तो देवताओं की आराधनायें हैं। एक एक त्योहार में एक एक देवता की पूजा अमल होते आरही है। आखिर में त्योहार ऐसे बनगये कि दशरा बोले तो दुर्गादेवी की त्योहार है और शिवरात्रि मतलब शिव पार्वतियों का त्योहार है, इसतरह सारे त्योहार बदलगये। कलियुग के प्रारंभ में ग्रामदेवतायें यानि पेद्दम्मा, सुंकलम्मा, एल्लम्मा, पोलेरम्मा कहनेवाले वगैरा औरत देवताएँ प्रांतों के हिसाब से कई नामों से तय्यार हुये। उस समय में ही पहले से जो भी त्योहार रहा करते थे वे सब महा देवताओं के त्योहार हैं, बाद में जो भी त्योहार तयार हुये वे सब क्षुद्र देवताओं के त्योहार कहे गए। द्वापर युग के अंत में ही युगादि, शिवरात्रि, दशरा, संक्रांति वगैरा त्योहारों के साथ पारन त्योहार भी जुडा हुआ रहता था। कलियुग के शुरुआत के दिनों में ही मांस खाने वाले ज़्यादा होकर सीधे मांसभक्षण को ही प्राधान्यता देनेवाले त्योहारों को तयार करना चाहा। उसी उद्देश से ही वे त्योहारों को खास करके तयार करलिये जिनमें जानवरों के खुरबानियाँ है। वही आज के क्षुद्रदेवता या ग्रामदेवता के त्योहार है। कृतायुग में आध्यात्मिक त्योहार रहा करते थे तो त्रैतायुग से बदलते हुए आकर, त्योहारों में देवताओं के किरदार ज़्यादा होते हुए आकर, द्वापर युग के अंत्य तक, हर त्योहार को पारन त्योहार लगलेकर त्योहारों का अर्थ ही खराब होगया तो, कलियुग के प्रारंभ में ही ग्रामदेवताओं के त्योहार भी शुरु होकर उन त्योहारों में माँसभक्षण ही प्रधानपात्र की तरह रहगई। उनके त्योहारों में माँसभक्षण ही नहीं बल्कि नशीलि पानीय इस्तेमाल करना भी होरहा हैं। पूर्व में बडी आत्मज्ञान से शुरु हुये त्योहार आज

बहुत ही अज्ञान में फसगये। जो काम सब लोग कर रहे हैं वही हमें भी करना चाहिये समझकर कर रहे इनसान यह बिलकुल नहीं सोच रहे हैं कि सब क्या काम कर रहे हैं, और उसकी असलियत यानि पूरी जानकारि क्या हैं इसका खयाल सोंच या फिकर बिलकुल भी नहीं हैं। अनेक विभागों में बुद्धिमान भी एक ही एक भक्ति के विषय में अंधेपन से मूढविश्वास पर ही प्रयाण कर रहे हैं। कुछ लोग इनको देख कर इस फैसले पर आगये कि ईश्वर ही नहीं है।

पहले आध्यात्मिकता से शुरुहुए त्योहार कालक्रम में बदलते हुए भक्ति में आकर, भक्ति से मूढभक्ति में आकर आखिर में नास्तिकत्व तक आगए। आखिर ऐसे लोग भी तयार होगए कि घर में मेरी बीवी करलेगी लेकिन त्योहारों पर मुझे उतना विश्वास नहीं हैं। महात्योहारों से क्षुद्रदेवताओं के त्योहारों तक आए हुए लोगों को उन्हे छोडना चाहे तो भी ग्रामदेवताएँ उन्हें नहीं छोडेंगें। जो लोग माफिया गूॅप में जा चुके हैं मरेतक उनको उसमें ही गुज़ारना पडेगा, बाहर आनाचाहे तो भी माफिया की गान्ग बाहर आने नहीं देगी। अगर जबरदस्ति से बाहर पडना चाहे तो माफिया गान्ग से ही डेंजर हैं। ऐसाही जो व्यक्ति ग्रामदेवताओं की भक्ति में पडता हैं वह ग्रामदेवताओं से बाहर नहीं पडसकता। अगर बाहर पडना चाहे तो भी वे देवताएँ बाहर पडने नहीं देंगें। अगर वे लोग उनके भक्ति को छोडदेने पर भी उसको वे देवताओं से ही प्रमाद रहता हैं। इस विषय में ग्रामदेवताओं से तकलीफ उठानेवाले बहुत से लोगों को हमने देखा था। जिसतरह पूरे तरीके से पोलिस की सुरक्षा रखनेवाले को माफिया कुछ बिगाडनहीं सकती वैसा ही पूरा आत्मज्ञान जिसे मालूम हैं उसका क्षुद्रदेवताएँ कुछ नहीं बिगाड सकते । इसलिए कोई भी हो, अगर किसी देवता के जाल में फसे हुए लोग हो, अब से आत्मज्ञान मालूम करने की

कोशीश कर के ज्ञान मालूम करने के बाद क्षुद्र देवताओं की भक्ति से छुटकारा पासकते हैं। वरना कोई भी उनसे छुटकारा पा नहीं सकते। जिनके पास ज्ञान नहीं रहता उन्हे ग्रामदेवताएँ ही नहीं बल्कि छोटे छोटे ग्रह (जिन्न) भी तकलीफ पहुंचा सकते हैं। जिसके पास आत्माज्ञान रहता हैं उसे देखकर छोटे जिन्न हो, ग्रामदेवताएँ हो, महादेवताएँ हो सब डर रखते हैं और इज्ज़त देते हैं। जिनके पास ज्ञान है उनके पास विनय विनम्रता के साथ पेश आते हैं। इसलिये पूर्व में ही हमारे बडे लोग आत्मज्ञान को लोगों को बतानेकेलिये त्योहारों को हमारे बीच में रखे थे। चलिये अब के अज्ञान के विधान को छोडकर, अज्ञान के वातावरण में कर रहे त्योहारों को, भाव में बदलाव लालेकर, ज्ञान को देनेवाली वातावरण में मनाते हैं। हमारे जीवनों में ज्ञान को बडालेकर ज्ञान पंडितों की तरह तयार होते हैं।

परमात्मा वह हैं जो आजतक प्रपंच में किसी से पहचाना नहीं गया, न उसे कोई फैन्ड औट कर सकता हैं, ना ही वह किसी को मालूम हैं। परमात्मा को ही ईश्वर भी कह सकते हैं। ईश्वर को तेलुगु ज़बान में देवुडु कहते हैं ऐसा ही इंग्लिश में गाड और उरदू में अल्लाह। देवुडु शब्द का भी यही मतलब है कि किसी को भी मालूम न होनेवाला। अगर खुले तरीके से बयान करें तो देवुडु यानि, ढूँढेजानेवाला या तलाश किये जानेवाला के हैं। यह बात किसी को नहीं मालूम है कि देवुडु या ईश्वर कहनेवाला कौन हैं, कैसे रहता हैं, उसका नाम क्या हैं, उसका स्थान कहाँ हैं उसका काम क्या हैं। तो फिर इसतरह रेहनेवाले ईश्वर से हमें क्या काम है? हमें उसके बारे में क्यों सोचनी

चाहिये? इसतरह हमें बात नहीं करना चाहिये। ज़मीन पर जीनेवाली हर एक प्राणि को, हर इनसान को ताकत की ज़रुरत हैं। शरीर में हर हरकत केलिए, हर भाग केलिये ताकत ज़रुरत हैं। शरीर में जहाँ ताकत नहीं रहती है वहाँ बीमारी आजाती हैं। यह बात तो सब जानते ही हैं कि जब बीमार होते हैं तो ताकत नहीं रहती, कमज़ोर सी रहती हैं।

शरीर में कहीं पे भी अगर बीमारी चलेजानी हैं तो, शरीर को ताकत की ज़रुरत होती हैं। जब शक्ति रहती है तो, बीमारी भी नहीं रहती। इनसान के जिस्म को ताकत कहाँ से मिल रही हैं। अगर खुद से यह सवाल करके देखलें तो, यह कहसकते हैं कि प्रपंच में रहनेवाले हर प्राणि को, ताकत प्रकृती से मिलती हैं। फिर ऐसा अपने अंदर सवाल करलो कि क्या प्रकृती ताकत की निलय हैं? इसतरह पूछे तो मालूम हो रहा हैं कि ताकत प्रकृती की खुद की नहीं हैं।हर प्राणि का शरीर प्रकृती से तयार किया गया है। फिर भी शरीर को जो ताकत वह देती है वह प्रकृती के पास नहीं हैं। अब कोई भी हम से इसतरह सवाल कर सकता हैं कि अभी आपने ऊपर के वाक्य में कहा कि प्रकृती से ही सब को ताकत मिल रही हैं, फिर एक मिनट भी खत्म नहीं हुआ आप बात पटलकर झूट कह रहे हैं कि प्रकृती के पास ताकत ही नहीं हैं। इस सवाल पर हमारा जवाब यह हैं कि! यह बात सच ही है कि ताकत प्रकृती से ही मिल रही हैं लेकिन ताकत प्रकृती की नहीं हैं। वास्तव में ताकत परमात्मा (ईश्वर या गाड या अल्लाह या देवुडु) की हैं। यहाँ पर खास गौर करनेवाली बात यह हैं कि परमात्मा का कोई अर्डेस (पता) नहीं हैं। यह भी किसी को नहीं मालूम कि आखिर वह कौन हैं। इसलिए शक्ति उसी की होने पर भी ईश्वर खुद कहीं पे भी मालूम हुए बगैर अपनी ताकत को प्रकृती के

द्वारा पहुंचारहा हैं। प्रकृती को जो ताकत परमात्मा से मिला वह उस ताकत को इनसान को दे रही हैं। जिनलोगों को ईश्वर पर विश्वास नहीं है वह समझते हैं कि यह पूरी ताकत प्रकृति की ही है। ईश्वर उसके और मनुष्य के बीच में प्रकृती को रखलिया हैं ताकि लोगों को उसके बारे में मालूम न हो। वह ईश्वर तो कुछ नहीं करता है लेकिन वह प्रकृती के ज़रिये सब कुछ करवारहा हैं। प्रकृति के पीछे जो रहता है वह ईश्वर ही है। फिर भी ईश्वर कहीं पर भी किसी को भी मालूम नहीं पडता, हमको जो भी मालूम होती है वह सबकुछ प्रकृति ही है।

पूरा प्रपंच शक्ति से ही चलरही हैं। फिर भी यह किसी को नहीं मालूम है कि वह ताकत ईश्वर की हैं। हमारे अंदर की माया हमें इसतरह के भ्रम में रखी हैं कि यह सब ताकत स्त्रीलिंग देवता यानि प्रकृती की ही हैं। लेकिन असल में शक्ति रखनेवाला ईश्वर है, ईश्वर से उसे जो ताकत मिलती है वह ताकत को देनेवाली देवता (प्रकृती) हैं। देवुडु शब्द से ही देवता का शब्द पैदा हुआ हैं। उसीतरह और एक ऐसी जोडी को देखते हैं जो परमात्मा प्रकृती की तरह हैं। यह तो सब जानते ही है कि दीप (दिया) रोशिनि देती हैं। रोशिनि देनेवाली कोई भी चीज़ हो खुद प्रकाश होते हुये, अपने प्रकाश के ज़रिये दूसरों को रोशिनि देति हैं। जहाँ रोशिनि है वहाँ दीप है कहसकते हैं। जो जलरहा है वह दीप है तो छोटी रोशिनि के तुकडे को भी दीप की तरह ही हिसाब करना चाहिये। यहाँ कुछ लोगों को शक पैदा होकर एक सवाल पूछ सकते है। वह यह हैं कि! छोटी सी आग की चिंगारि भी थोडा बहुत रोशिनि दे रही हैं ना! ऐसी सूरत में दीप ही रोशिनि को देती हैं कहने के बदले में आप ऐसा भी तो कहसकते हैं कि अग्नि भी रोशिनि देती है कहसकते हैं ना! इसतरह का सवाल कर सकते

हैं। इसके लिये हमारा जवाब यह है कि! यह बात वास्तव है कि दीप हो या अग्नि हो रोशिनि देती हैं। यहाँ एक सूत्र (फार्मुला) के प्रकार बोलें तो जो भी रोशिनि देती है उसे हमने दीप कहा हैं। इसीप्रकार हमने ऊपर दीप कहा हैं। सब इसतरह समझना सहज ही है कि रोशिनि दीप की ही हैं। सब लोग समझतें हैं कि प्रकृती से ही ताकत मिलरही है लेकिन असल में वह ताकत तो ईश्वर से ही मिल रही हैं। उसीतरह रोशिनि तो दीप से ही आरही है लेकिन वह रोशिनि दीप की नहीं हैं बल्कि दीप के पीछे किसी को मालूम हुये बगैर रहनेवाली अग्नि की हैं। अग्नि अलग है, रोशनी देनेवाली दीप अलग हैं। जिसतरह जलनेवाली चीज़ को दीप कहते हैं उसीतरह दीप रोशिनि देनेकेलिये जो कारण हैं उसे अग्नि कह रहे हैं। अग्नि की चिंगारि को हो या आग के कण को हो अग्नि कह सकते हैं ना! बोले तो, सूत्र के प्रकार वह रोशिनि दे रही हैं। इसलिए उसे अग्नि नहीं कहना चाहिए। रोशिनि देनेवाली का दीप कहना चाहिए। ईश्वर कहीं पे भी हो सब जगह फैला हुआ हैं,लेकिन सिर्फ शक्ति तो प्रकृती के द्वारा ही मिलती हैं। ऐसा ही आग सब जगह है, लेकिन सिर्फ रोशिनि तो दीप या भडकनेवाली चिंगारि के द्वारा ही आरही है। कांति किरण अग्नि की ही हैं फिर भी,वह दीप के द्वारा ही आ रही हैं। शक्ति ईश्वर की ही हैं यह मालूम होने पर भी, ईश्वर किसी को मालूम हुये बगैर प्रकृती को जिसतरह अपने सामने रखलिया हैं, ऐसा ही रोशिनि अग्नि की है कह कर सबको मालूम होने पर भी अग्नि न दिखते हुए सिर्फ अपनी रोशिनि (उजाले) को सामने रखली हैं। जिसतरह ईश्वर के आढे प्रकृती हैं, अग्नि के आढे रोशिनि देनेवाली कुछ भी चीज़ रहसकती हैं। उसीको अगर छोटा है तो दीप, बडा है तो आँच कह रहे हैं। ईश्वर का शब्द हम नित्य इस्तेमाल करते हैं, फिर भी जिसतरह ईश्वर किसी को

मालूम नहीं है, उसीतरह हम समझते हैं कि हमने अग्नि को देखा है और अग्नि का शब्द हम हरदिन इस्तेमाल करते रहने पर भी, हक़ीकत में अग्री कैसी है यह बात किसी को नहीं मालूम। जिसतरह ईश्वर किसी को नहीं मालूम उसीतरह ही आग भी किसी को नहीं मालूम।

सब कहते हैं कि ईश्वर ही हम सबको पैदा कर रहा है और वही सबको मारडाल रहा है यह बात तो सच ही है फिर भी, ईश्वर कौन हैं यह किसी को नहीं मालूम। सबको मालूम हुए जैसा सबको प्रकृती ही पैदा कर रही हैं, मार रही हैं। उसी तरह आग सबको जलारही है और रोशिनि भी दे रही हैं। अगर अग्रि के बारे में कोई इसतरह कहता हैं तो वह बात भी सच ही हैं फिर भी,यह किसी को नहीं मालूम हैं कि अग्रि क्या हैं। कुछ चीज़ों के बारे में हम ऐसा बात करते हैं कि हम उसके बारे में सबकुछ जानते हैं फिर भी, वास्तव में यह कहसकते हैं कि उनके बारें में हमें कुछ नहीं मालूम। यहाँ थोडे लोग आश्चर्य चकित होकर ऐसा पूछ सकते हैं कि क्या हमें कुछ गलत फहमी हुई है या फिर आप हमें गलत रास्ता पकडाने की कोशीश कर रहे हैं? इसकेलिये हमारा जवाब यह है कि आप लोग इसतरह समझने में कोई गलती नहीं हैं। क्योंकि किसी को भी हो अपने आप पर हो या हम पर हो शक होसकता हैं। हक़ीकत में ईश्वर के बारे में मैं कितना भी समाचार क्यों न बताऊँ सच कहें तो मुझे ईश्वर नहीं मालूम। ऐसा ही एक शास्त्र को और उसमें रहनेवाले सूत्र के मुताबिक अगर बात नहीं करते हैं तो, वह बात अंधविश्वास से बात किये जैसा होगा। इसतरह अंधविश्वास से बात किये बगैर यानि जो जलती है वह दीप हैं इस सूत्र को आधार करलेके बात करने से, मैं भी अब तक दीप को ही देखा हूँ मगर असल में अग्रि को नहीं देखा।

एक जब मैं ने भी ऐसा ही समझा कि मैं ने अग्नि को देखा है,न जलते हुये थोडा जलकर लाल रंग से दिखनेवाली लकडी को अग्नि समझ बैठा था। लेकिन आज यह मालूम होगया है कि यह सब अंधविश्वास हैं, वास्तव में मैं ने अग्नि को नहीं देखा हैं। अब थोडे हद तक यह समझमें आगया कि इसतरह के कई बातें जो हमें नहीं मालूम है लेकिन हम समझते हैं कि हमें सब मालूम है।

यहाँ कुछ लोग एक सवाल पूछसकते हैं। वह यह है कि! आपने खुद बहुत बार कहा कि प्रकृती अलग है, ईश्वर अलग हैं। जो नहीं दिखता वह ईश्वर हैं, जो दिखता हैं वह प्रकृती हैं। अब प्रकती में एक भाग अग्नि को पकड के कह रहे हैं कि वह भी नहीं दिखती? इसकेलिए हमारा जवाब यह है कि! परमात्मा (ईश्वर) नहीं दिखता। ऐसा ही आकाश, हवा, अग्नि ये तीन भाग भी नहीं दिखते। किसी ने न आकाश को देखा न हवे को। ऐसा ही अग्नि को भी किसी ने नहीं देखा। फिर भी बहुत से लोग गलती से ऐसा समझ रहे हैं कि उन्होने अग्नि को देखा हैं। वास्तव में आकाश, हवा, अग्नि ये तीन दिखनेवाले नहीं हैं। सिर्फ ज़मीन, पानी दो ही दिखनेवाले चीज़ों की तरह बनाए गए। अगर तुम लोग ऐसा पूछोगे कि आप को यह बात तब ही बतानी चाहिए था ना, इतनी देरी से क्यों बता रहे हैं तो उसके जवाब में हम कहते हैं कि इसको बताने का समय अब ही हैं इसीलिए उस वक्त नहीं बताया था। मिसाल के तौर पर पेड को पैदाहोने वाले पत्ते को पैदा होते ही फौरन खासकते हैं। लेकिन वही पेड को पैदा होनेवाले फल को पैदा होते ही फौरन नहीं खासकते। ऐसा ही आध्यात्मिक में कुछ बातों को उस वक्त ही बोलने पर समझमें आयेंगे। कुछ बातें कुछ वक्त के बाद कहने पर ही समझ में आसकते हैं। आकाश, हवा नहीं दिखता हैं यह बात कहते ही फौरन हर एक जन भी मान जायेगा।

उनके साथ तब ही अग्नि भी नहीं दिखती कहा होता तो उस बात को असत्य समझते थे। इसलिये हम भी उस वक्त कहे बगैर अब कह रहे हैं।

हम सब समझते हैं कि हम ईश्वर को जानते हैं उसीतरह हमलोग अग्नि के बारे में भी जानते है लेकिन सच तो यह है कि न किसी ने ईश्वर को देखा ना हि अग्नि को देखा। पहले ईश्वर के विषय में कुछ लोग मानजायेंगे कि हाँ हम ईश्वर के बारे में नहीं जानते और नाहि हमने उसे देखा है मगर अग्नि के विषय में माननेकेलिए थोडा पीछे हटेंगे लेकिन खुले तरीके से बयान करलेने के बाद अगर थंडे दिमाग से सोचने के बाद ज़रुर मानजायेंगे। ईश्वर का विषय पहलेवाला है तो अग्नि की विषय दूसरी हैं। ऐसी ही और एक विषय भी हैं। तीसरी विषय में भी सब मनुष्य गलतफहम में हैं। पहलेवाली ईश्वर की विषय को तो बडी आसानी से मनवालेसकते हैं कि हम लोगों ने उसे नहीं देखा। दूसरीवाली आग्नि की विषय में हम गलतफहमी में है कह कर मनवाने में शायद थोडी तकलीफ होगी। अब यह कहसकते हैं कि तीसरी वाली विषय में मनवाने केलिये बहुतबहुत बहुत ही मुशकिल होगा। आखिर इतनी मुशकिल वाली वह तीसरी बात क्या हैं अब हम देखते हैं।

सुख, आनंद दो भी समान शब्द ही है जो संतोष से संबंध रखते हैं, फिर भी कहसकते हैं कि सुख अलग है और आनंद अलग हैं। सुख वह है जो इंद्रियों के ज़रिये आती है। आनंद वह है जो मनोभाव के द्वारा आती हैं। ज़बान (जीप) से मज़ेदार खाना खाते हुये कितना भी सुख अनुभव क्यों न करें,नाक के द्वारा बहुत ही खुशबुदार स्मेल को सूँगते हुये सुख को पाने पर भी,आँख से कितना भी अच्छा दृष्य को देखे उस वक्त जीव कितना भी सुख को क्यों न पाये उसके

आँख में ज़रा भी पानी नहीं आता। लेकिन मनोभाव में आनेवाले आनंद को जब पाते हैं तब किसी के भी आँख से पानी आता हैं। इससे यह आसानी से समझमें आ जाता हैं कि इंद्रिय का सुख अलग है और मनो आनंद अलग हैं। मनुष्य पाँच इंद्रिय के द्वारा कितना भी सुख पाले आँख में से आनंद भाष्प नहीं आते। ऐसा ही मनुष्य अपने इंद्रियों के द्वारा अच्छा ज्ञान जब सुनता हैं, या पढता हैं तब मनो भाव में आनंद होने से आँखों में आनंद भाष्प आते हैं। जब चलनचित्र (सिनेमा) को जब देखते हैं तो कुछ दुख के संघटनाओं में, देखनेवाले इनसान भी वहाँ की भाव से ऐक्य होजाने से देखनेवाले के आँखों को पानी आजाना हो रहा हैं। इसके प्रकार मनुष्य जब मनोभाव को पाता है तब पाया हुआ भाव कौनसा भी हो चाहे वह आनंद हो, दुख हो इनसान के आँखों में पानी आना हो रहा हैं। इंद्रिय के कष्टसुख में किसी के भी आँखों में पानी नहीं आते। आनंद दुख में ही इनसान के आँखों में पानी आते हैं जिसे मनोभाव कहते हैं।

अबतक जो भी बयान किया था वह सब तो हम जानते हैं। सब के अनुभवों में इधर इंद्रिय के कष्ट सुख,उधर मनोभाव के आनंद दुख रहते हैं। तो कह सकते हैं कि इंद्रिय के सुखों को ,मनोभाव के आनंद को बडा फरख कुछ नहीं हैं। सुख और आनंद दो भी अनुभव ही कहलाते हैं। तो वह कहते है ना कि पानी के दूध,गाढे दूध उसी तरह सुख में और आनंद में भी थोडा फरख हैं। सुख में आँख से पानी नहीं आते, आनंद में आँखों में से पानी आते हैं। सिर्फ इतना ही फरख है। तो यहाँ पर प्रत्येक से बोललेनेवाली बात यह हैं कि ऐसी एक आनंद है जो प्रपंच भावों में पानेवाले आनंद से भी कई गुना ज़्यादा पाते हैं। ऐसी प्रत्येक आनंद एक दैवज्ञान के विषय में ही मिलता हैं। कई प्रपंच संबंदित भाव आनंदों को पाया हुआ होकर, एक

दम आत्मानंद का भाव पाने से,वह आनंद कितनी बडी है जब मालूम होता हैं। आत्मानंद के कोई हद नहीं रहते हैं। जब तक इनसान आत्मानंद का अनुभव अहसास करता हैं तब तक उसके आँखों में आनंद भाष्प आते ही रहते हैं ऐसे आनंद को मनुष्य अपने जिंदगी में ऐसे आनंद को कभी भी पाया हुआ नहीं होगा। प्रपंच के विषयों में भाव आनंद को पाने पर भी, प्रपंच आनंद और आत्मानंद में कई गुना फरख रहता हैं। मनुष्य इस खदर सुकून हासिल करता है कि मैं ने आज तक ऐसी आनंद को प्रपंच में कभी भी कहीं भी नहीं पाया हूँ। जिसने उस आनंद का अनुभव पाया उसे इस बात का अहसास होजाता है कि ऐसी आनंद कितने करोड खर्चा करने पर भी नहीं आती।

इतनी बडी खुशी हमें कहाँ मिलती है कह कर अगर कोई पूछता है तो, कहसकते हैं कि वह आनंद सिर्फ एक आत्मज्ञान में ही मिलसकती हैं। इस बात के बदले में कुछ लोग एक सवाल पूछ सकते हैं। वह यह है कि! हमने बहुत आध्यात्मिक ग्रंथें पढें थे। कई आध्यात्मिक उपन्यासों को सुने थे। कई तीर्थयात्र किये थे। बाबाओं की,महर्षियों की सेवा किये थे। हमने समझा था कि थोडा बहुत ज्ञान हमने भी हासिल किया होगा। लेकिन जिस आनंद के बारे में आप बयान कर रहे हैं वह तो हमें नहीं हुआ हैं। इसतरह सवाल पूछ सकते हैं। इसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि! खासकर यह बताते हुए मैं ने कहा था कि जो व्यक्ति पानी में डूबा है उसका पूरा जिसम भीगा होजाता हैं। तो कुछ लोग तेल में डूबकर हमारा जिस्म क्यों नहीं भीगा कहें तो,उसके जवाब में मैं यह कहसकता हूँ कि आपने जिसमें डूबा वह तेल है और मैं ने जिसका बयान किया वह पानी है। लेकिन बहुत से लोग बडी टब में स्टाक रखे हुये तेल को देखकर,उसमें पत्थर डालकर,पत्थर के

लगने से हिलरहा तेल को देखकर पानी ही समझकर, उसमें डूबें तो शरीर भीगा होने पर भी वह पानी का गीलापन नहीं हैं। तेल का जिगेटपन लगले रहा हैं। इसलिये आप एक बार चेक करलीजिये कि जो ग्रंथ आप लोग पढ रहे हैं क्या वे आध्यात्मिक ग्रंथ हैं या नहीं। ऐसा ही आप लोग जो भी सुन रहे हैं वे ज्ञान विषय है या नहीं एक बार चेक करलीजिये। जिसकी सेवा आपने की क्या वे सचमें ज्ञानी है या नहीं यानि सिर्फ ज्ञान की भेषडाले हुये हैं!एक बार गौर से चेक करलीजिये। अगर आप को आत्मानंद नहीं मिल रहा हैं तो यह समझलीजिये कि जो कुछ आपने पढा, जो कुछ आपने सुना वह आत्माज्ञान नहीं हैं। असली (निज) दैवज्ञान के लिये अन्वेषणा (खोज) कीजिये। अगर आप विज्ञता से श्रम करें तो ज़रुर आत्मा ज्ञान हासिल होता हैं। उससे आत्मानंद को पासकते हैं। वही बडी आनंद हैं, इसलिये उसे ब्रह्मानंद भी कहसकते हैं।

अब असल बात पर आते हैं। इनसान को सब से बडी आनंद चाहिए तो उसे आत्माज्ञान को मालूम करना पडेगा। आत्मज्ञान मालूम होना है तो जब गुरु बताता है तब ही मालूम होगा। दैवज्ञान गुरु से ही मालूम होता हैं। प्रपंच में गुरु को पाना बडा मुशकिल का काम नहीं हैं। बहुत से गुरु कई नामों से मौजूद हैं। उनमें से काषाय के कपडे पहननेवालों से लेकर दिगंबरों तक, बाल दाडि पाले हुए लोगों से शुरु होकर बाल निकाले हुये सन्यासों तक, आदिशंकराचार्य से लेकर अचल सिद्धाँतियों तक, कानों में मंत्र बोलने वाले स्वामियों से शुरु होकर नाक पर ध्यान रखने वाले महर्षियों तक गुरुओं की तरह बहुत से लोग हैं। बहुत से लोग ऐसा समझ सकते हैं कि इतने सारे गुरुओं में से एक गुरु को आश्रय करके आत्मज्ञान को मालूम कर सके तो आनंद हासिल होसकता हैं। तो हम यह बताना चाहते हैं कि!

हमने यह कहा कि गुरु बोलकर नाम बहुत से लोग नाम रखलेने पर भी उनमें से जो गुरु हैं उसीके द्वारा ही ज्ञान, ज्ञान के द्वारा ही आनंद हासिल होसकता हैं। इतने सब लोगों में खूब अच्छे से बोधा करनेवाले को, बडे नाम वाले को चुनलेकर उसे गुरु की तरह तुम स्वीकार करलें तो भी कोई बात नहीं। पानी समझकर यकीन करके तेल में कूद कर पूरे शरीर पर जिगेटपन लगालेने के बजाये, पहले ही तुम जिस व्यक्ति के पास गये हो वह गुरु है या नहीं है कह कर चेक करलेने की ज़रुरत हैं। सूत्र के प्रकार गुरु से ही ज्ञान हासिल होता हैं। इसलिये गुरु के विषय में थोडा सावधान रहना ज़रुरी हैं। गुरु के विषय में सावधान रहने की क्या ज़रुरी हैं, कौनसा भी गुरु कहें वह दैवज्ञान ही तो होता हैं हेना! इसतरह कुछ लोग समझें तो, जलनेवाला हर चीज़ भी अग्नि ही हैं ना कहे जैसा होगा। जिसतरह अग्नि के विषय में गलतफहमी से ऐसा समझलिया था कि हमलोगों ने अग्नि को देखा है, उसीतरह ऐसा समझते हैं कि ज़मीन पर बहुत से गुरुओं को हमने देखा हैं, हमारा भी गुरु हैं। वास्तव में जिसतरह ईश्वर, अग्नि मालूम नहीं होते उसीतरह गुरु भी किसी को मालूम नहीं होगा। कुछ लोग कहसकते हैं कि अरे यह क्या बात है भई गुरु कैसे मालूम नहीं होगा? यानि हम तो गुरु को जानते हैं और हमारे गाँव में चार गुरु हैं। बगलवाले गाँव में दस गुरुयें हैं।

चाहे कितने भी लोग ज्ञान की बोधा करें वे सब सिर्फ बोधक ही होते हैं, मगर गुरु नहीं होते। आज ज़मीन पर कौन कुछ भी सिखायें उसे बाक़ी लोग गुरु ही समझ रहे हैं। तो यह बात अच्छे से जानलें कि जो भी बातें वे बोलते हैं वे सब बातें पहले ही दूसरों के ज़रिए बोले गए थे, पहले से बोली हुई बातों को बतानेवाला सिर्फ बोधक ही कहलाता हैं, लेकिन वह गुरु नहीं हैं। जो व्यक्ति गुरु होता

है वह प्रत्येक होता हैं। यह पहचानना मुमकिन नहीं हैं कि फलाना वाला ही गुरु हैं। चाहे ज्ञान किसी से भी बोलीजाये पहली ज्ञान तो सिर्फ गुरु के मुंह से ही आई हुई होती हैं। शक्ति तो ईश्वर की ही हैं फिर भी जिसतरह वह प्रकृती के द्वारा आती हैं, रोशिनि अग्नि की ही है फिर भी जिसतरह वह दीप के द्वारा आती हैं, ज्ञान गुरु का ही हैं फिर भी बोधक के द्वारा बुलवाया जारहा हैं। इसलिये हम यह कह रहे हैं कि बोधाकरनेवाला गुरु नहीं हैं। इस हिसाब के प्रकार इनसान गुरु को कभी भी जान नहीं सकता या पहचान नहीं सकता। कभी न कभी एकबार प्रपंच में गुरु इनसान की तरह आकर बोधा करेगा। यह मालूम होना मुमकिन नहीं हैं कि आखिर वह इनसान कौन हैं जो गुरु की तरह आया हैं। बोधा करनेवाला बोधक है इस सूत्र के प्रकार, जब गुरु बोधा करता हैं तो तब उसे भी बोधक के नीचे ही जमा करना पडेगा। इसीलिये यह कहसकते हैं कि ज़मीन पर गुरु को कोई भी पहचान नहीं सकता। और एक सूत्र भी हैं कि दैवज्ञान गुरु के सिवा किसी भी इनसान को नहीं मालूम। और एक सूत्र के प्रकार इसतरह है कि ईश्वर का ज्ञान ईश्वर ही जानता हैं। ये दो सूत्र जब ही बराबर होंगें तब यह बात मालूम होजायेगा कि गुरु और ईश्वर दोनों एक ही हैं। ईश्वर मालूम होनेवाला नहीं हैं इसलिये गुरु भी मालूम होनेवाला नहीं हैं। अगर गुरु को मालूम करलिये तो ईश्वर को भी मालूम किये जैसा ही होगा। इसलिये गुरु कौन हैं यह भी नहीं मालूम,ऐसा ही यह भी नही मालूम है कि ईश्वर कौन हैं। यह बात ***गुरु*** नाम के ग्रंथ में पहले ही लिख चुके हैं। ज़मीन पर कोई भी हो अगर ऐसा कहते हैं कि हम गुरु हैं तो, वे वास्तव में बोधक ही होते हैं। अबतक हमलोगों ने यह मालूम करलिये कि ताकत (शक्ति), रोशिनि, आनंद कैसे मिलता हैं।

१. परमात्मा → प्रकृती → शक्ति x बीमारी

२. आग्नि → दीप → रोशिनि x अंधेरा

३. गुरु → ज्ञान → आनंद x दुख

पूर्व में तीन युगों में मालूम हुये तीन विधान कलियुग के प्रारंभ में ही पोशीदा होगये। इसतरह पोशीदा (यानि वक्त के साथ साथ काल गर्भ में मिलगये) होजाने से, इस मक़सद से कि आत्मज्ञान को आफत पहुँचेगी, कुछ बडे लोगों नें जो आत्मज्ञान जानते हैं उन्होने यह मालूम होने केलिये कि प्रकृती और दैवज्ञान क्या हैं, यह समझमें आने केलिये कि शक्ति और आनंद कहाँ से मिलता हैं उनके उदाहरणों की तरह, एक पहचान के तौर पर दीप को दिखाना हुआ।यह पूरा विधान मालूम होने केलिये खासकर साल में एक दिन को चुनकर, उसदिन घर के अंदर और घर के बाहर दीप को जलाकर उसकी पूरी जानकारी कहना हुआ। उस दिन सब घर के अंदर एक दीप, बाहर एक दीप को जलाकर उसके अर्थ को बुलवालेते थे। इनसानों में से अज्ञान को निकाल कर ज्ञान की अहसास दिलाने केलिये किया जारहा आचार क्रिया होने से, उस कार्य को त्योहार की तरह करना हुआ। अज्ञान अंधेरी की निशानि हैं, ज्ञान रोशिनि की निशानि है। इसलिये अंधेरे दिन यानि अमावास्या के दिन दीप को रखके दिखाना हुआ। हर साल आश्वीयुज मास में आनेवाली अमावास्या के दिन को यह पूरा आध्यात्मिक विधान दीपावली (दीवाली) की तरह मनालेना हो रहा हैं।

इनसान शरीर के अंदर, शरीर के बाहर की भी ज्ञान रखनी चाहिये, इसी उद्देश से शरीर को हम निवास करनेवाले घर की तरह कम्पार करके, बडों ने ऐसा किया कि घर के अंदर और

घर के बाहर दीप रखे। क्योंकि वह ज्ञान के बारे में बतानेवाली सांप्रदाय त्योहार होने से पूर्व में घर के अंदर एक दीप को, घर के बाहर एक दीप को रखा करते थे। आज पूर्व में रखा हुआ अर्थ और आचार कालगर्भ में मिलजाकर यानि न मालूम होने से अलंकार केलिये ज़्यादा दीप रखने की आदत में इनसान गिरपडे। दीप से रोशिनि आती हैं, दीप जलने के लिये कारण अग्नी हैं, अग्नी दीप जलनेकेलिये कारण होकर भी किसी को मालूम हुये बगैर हैं यानि किसी को नहीं दिखती। ऐसा ही ईश्वर जो शक्ति का कारण है, गुरु जो ज्ञान का कारण है किसीको मालूम नही होते हैं, लेकिन कोई भी आज इसतरह नहीं समझरहा हैं कि इधर ईश्वर के बारे में, उधर गुरु के बारे में बताने के लिये ही इसतरह की दीपावली त्योहार हम मना रहे हैं। यह बात कभी भी नहीं भूलना चाहिये कि जिसतरह दीप से रोशिनि आकर अंधेरे को हटा देती हैं, उसीतरह ज्ञान से आनंद हासिल होकर दुख दूर होजाता है यह बात मालूम हुये जैसा एक अच्छे उद्देश्य से पूर्व में दीपावली त्योहार का इंतेज़ाम किया। तो आज जिसतरह नाग चतुर्थी, विनायक चतुर्थी बदलगये थे उसीतरह दीपावली अमावास्या भी आखिर पुराण कथा की तरह बदल जाकर नरकासुर को संहार किये हुये दिन की तरह कहीजारही हैं। पूर्व में प्रशांत से ज्ञानभाव से कियेजानेवाली दीपावली नरक चतुर्थशी में बदलकर, धमाका शब्द (टपाकायों का शब्द) से न सुकून है न ज्ञान का भाव। चलिये, कम से कम अब से तो बिना टपाकायों के शब्द से सुकून से, अर्थ के साथ जुडी हुयी आचार की तरह दीपावली त्योहार को मनाते हैं।

समाप्त

हिंदू रक्षणा! या हिंदू भक्षणा!!

जिसने भगवद्गीता ही नहीं पढा क्या वह हिंदू रक्षक है? जिन्हे हिंदू धर्म ही नहीं मालूम क्या वे हिंदू रक्षक है?

यह सत्य को तो सब जानते ही हैं कि हिंदू लोग आज जातियों में चीरे जाकर, उसमें भी ऐसा वर्णन किये कि कुछ जातियाँ बडे हैं तो कुछ जातियाँ छोटे हैं। ईश्वर ने सब मनुष्यों को बराबर पैदा किया तो कुछ मनुष्य अपने स्वार्थ बुद्धि से हिंदू (इंदू) समाज को टुकडे टुकडे करके चीरके बलहीन करके ऐसा प्रचार किये कि पूरे हिंदू समाज केलिये हम ही बडे हैं, जैसे हम कहते हैं वैसा ही सब लोग सुन कर कार्य करलेनी चाहिये। वह हिंदू समाज जो कई वर्णों की सूरत में हैं उसमें अपना कुल ही अग्रकुल है कह कर बोललेना ही नहीं बल्कि, यह ऐलान करलिये कि हम ही दूसरे कुल के सबलोगों के लिये मार्गदर्शक है, गुरु है। भविश्य में उनको कोई आढ न आये जैसा, सब कुलवालों को नीच कुल बनाकर, हिंदूसमाज के साथ बडा अन्याय किया है। उतने से रुके बगैर आज तक भी अपने आप को हिंदू समाज के रक्षकों की तरह बोललेते हुये, हिंदू समाज को सर्वनाश करते हुये, हिंदू समाज दूसरे मतों की तरह बदलने केलिये पहला कारक होरहे है। ऐसे लोग हिंदू समाज केलिये नुकसान पहुंचानेवाले कीडे होने पर भी, बाकी कुल के लोग उनकी असली स्वरुप को न मालूम होने से जैसे वे कह रहे हैं वैसे सुनने की वजह से,हिंदू समाज को पूरे तरीके से अज्ञान दिशा के तरफ, अधर्म मार्ग के तरफ मोडकर, लोगों को किसी भी हाल में दैवज्ञान को मालूम न होने दिया फिर उन्हे ऐसा यकीन दिलाया कि जो कुछ वे कह रहे हैं वही असली दैवज्ञान हैं।

ऐसी हालत में आज त्रैत सिद्धांतकर्ता श्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर जी ने अज्ञान दिशा के तरफ ठहरी हुयी हिंदू समाज को सही रास्ते में रखने केलिये, **भगवद्गीता में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में बोधा की गयी क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम कहलानेवाले तीन पुरुषों के विषय को त्रैतसिद्धांत नाम से प्रतिपाद (निरुपण) करके दैवज्ञान सबको समझमें आये जैसा ग्रंथरुपमें लिखना, बोधा करना हो रहा हैं।** इन ग्रंथों के ज्ञान से आज लोग खुश हो रहे हैं कि हमें अब असल ज्ञान मालूम हो रहा है। जो लोग अग्रकुल में हैं वे लोग भी अपने अज्ञान के अंधेरों को छोडकर, इस बात से खुश हो रहे हैं कि अबतक जो ज्ञान हमें मालूम नही हुआ वह ज्ञान आज हमलोगों को योगीश्वर जी के द्वारा मालूम हो रहा है और वे खुशी से उनके शिष्यों में दाखिल हो रहे हैं। तो अग्रकुल में सिर्फ कुछ लोग योगीश्वर जी जो ज्ञानविषयों को बता रहे हैं उनको देखकर यह ज्ञान से तो लोग ज्ञान चैतन्य होकर, ज्ञान नही जाननेवाले हमलोगों की इज्ज़त तक नहीं करेंगे, इससे समाज पर हम जो हुकूमत कर रहे हैं वह पूरा चली जायेगी समझकर उन्होने ऐसा प्रचार करना शुरु किया कि योगीश्वर जी जो ज्ञान बता रहे हैं वह त्रैतसिद्धांत हो, त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता हो हिंदुओं का ज्ञान ही नही है, वह ईसायियों के मज़हब से संबंध रखने वाला ज्ञान है, कोई भी उस ज्ञान को पढना नहीं चाहिये। इतना ही नहीं हम हिंदू धर्म रक्षक है कहते हुये थोडा राजकीय का रंग लगालेकर, वहाँ वहाँ हमारे ज्ञान प्रचार को आढे आना भी हो रहा है। अपनी बात को सुनने वाले दूसरे कुल के लोगों से भी यह कह रहे हैं कि जो ज्ञान प्रबोधानंद योगीश्वर बता रहे हैं वह हिंदू ज्ञान ही नहीं है, ईसायियों का ज्ञान है, हिंदुओं का परदा लगाले कर ईसायियत का मत प्रचार कर रहे हैं इतना ही नहीं बल्कि उनको उक्साकर हमारे प्रचार को आडे आये जैसा कर रहे हैं।

योगीश्वर जी ने स्थापना की हुयी हिंदू (इंदू) ज्ञानवेदिका इसतरह के रुकावटों को थोडे वक्त तक सबर के साथ देखना हुआ। हम में सबर खतम होजाकर हमें अन्यमतप्रचारक जैसा वर्णन करनेवाले अग्रकुल के लोगों को, उनके अनुचरों का सामना करके सवाल करना हुआ। हमने पूछे हुये एक सवाल का भी उन्होने सही जवाब नहीं दिया। वे जवाब कैसे थे पाठकों की तरह आप देखिये।

हमारा सवाल :- हम गाँव गाँव फिर कर, गाँव में घर घर फिर कर हिंदू धर्म ऐसा प्रचार कर रहे हैं कि अबतक कोई भी हिंदू ने नहीं किया! इसतरह प्रचार करनेवाले हमें देखकर आप क्यों अन्यमत प्रचारक कह रहे हैं?

उनका जवाब :- हिंदू मत में कई स्वामीजियाँ हैं। उनमें से कोई भी घर घर जाकर प्रचार नहीं किये। हिंदू इसतरह प्रचार नहीं करते। ईसायियाँ ही बाज़ार बाज़ार, घर घर फिर कर प्रचार करते हैं। आप हिंदू का परदा पहनकर घर घर घूम कर ईसायियत का प्रचार कर रहे हैं।

हमारा सवाल :- अगर हम ईसायि है तो भगवद्गीता क्यों प्रचार करेंगे?

उनका जवाब :- आप जिसका प्रचार कर रहे हैं वह त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता हैं,वह ईसायियों का है । आपने बैबिल को ही ऐसा नाम रखा है।

हमारा सवाल :- ईसायियाँ तो अपने आप को ईसायी ही बोललेते हैं। ऐसा ही बैबिल को बैबिल की तरह ही बोललेते हैं। जब उनका प्रचार ईसायियत, बैबिल है तो वे लोग उसी नाम से प्रचार करेंगे मगर हिंदुओं की तरह भगवद्गीता के नाम से क्यों प्रचार करेंगे? अबतक इसतरह कहीं भी नहीं हुआ। जिस मत के लोग उनके अपने मत का

नाम ही बोललेते हैं मगर दूसरे मत का नाम नहीं कहते। उतने दूर तक क्यों क्या तुमलोगों ने हमारी भगवद्गीता को खोलकर देखा हैं क्या? उसमें भगवद्गीता के श्लोक है या बैबिल के वाक्य है?

उनका जवाब :- त्रैतसिद्धांत कह कर है ना! हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि त्रैत का मतलब त्रित्व है या त्रिनिटि है।

हमारा सवाल :- हिंदू धर्मों में अद्वैत सिद्धांत को आदिशंकराचार्य ने प्रतिपादन किया। विशिष्टाद्वैत को रामानुजाचार्य ने प्रतिपादन किया,द्वैत को मध्वाचार्य ने ऐलान किया। अब आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर जी ने त्रैतसिद्धांत का प्रतिपादन किया। सिद्धांतकर्तायें, सिद्धांत अलग होने पर भी सब हिंदू ही है कह कर तुम लोगों ने क्यों नहीं समझा?

उनका जवाब :- आपने आपके त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता में लिखा कि यज्ञों को नही करना चाहिये हेना! असल में तो भगवद्गीता में वैसा नही हैं ना!

हमारा सवाल :- तुमलोग हिंदुओ में मुख्य होकर इतनी मूर्खत्व से कैसे बात करसकते हो? पूरे प्रपंच केलिये एक ही भगवद्गीता होती है मगर, इसतरह तुम्हारा भगवद्गीता, हमारा भगवद्गीता कह कर अलग नहीं रहता। भगवद्गीता का विवरण एक एक जन एक एक तरह जिसको जैसे समझमें आया वैसे बोले होंगे मगर,यह बात याद रखें कि सबकेलिये भगवद्गीता मूलग्रंथ एक ही है। जिन ज्ञानियों ने पढा वे सब उसकी तारीफ ऐसे कर रहे हैं कि त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता सबसे बढकर सही भाव के साथ है तो, तुम्हारे समाज में कई लोग उसकी प्रशंसा भी कर रहे हैं तो, सिर्फ तुम थोडे लोगों को ही वह भगवद्गीता व्यतिरेक से दिख रहा है कहने के पीछे आपकी हसद और स्वार्थ साफ नज़र आ रहा है। हमने यह कहीं पे भी नहीं कहा कि यज्ञ मत कीजिये। हमने साफ कहा कि यज्ञों से पुण्य हासिल होता

है, स्वर्ग मिलता है। हमने कहा कि यज्ञों से मोक्ष नहीं मिलता, ईश्वर मालूम नहीं होगा (यानि ईश्वर को नहीं पायेंगे)। तुमलोग अपने आप को सब जातियों से स्वच्छ हिंदू बोलले रहे हैं ना! चलिये कम से कम एक हिंदू धर्म को तो बतायिये जो भगवद्गीता में कहा था।

उनका जवाब :- यह सब बातें हमें नही चाहिये....आप हिंदू नहीं है बस इतना ही....

हमारा सवाल :- इसतरह जिद्दी से बात मतकीजिये आप अग्रकुल वाले हैं कह कर जैसे आपकी मरज़ी है वैसे बात मत कीजिये। हम हिंदू नहीं है कहनेकेलिये क्या आप इसका कोई आधार या सबूत दिखापायेंगे? हमारी कहानि सैड में रखके अगर आप सच्चे हिंदू है तो भगवद्गीता में विश्वरुप संदर्शयोग अध्याय में ४८ श्लोक में,५३ श्लोक में भगवान ने क्या कहा आप ही बतायिये?

उनका जवाब :- हमने अबतक भगवद्गीता को नहीं पढा। अगर आप को चाहिये तो संपूर्णआनंदस्वामि से कहलवायेंगे।

हमारा सवालः- कम से कम भगवद्गीता को भी आपलोगों ने नहीं पढा तो फिर तुम जैसे लोग योगीश्वर प्रबोधानंद स्वामि का दूषण करना अच्छी बात है क्या?कम से कम एक हिंदू धर्म को भी न जाननेवाले तुमलोग हिंदू धर्म रक्षक है कहना अच्छी बात है क्या? योगीश्वर जी ने जो ग्रंथ लिखे उनमें से एक ग्रंथ को भी पढे बगैर हमारे सिवा पूज्य,गुरुओं की तरह कोई और नहीं रहना चाहिये, इसतरह का हसद अपने अंदर रखलेके ऐसा बात करेंगे तो ईश्वर बरदाश नहीं करेगा।

उनका जवाब :- हिंदू मत में कई देवतायें है। शिव भी ईश्वर ही है,शिव का बेटा गणपति भी ईश्वर ही है, राम भी ईश्वर ही है,राम का सेवक

आंजनेय भी ईश्वर ही है। वैसे हिंदू मत में आप कहरहे हैं कि ईश्वर एक ही हैं तो फिर इसतरह कहना गलत नही है क्या?

हमारा सवाल :- हमने मत के बारे में नहीं कहा। हिंदू मत में कई ईश्वर रहना सही है, तो हमने यह कहा कि हिंदू ज्ञान में, हिंदू धर्म के प्रकार पूरे विश्व केलिये ईश्वर एक ही है। भगवद्गीता में ईश्वर ने जो कहा वही हमने कहा है उसके सिवा हमने यह कब कहा कि देवतायें नहीं है! हमने कहा कि सब देवताओं का भी मालिक एक है उसीको ईश्वर या परमात्मा या सृष्टिकर्ता कहते हैं, वही देवों का भी देव हैं, सब उसीकी आराधना करनी चाहिये।

उनका जवाब :- आप राम का नाम नहीं कहते,शिव का नाम नहीं कहते,विनायक का नाम भी नहीं कहते। किसीका नाम न कहते हुये ईश्वर,सृष्टिकर्ता है कह कर बहुत बार बतायें। ईश्वर शब्द को,सृष्टिकर्ता शब्द को ईसायियाँ ही इस्तेमाल करते हैं। हिंदू इस्तेमाल नहीं करते। इसीलिये आप को हिंदू नहीं ईसायि कह रहे हैं।

हमारा सवाल :- ईसायियत पैदा होकर दो हजार साल हुआ है। यह कोई भी नहीं बतासकते कि सृष्टी पैदा होकर कितने करोड साल हुये। सृष्टादि से सृष्टिकर्ता शब्द को, ईश्वर शब्द को हिंदू समाज इस्तेमाल करही रही हैं। तो हम यह पूछ रहे हैं ईश्वर, सृष्टिकर्ता कहलानेवाले शब्द पहले से हिंदू समाज में मौजूद थे तो उन शब्दों को क्या हिंदुओ ने ईसायियों को लीज़ पर दिया है? या पूरा बेच दिये? यह पूछ रहे हैं कि ऐसा कहाँ पर लिखा गया कि हिंदू लोग ईश्वर, सृष्टिकर्ता शब्दों को बोलना नहीं चाहिये?

उनका जवाब :- आपने कभी भी अपने आप को हिंदूओं की तरह नहीं बोललिये, हिंदू के बदले में हमेशा इंदू कहा था यह काफि है इस बात केलिये कि आप हिंदूमत की नहीं बल्कि अन्यमत की बोधा कररहे हैं।

ऐसी सूरत में क्या आप ने हिंदू मत को चीरे जैसा नहीं हैं क्या! प्रत्येक से इंदू मत कहनेवाली की प्रचार किये जैसा नहीं हुआ क्या! जब आप हिंदू ही है तो आप अपने ग्रंथों में हो, अपने बोधाओ में हो प्रत्येक से इंदू कह कर क्यों बोल रहे है?

हमारा सवाल :- हम सीधे एक सवाल पूछते हैं जवाब दीजिये। हिंदू,इंदू लफ़ज़ में थोडा शब्द के सिवा क्या फरख है आप ही बतायिये। तेलुगु भाषा लिखनेवाले सब कहते हैं कि हिरण्यकश्यप को **नरशिंह** स्वामि ने मारा और वैसा ही लिखते भी हैं। प्रस्तुतकाल में जिस व्यक्ति का नाम नर**शिं**ह होता है वह भी अपने नाम को नर**शिं**ह ही कहकर लिखता है यह बात तो सब जानते हैं। तो हम कह रहे हैं कि वह बात गलत है उस नाम को वैसा लिखना नहीं चाहिये उसे **नरसिंह** कह कर लिखना चाहिये। और हम यह भी कह रहे हैं कि जंगल में मृगराजा को **सिं**ह कहते हैं लेकिन **शिं**ह नहीं कहते हैं। और हमने यह भी कहा कि **सिंह** शब्द का अर्थ है मगर **शिंह** शब्द का कोई मतलब नहीं हैं। उसीतरह अगर जो सच है वह कहे तो **इंदू** शब्द का अर्थ है मगर **हिंदू** शब्द का कोई मतलब ही नहीं हैं। सृष्टादि में जो पैदा हुआ वह इंदू समाज है (यानि पूरा विश्व जब पैदा हुआ उसवक्त ही इंदू समाज पैदा हुआ), लेकिन बीचमें वह जिसतरह **दृष्टि** शब्द **जिष्टि** शब्द में बदलगया वैसा ही इंदू शब्द हिंदू में बदलकर आज **इंदू** को **हिंदू** कह कर पुकार रहे हैं। इंदू लफ़ज़ ही क्यों इस्तेमाल करनी चाहिये हिंदू क्यों इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये यह बात भी हमने अपने ग्रंथो में साफ तौर पर विवरण दिया है। जो सत्य है वह आप अच्छी तरह से जानते हैं उसके बावजूद भी तुम लोग इस हसद (असूय गुण) से बात कर रहे हैं कि हमारे सिवा समाज में और कोई बडे नहीं रहना चाहिये।

अग्रकुल में कई बडे लोग हमारे त्रैत सिद्धांत ज्ञान को मालूम करके खुशी व्यक्त कर रहे हैं तो, कुछ लोग गल्लियों में घूमनेवाले गुंडों की तरह इसतरह कहना अच्छी बात नहीं है कि हम मारेंगे, भोकेंगे, जलादेंगे आप प्रचार नहीं करना चाहिये। हमारे ग्रंथ पढे बगैर ही बात करना, हमने जो बातें कहीं है उनको सुने बगैर ही यह सब ड्रामा,नाटक है कहना अच्छी बात नहीं है। हम यह पूछ रहे हैं कि आप में से कोई भी हो यह साबित करके दिखायिये कि हमारे ग्रंथो में कहीं पे भी हो दूसरे मतों का प्रचार किये जैसा,या फलाना मत में दाखिल होजायिये जैसा कहा हो। जिसने यह साबित किया उसे **इंदू ज्ञानवेदिका के तरफ से दस लाख रुपये दे सकते हैं। अगर साबित नहीं करपाये तो तुम लोग किसी भी गाँव में हो श्रीकृष्ण के मंदिर के लिये लाख रुपे देना चाहिये।** क्या कोई भी इस शर्त के लिये आगे बडेंगे?

इंदू ज्ञान वेदिका और प्रबोध सेवा समिति

झूट को हज़ार लोग कहने पर भी वह सच नहीं होता

सच को हज़ार लोग इनकार करने पर भी वह झूट नहीं होता
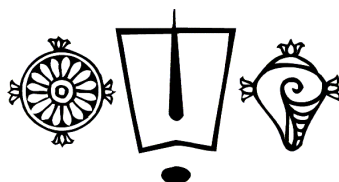
हमारे त्योहार

(पता है क्या कैसे करनी चाहिए)

Author :
The Only Guru of Three Religions
The Spiritual Emperor, Thraitha Theorem Originator
Sri Acharya Prabodhananda Yogeeshwarulu

www.thraithashakam.org